स्कन्दपुराणान्तर्गत

सेतुमाहात्म्यखण्ड भाषा

जिसमें

सेतुबन्ध का माहात्म्य, वहाँ के सब तीर्थों का वैभव, महालय श्राद्ध का विस्तारपूर्वक माहात्म्य, नरकों का वर्णन और श्रीरामेश्वर जी का माहात्म्य विस्तार से वर्णित है।

जिसको

श्रीयुत मुंशी नवलकिशोर साहब सी. आई. ई., की आज्ञानुसार काश्मीरेन्द्र श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीगुलाबसिंहजूदेव के मुख्य दैवज्ञ श्रीपण्डित ब्रजलालजी के पुत्र जयपुरमहाराजाश्रित श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जी ने संस्कृत से आर्यभाषा में अनुवाद किया।

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

७वीं बार

सन् १९२१ ई०

को बतावो जिससे यह हत्या दूर होय यह श्रीकृष्णभगवान् का वचन सुन नारदजी कहनेलगे कि आप नित्य शुद्ध बुद्ध सच्चिदानन्दस्वरूप साक्षात् परमात्मा हैं आपको पुण्य और पाप नहीं लगसक्ता तोभी लोकमर्यादा के लिये आपको प्रायश्चित्त करना चाहिये दक्षिणसमुद्र में रामसेतु के बीच गन्धमादनपर्वत में रामचन्द्रजी ने रामनाथ नाम शिवलिङ्ग स्थापन किया और उसके अभिषेक के लिये अपने धनुष् की कोटि करके तीर्थ रचा उस कोटितीर्थ में स्नान कर रावण के वध का पातक रामचन्द्रजी ने निवृत्त किया उस तीर्थ में आप भी स्नान करें तो यह मातुलहत्या निवृत्त होगी कोटितीर्थ में स्नान करने से ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होते हैं और आयुर्दाय, आरोग्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है यह नारद का वचन सुन उन मुनियों को सत्कारपूर्वक विसर्जन कर श्रीकृष्णचन्द्र कोटितीर्थ को चले वहां पहुँच संकल्प कर तीर्थ में स्नान किया और अनेक दान दिये तब मातुलहत्या निवृत्त हुई श्रीकृष्णचन्द्र भी निष्पाप हो रामनाथ का दर्शनकर मथुरा को आये हे मुनीश्वरो! कोटितीर्थ का ऐसा प्रभाव है कोटितीर्थ के समान तीर्थ भूमण्डल में दूसरा नहीं है इस तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मा विष्णु शिवआदि सब देवता प्रसन्न होते हैं हे मुनीश्वरो! इस अध्याय को जो पढ़े अथवा श्रवण करे वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छूट मुक्ति पाता है॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां कोटितीर्थमाहात्म्यकंसवधदोषशान्तिनिरूपणंनामसप्तविंशोऽध्यायः॥ २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

साध्यामृततीर्थ का माहात्म्य और उर्वशी पुरूरवा की विचित्रकथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! कोटितीर्थ में स्नानकर साध्यामृत नाम तीर्थ को जाय सब पाप दुःख और दारिद्र्य का हरनेहारा और सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा वह तीर्थ गन्धमादन में है तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, यज्ञ, दान आदि से वह गति नहीं प्राप्त होती जो साध्यामृततीर्थ में स्नान करने से मिलती है उस तीर्थ का जल स्पर्श होतेही सब पाप नष्ट होजाते हैं जो पुरुष साध्यामृत के जल में अघमर्षण करे वह निष्पाप होकर विष्णु-

लोक को जाता है पापी मनुष्य भी साध्यामृततीर्थ में स्नानकर नरक को नहीं जाते साध्यामृततीर्थ में जब तक अस्थि पड़ी रहे तब तक वह जीव शिवलोक में निवास करे जिसप्रकार सूर्य अन्धकार को दूर करते हैं इसी भांति साध्यामृततीर्थ पापहरण में समर्थ है जिस तीर्थ में स्नानकर राजा पुरूरवा तुम्बुरु के शाप से छूटा और फिर भी उसका उर्वशी से समागम हुआ यह सुन ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी ! मनुष्य होकर राजा पुरूरवा ने उर्वशी क्योंकर पाई और तुम्बुरु ने किस हेतु राजा को शाप दिया यह आप विस्तार से वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्वकाल में बड़ा प्रतापी और धर्मात्मा पुरूरवा नाम राजा हुआ वह राजा बड़े २ यज्ञ करता और दान देता था उसके राज्य करते २ उर्वशी नाम अप्सरा मित्रावरुण के शाप से मर्त्यलोक में आई और राजा पुरूरवा के नगर के समीप विचरनेलगी और एक उपवन में बैठ वीणा बजाती हुई मीठेस्वर से गानेलगी इस अवसर में राजा भी घोड़े पर चढ़ उसी उपवन में विहार करने गया उसने उर्वशी को देखा देखतेही राजा कामवश हुआ और उर्वशी से कहा कि हे सुन्दरि ! मेरी भार्या होजा उर्वशी भी राजा का रूप देख मोहित होरही थी वह बोली कि जो आप मेरा एक नियम अङ्गीकार करें तो मैं आपके समीप रहूं वह नियम यह है कि आपको कभी नग्न न देखूंगी कभी मुझे उच्छिष्ट मत देना और केवल घृतही में भोजन करूंगी और ये दो मेष अर्थात् मेढ़े मेरे पुत्र के तुल्य हैं इनकी रक्षा करना राजा ने ये सब नियम स्वीकार किये और उर्वशी को साथ लेकर राजधानी में आया और उर्वशी के साथ आनन्द भोगने लगा उर्वशी का भी राजा में इतना अनुराग बढ़ा कि स्वर्ग को भूलगई और इकसठि वर्ष पुरूरवा के समीप बीत गये उर्वशी के विना स्वर्ग भी शून्य दीखता था इसलिये विश्वावसुगन्धर्व ने विचार किया कि मैं उर्वशी को ले आऊं यह विचार कई गन्धर्व साथ ले विश्वावसु मर्त्यलोक में आया और दोनों मेषों में एक मेष चुराकर आकाश को उड़ा तब उर्वशी पुकारी कि मेरे पुत्र को कौन हरे लिये जाता है अब मैं क्या करूं राजा पुरूरवा

उर्वशी का पुकारना सुनकर भी न उठा कि मुझे नग्न को न देखे इतने में दूसरे मेष को भी एक गन्धर्व ले उड़ा उसका शब्द सुन उर्वशी बहुत व्याकुल हुई और कहने लगी कि मैं अनाथ हूं मेरे पुत्र को कोई लिये जाता है अब मैं क्या करूं और किसकी शरण में जाऊं यह उर्वशी का दीन वचन सुन राजा ने सोचा कि चारो ओर अन्धकार है मुझे नग्न को तो नहीं देखसक्ती इसलिये मेषों की रक्षा करनी चाहिये यह विचार खड्ग लेकर खड़ाहुआ और ललकारा कि रे दुष्ट! खड़ा रह भागने न पावेगा इसी अवसर में गन्धर्वों ने बिजली चमकाकर प्रकाश करदिया तब उर्वशी ने राजा को नग्न देख देखतेही अपने नियम के अनुसार उर्वशी स्वर्ग को चलीगई गन्धर्व भी दोनों मेष छोड़कर उर्वशी के साथ गये राजा मेषों को लेकर प्रसन्न होताहुआ अपनी शय्या के समीप आया परन्तु उर्वशी को न पाया तब राजा विरह से व्याकुल हो उन्मत्त की भांति पृथ्वी पर भ्रमण करनेलगा कुछ काल में कुरुक्षेत्र पर पहुँचा वहां देखा कि एक कमलों करके शोभित सरोवर में चार अप्सराओं समेत उर्वशी जलक्रीड़ा कररही है राजा देखतेही प्रसन्न होगया और कहनेलगा कि हे प्राणप्रिये! मुझे छोड़ कहां चली आई तब उर्वशी बोली कि हे महाराज! आपसे मुझ में गर्भ रहा है इसलिये आप एक वर्ष के अनन्तर इसी स्थान में आना तब मैं आपके साथ एक रात्रि रहूंगी और आपका पुत्र आपके अर्पण करूंगी यह सुन प्रसन्न हो राजा अपनी राजधानी को आया उर्वशी ने अपनी सखियों से कहा कि हे सखियो! यह वही उत्तम पुरुष है जिसके समीप मैंने सुखपूर्वक कालक्षेप किया और अब भी जिसके विरह से व्याकुल रहती हूं यह उर्वशी का वचन सुन सखियों ने भी कहा कि जो ऐसे पुरुष का समागम हमको होजाय तो कभी स्वर्ग को न जायँ उसीके समीप रहें एक वर्ष बीतने पर राजा भी वहां आया और गन्धर्वों सहित उर्वशी भी वहां आई उर्वशी ने एक बालक राजा को दिया और एक रात्रि राजा के साथ रही और फिर गर्भवती हुई जिससे पांच पुत्र उत्पन्न होयँ ऐसा गर्भ धारण किया और राजा से यह भी कहा कि इन गन्धर्वों से वर मांगो ये आपको

पाप हरनेहारे सर्वतीर्थ में जाय सर्वतीर्थ में स्नान करतेही पातक महापातक सब दूर होजाते हैं पापी पुरुष के देह में पाप तबतक ही रहते हैं जबतक सर्वतीर्थ में स्नान न करे उस तीर्थ को जाने के समय सब पाप कांप उठते हैं कि अब हमारा नाश होगा गर्भवासादि दुःख भी तबतकही हैं जबतक सर्वतीर्थ में स्नान न करे यज्ञ दान नियम से गायत्री मन्त्र का जप चारो वेद की सौ आवृत्ति शिव विष्णु आदि देवताओं की पूजा और एकादशी को निराहारव्रत करने से जो फल प्राप्त होय वह सर्वतीर्थ में स्नान करने से मिलता है यह सुन मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी ! उस तीर्थ का नाम सर्वतीर्थ क्यों हुआ यह आप विस्तार से वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्वकाल में भृगुवंश में उत्पन्न सुचरित नाम मुनि हुआ है वह जन्म से ही अन्धा था जन्म भर तप किया वृद्धावस्था में मुनि की इच्छा हुई कि सर्वतीर्थों में स्नान करना चाहिये परन्तु तीर्थों में जाने की सामर्थ्य नहीं इसलिये शिवजी का आराधन करना चाहिये यह मन में निश्चयकर गन्धमादनपर्वत में शिवजी की अनुग्रह के अर्थ सुचरित नाम मुनि तप करनेलगा तीन काल स्नान करके शिवपूजन करता अतिथियों का सत्कार करता जाबाल्युपनिषद् की रीति से भस्मोद्धूलन और रुद्राक्ष धारण करता ग्रीष्म में पञ्चाग्नि तापता वर्षा में शरीर पर वृष्टि सहता शीतकाल में जलशय्या करता इसप्रकार उग्र तप करते २ दश वर्ष बीते तब शिवजी प्रसन्न हो प्रकट हुये मुनिने देखा कि वृषभपर चढ़े वाम अङ्ग में पार्वतीजी को धारण किये त्रिशूल हाथ में लिये कोटिसूर्य के समान जटाओं करके शोभित सर्वांग में भस्म धारण किये भूतगणों करके सेवित शेषनाग आदि नागों के भूषण पहिने ये साक्षात् शिवजी हैं शिवजी के प्रकट होतेही मुनि को दिव्यदृष्टि प्राप्त होगई तब शिवजी का दर्शन पाय सुचरितमुनि भक्ति से नम्र हो स्तुति करनेलगा ॥

सुचरितउवाच ॥ जय देव महेशान जय शंकर धूर्जटे ॥ जय ब्रह्मादिपूज्य त्वं त्रिपुरघ्न यमान्तक ॥ १ ॥ जयोमेश म-

हादेव कामान्तक जयामल ॥ जय संसारपूज्य त्वं भूतपाल शिवाऽव्यय ॥ २ ॥ त्रियम्बक नमस्तुभ्यं भक्तरक्षणदीक्षित ॥ व्योमकेश नमस्तुभ्यं जय कारुण्यविग्रह ॥ ३ ॥ नीलकण्ठ नमस्तुभ्यं जय संसारमोचक ॥ महेश्वर नमस्तुभ्यं परमानन्दविग्रह ॥ ४ ॥ गङ्गाधर नमस्तुभ्यं विश्वेश्वर मृडाऽव्यय ॥ नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय शम्भवे ॥ ५ ॥ शर्वायोग्राय भर्गाय कैलासपतये नमः ॥ रक्ष मां करुणासिन्धो कृपादृष्ट्यवलोकनात् ॥ मम वृत्तमनालोच्य त्राहि मां कृपया हर ॥ ६ ॥

यह स्तुति सुन दया के समुद्र श्रीमहादेवजी ने सुचरितमुनि से कहा कि हे मुने ! जो वर चाहता है वह मांग हम तुमपर प्रसन्न हैं तब सुचरित मुनि ने प्रार्थना की कि हे नाथ ! मेरी इच्छा सब तीर्थों में स्नान करने की है परन्तु मैं वृद्ध हूं इसलिये तीर्थों में जा नहीं सक्ता अब आप ऐसी अनुग्रह करें कि सब तीर्थों में स्नान करने का फल मुझे प्राप्त होजाय यह मुनि की प्रार्थना सुन भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी ने सब तीर्थों का आवाहन एक स्थान में किया और मुनि से कहा कि हे मुने ! हमने सब तीर्थों का आवाहन किया इसलिये यह तीर्थ गन्धमादनपर्वत में सर्वतीर्थ नाम से प्रसिद्ध होगा और हमने मन से तीर्थों का यहां आकर्षण किया इसलिये मानस तीर्थ भी इसका नाम होगा हे सुचरित ! महापातकों के दग्ध करनेहारे काम, क्रोध, लोभ, रोग आदि दोषों के नाशक विना ब्रह्मज्ञान केही मोक्ष देनेहारे कुम्भीपाक आदि नरकों का भय निवृत्तकर संसारसमुद्र के पार उतारनेहारे हमारे बनाये इस सर्वतीर्थ में तू स्नान कर यह शिवजी की आज्ञा पाय सुचरितमुनि ने सर्वतीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही अति सुन्दर तरुण और दिव्यदेह होगया और उस तीर्थ की प्रशंसा करनेलगा महादेवजी ने कहा कि हे सुचरित ! इस तीर्थ में नित्य स्नानकर और हमारा नाम स्मरणकर देशान्तर के तीर्थों में जाने की इच्छा दूर कर इस तीर्थ के माहात्म्य से अन्त में हमारे लोक में निवास करेगा और भी जे पुरुष इस

धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करें तो इन नरकों को कभी न देखें सद्गतिही पावें धनुष्कोटि में स्नान करने से अश्वमेधयज्ञ का फल प्राप्त होता और आत्मज्ञान होता है और चार प्रकार की मुक्ति मिलती है धनुष्कोटि में स्नान करने से बुद्धि निर्मल होजाती है कभी दुःख नहीं होता और पाप में चित्त नहीं प्रवृत्त होता पुरुष को तुलादान और हज़ार गोदान करने से जो फल प्राप्त होता है वह धनुष्कोटि में एक बार स्नान करने से होता है अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष आदि जो पदार्थ चाहे वही धनुष्कोटि में स्नान करतेही प्राप्त होता है अनेक पातक महापातकों करके युक्त पुरुष भी धनुष्कोटि में स्नान से शुद्ध होजाता है धनुष्कोटि स्नान से प्रज्ञा, लक्ष्मी, यश, संपत्ति, वैराग्य, धर्म, ज्ञान, मनःशुद्धि आदि सब पदार्थ प्राप्त होते हैं करोड़ों ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुदारागमन, सुवर्णस्तेय आदि पातक धनुष्कोटि में स्नान करने से निवृत्त होते हैं और भी जो पातक ब्रह्महत्या आदि महापातकों के तुल्य हैं वे सब नष्ट होते हैं इन बातों में कभी सन्देह नहीं करना इस माहात्म्य को जो अर्थवाद समझै वह नरक को जाता है मनुष्यों का बड़ा मूर्खपन है कि अद्वैतज्ञान देनेहारे सब पातक और दुःख हरनेहारे धनुष्कोटितीर्थ को छोड़ और तीर्थों में भटकते फिरते हैं धनुष्कोटि में स्नान किये पीछे यम का भय नहीं रहता जो पुरुष धनुष्कोटि को नमस्कार करें दर्शन करें स्तुति और प्रणाम करें वे माता के स्तन नहीं पीते अर्थात् जन्म मरण से रहित होजाते हैं इतनी कथा सुन मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी ! उस तीर्थ का नाम धनुष्कोटि क्योंकर हुआ यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! रावण को मार विभीषण को लङ्का का राज्य देकर सीता लक्ष्मण सहित रामचन्द्र जी सुग्रीव आदि वानरों समेत गन्धमादनपर्वत में पहुँचे और विभीषण भी साथ आया वहां पहुँच विभीषण ने प्रार्थना की कि हे महाराज ! इस आपके बांधेहुये सेतु के मार्ग से और भी प्रतापी राजा आकर मेरी पुरी लङ्का को पीड़ा देंगे इसलिये आप अपने धनुष् की कोटि अर्थात् अग्रकर के इस सेतु को भेदन करदीजिये यह विभीषण की प्रार्थना सुन अपने

धनुष् के अग्रभाग से सेतु को तोड़दिया वहांहीं धनुष्कोटितीर्थ बना धनुष् करके रेखा की हुई जो पुरुष देखे वह गर्भवास का दुःख नहीं भोगता धनुष्कोटि करके रामचन्द्रजी ने समुद्र में रेखा की उसके दर्शन सेही मुक्ति होजाती है स्नान का फल तो कौन वर्णन करसके नर्मदा के तटपर तप करे तो महापातक निवृत्त होयँ गङ्गातीर में मरण से मोक्ष होता है और कुरुक्षेत्र में दान देने से ब्रह्महत्या आदि पाप नष्ट होते हैं परन्तु धनुष्कोटि में तप मरण और दान तीनोंही मुक्ति के देनेहारे हैं पातक महापातक आदि का भय तबतक है जबतक धनुष्कोटि का दर्शन न करे धनुष्कोटि का दर्शन करतेही हृदय की ग्रन्थि भिन्न होजाती है और सब संशय निवृत्त होजाते हैं और पाप भी नष्ट होते हैं रामचन्द्रजी ने विभीषण के कल्याण के लिये जो दक्षिणसमुद्र में धनुष्कोटि करके रेखा की वही स्वर्ग, कैलास, वैकुण्ठ, ब्रह्मलोक आदि का मार्ग है धनुष्कोटि स्नान मन्त्रों के जप अनेक दान और यज्ञों से भी अधिक है धनुष्कोटि में स्नान करनेहारे पुरुष को प्रयाग में स्नान और काशी मरण से कुछ प्रयोजन नहीं धनुष्कोटि में स्नान कर तीन दिन उपवास न करे और ब्राह्मण को सुवर्ण गौ आदि दान न देवे वह पुरुष जन्मान्तर में दरिद्री होता है धनुष्कोटि में स्नान करने से जो फल होता है वह अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने से भी नहीं प्राप्त होता है सब तीर्थों से धनुष्कोटितीर्थ अधिक है भूमण्डल में दश हज़ार कोटितीर्थ हैं वे सब धनुष्कोटि में निवास करते हैं आठवसु, आदित्य, रुद्र, मरुत्, साध्य, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर आदि सब देवता और विष्णु, लक्ष्मी शिव, पार्वती, ब्रह्मा और सरस्वती भी धनुष्कोटितीर्थ में निवास करते हैं धनुष्कोटि के तटपर तपकर अनेक देवता और ऋषि उत्तम सिद्धि को प्राप्त हुये जो धनुष्कोटि में स्नानकर देवता और पितरों का तर्पण करे वह ब्रह्मलोक को जाता है जो धनुष्कोटि पर एक ब्राह्मण को भी भोजन करावे वह दोनों लोकों में सुख पाता है जो तप अथवा अश्वमेध आदि यज्ञ न करसके वह धनुष्कोटि में स्नान करे धनुष्कोटि में स्नान करनेहारे पुरुष निन्द्ययोनि में जन्म नहीं लेते माघमास मकर के सूर्य में जो

पुरुष धनुष्कोटि में स्नान करें उनका पुण्यफल हम नहीं वर्णन करसक्के माघमास में जो स्नान करे वह गङ्गाआदि सर्वतीर्थों के स्नान का फल पाय मोक्ष पाता है जन्म भर के किये पाप स्नान करतेही नष्ट होजाते हैं सब देवताओं में रामचन्द्र और सब तीर्थों में धनुष्कोटि उत्तम है माघ महीने में तीन दिन धनुष्कोटि में स्नान करे और जितेन्द्रिय रहकर एकबार भोजन करे वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छूट मुक्ति पाता है माघ महीने में स्नान करे और शिवरात्रि को उपवासकर जागरण करे और रात्रि को रामनाथ महादेव का भक्ति से पूजनकर दूसरे दिन प्रभातही उठ धनुष्कोटि में स्नान कर फिर रामनाथ का विधिपूर्वक पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराय सुवर्ण गौ भूमिआदि दानकर ब्राह्मणों की आज्ञा पाय आपभी भोजन करे इस विधि से जो माघ स्नान करे उसके सब पापों को निवृत्त कर श्रीमहादेवजी भुक्ति और मुक्ति देते हैं इसलिये हे मुनीश्वरो ! मोक्ष की इच्छा होय तो अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करना चाहिये अर्धोदय योग में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नान करें उनके सब पाप नष्ट होते हैं अर्धोदय और महोदययोग में जो स्नान करें उनको ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता प्रसन्न होकर भुक्ति और मुक्ति देते हैं इन दोनों योगों में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नान करें वे सब यज्ञों के फल पाते हैं और उनके सब पापों का प्रायश्चित्त भी होजाता है चन्द्र और सूर्य के ग्रहण में जो पुरुष धनुष्कोटि में स्नान करे उसके पुण्यफल को शेषजी भी नहीं गिनसक्के ग्रहण में स्नान करतेही ब्रह्महत्याआदि पाप निवृत्त होते हैं और मुक्ति भी प्राप्त होती है इस कारण ग्रहण अर्धोदय और महोदय में विशेष करके स्नान करना चाहिये हे मुनीश्वरो ! सब व्यवहार छोड़ धनुष्कोटि तीर्थ को जावो और पितरों को पिण्डदान करो वहां पिण्डदान करने से कल्प भर पितर तृप्त रहते हैं पितरों की तृप्ति के लिये रामचन्द्रजीने तीन स्थान बनाये हैं सेतुमूल धनुष्कोटि और गन्धमादनपर्वत इनतीनों स्थानों का नाम ऋणमोक्ष है यहां पिण्डदेने से मनुष्य पितरों के ऋण से मुक्त होते हैं सब उपाय से धनुष्कोटि का सेवन करना चाहिये धनुष्कोटि में

स्नानकर अश्वत्थामा महाघोर सुप्तमारण दोष से छूटा हे मुनीश्वरो ! यह हमने भुक्ति मुक्ति का देनेहारा धनुष्कोटि का माहात्म्य वर्णन किया ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां सर्वनरकस्वरूपनिरूपणं नामत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

धनुष्कोटितीर्थ का माहात्म्य और अश्वत्थामा ने जो सोतेहुये वीरों को मारा था उसका वर्णन ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी ! अश्वत्थामा ने क्योंकर सुप्तमारण किया और धनुष्कोटि में स्नानकर किस प्रकार उस पाप से छूटा यह आप वर्णन करें आपका वचनामृत पान करते २ हमको तृप्ति नहीं होती यह नैमिषारण्यवासी मुनियों का वचनसुन अपनेगुरु श्रीवेदव्यासजी को प्रणामकर सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! कौरव और पाण्डवों का राज्य के निमित्त बड़ा युद्ध हुआ उस युद्ध में दश दिन घोर संग्राम कर भीष्म शरशय्या पर सोये पांचदिन द्रोणाचार्य ने युद्ध किया दो दिन युद्ध करके कर्ण और एकदिन युद्ध करके शल्य मारेगये अठारहवें दिन भीमसेन ने गदायुद्ध से दुर्योधन के ऊरु तोंड़डाले तब धृष्टद्युम्न शिखण्डी आदि सब पाण्डवों के पक्ष के राजा विजय पाय प्रसन्न हो शंख बजाते अपने २ डेरे को गये और श्रीकृष्णचन्द्र तथा सात्यकी सहित पाण्डव दुर्योधन के शून्य डेरों में प्रविष्ट हुये वहां दुर्योधन के वृद्ध मन्त्री कञ्चुकी अन्तःपुर के रक्षकआदि सब उनको प्रणाम करनेलगे पाण्डव भी दुर्योधन का सब धन ग्रहणकर उस रात्रि को वहांहीं रहे परन्तु श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि मङ्गल के लिये आजकी रात डेरों में नहीं रहना चाहिये इस लिये वे सब ओघवती नाम नदी के तटपर जायरहे कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामा ये तीनों जो कौरवों के पक्ष में बचे थे सूर्यास्त से पहिलेही दुर्योधन के पास गये देखा कि दोनों ऊरु दुर्योधन के टूटगये रुधिर से सब अङ्ग भीग रहे हैं और भूमि पर धूलि में लोटता है यह अवस्था राजा दुर्योधनकी देख इन तीनों ने बड़ा शोच किया राजा इनको देख अश्रुपात

करनेलगा यह दशा राजा दुर्योधन की देख अश्वत्थामा क्रोध से जलउठा और दोनों हाथ पीस क्रोध से अश्रुपात करता हुआ दुर्योधन से बोला कि हे राजन्! मेरे पिता को युद्ध में दुष्टों ने छल से मारडाला उसका मुझे इतना दुःख न हुआ जितना आज तुम्हारी यह दशा देखकर हुआ है इस लिये मैं शपथ खाकर कहता हूं कि आज रात्रि को पाण्डव और सृंजयों को श्रीकृष्णके देखते २ मारूंगा आप मुझे आज्ञा दीजिये यह गुरुपुत्र का वचन सुन दुर्योधन ने कहा कि बहुत अच्छा जैसी आपकी इच्छा होय वैसा कीजिये और कृपाचार्य से कहा कि आप अश्वत्थामा का अभिषेक कीजिये कि ये सेनापति बनें कृपाचार्य ने भी जल लाकर उसी क्षण अश्वत्थामा का अभिषेक किया अश्वत्थामा भी दुर्योधन को आलिङ्गनकर कृपाचार्य और कृतवर्मा को साथ ले दक्षिणदिशा को चला और सूर्यास्त होते २ पाण्डवों के डेरे के पास तीनों वीर आय पहुँचे वहां पाण्डवों का बड़ा कोलाहल सुनकर पूर्वकी ओर तीनों भय से चले जाते २ वन में उनमें से एक ने अति मनोहर सरोवर देखा कि जिसमें कमलआदि अनेक पुष्प फूले थे और हंस कारण्डवआदि पक्षी क्रीड़ा कररहे थे उस सरोवर में तीनों ने जल पिया और अपने घोड़ों को जल पिलाया और श्रम निवृत्त करने के लिये घोड़ों से उतरकर एक वटवृक्ष के नीचे बैठे और सायंसन्ध्या भी की इतने में सूर्य अस्त हुआ अतिघोर अन्धकार चारोंओर छागया दिनचारी जीव निद्रावश हुये और रात्रि में विचरनेवाले जीव इधर उधर घूमनेलगे वे तीनों भी वटवृक्ष के नीचे बैठे थे उनमें कृपाचार्य और कृतवर्मा तो निद्रावश हो भूमिही में सोगये और अश्वत्थामा को मारे क्रोध और शोक के निद्रा न आई तब अश्वत्थामा ने देखा कि अतिभयंकर एक उलूक अति घोर शब्द करता हुआ बहुत उलूकों को साथ लिये वहां आया और उस वटवृक्ष की शाखाओं में हज़ारों काक सोते थे उनको मार २ गिरानेलगा किसी काक के नेत्र फोड़दिये किसीकी टांग तोड़ दी किसी के पर उखाड़ लिये किसी का शिरही नोच लिया इस प्रकार उस उलूक ने काकों का संहार किया और अपने शत्रु काकों की यह गति देख बहुत प्रसन्न हुआ उलूक का यह व्यव-

हार देख अश्वत्थामा ने विचार किया कि मैं भी इसीप्रकार शत्रुसंहार करूं क्योंकि युद्ध करके तो पाण्डवों का जीतना कठिन है और हमने दुर्योधन के आगे पाण्डवों के वध की प्रतिज्ञा की है इसलिये रात्रि के समय कपट से ही पाण्डवों का संहार करना चाहिये क्योंकि निन्द्यकर्म करके भी शत्रुवों को मारना चाहिये पाण्डवों ने भी छल सेही जय पाई है और नीतिशास्त्र जाननेवाले विद्वानों ने यह कहा है कि शत्रु की सेना परिश्रान्त होय सोती होय भोजन करती होय शस्त्र छोड़े किसी व्यापार में लगी होय उस समय मारनी चाहिये यह मन में सोच विचार अश्वत्थामा ने कृपाचार्य और कृतवर्मा को जगाया और उससे यह कहा कि राजा दुर्योधन धर्म से युद्ध करतारहा और पाण्डवों ने क्षुद्रकर्मों से उसको मारा भीमसेन ने दुर्योधन के शिरपर पैर रक्खा यह सब बात आप भी जानते हैं अब मेरा यह निश्चय है कि इसी रात्रि में सोये हुये पाण्डवों को छल से मार देवें यह सुन कृपाचार्य बोले कि हे अश्वत्थामन् ! सोये हुये शत्रुवों को मारना कुछ धर्म नहीं शस्त्रहीन और रथहीन शत्रुवों को मारना भी उचित नहीं इसलिये तुम ऐसा साहस मत विचारो हम तीनों धृतराष्ट्र गान्धारी और परम धर्मात्मा विदुर से सम्मति पूछें वह जैसा कहेंगे वैसाही किया जायगा यह अपने मामा कृपाचार्य का वचन सुन अश्वत्थामा ने कहा कि मेरे पिता को युद्ध में छल से मारा है वह दुःख मेरे हृदय को जलाता है और धृष्टद्युम्न कहता है कि मैं द्रोणहन्ता हूं यह वचन मैं क्योंकर सुनूं पाण्डवों ने ही पहिले धर्म की मर्यादा भङ्ग की आप सबके देखते २ त्यक्तशस्त्र मेरे पिता को धृष्टद्युम्न ने मारा और शिखण्डी को आगेकर छल से वृद्धभीष्म को अर्जुन ने मारा इस भांति और भी बहुत से राजा पाण्डवों ने छल से मारे इसी भांति हम भी छल से सोते हुये पाण्डवों का संहार करें तो कुछ अनुचित नहीं यह निश्चय कर अश्वत्थामा अपने रथ में चढ़ क्रोध से जलता हुआ पाण्डवों के डेरे को चला कृपाचार्य और कृतवर्मा भी उसके पीछे २ चले और क्षण में वहां आय पहुँचे सब मनुष्य युद्ध से थके हुये अपने २ डेरों में सोते थे डेरे के द्वारपर पहुँच अश्वत्थामा ने शिवजी का

आराधन किया शिवजी ने प्रसन्न हो अश्वत्थामा को अति उत्तम एक खड्ग दिया तब अश्वत्थामा प्रसन्न हो कृपाचार्य और कृतवर्मा को पाण्डवों के शिबिर अर्थात् लश्कर के द्वारपर खड़ाकर आप भीतर घुसा और शिबिर में विचरनेलगा पहिले धृष्टद्युम्न के तम्बू के समीप पहुँचा और तम्बू के भीतर घुस देखा कि श्वेतवर्ण की शय्या के ऊपर युद्ध से थकाहुआ धृष्टद्युम्न सोता है और उसकी सेना तम्बू के चारो ओर डेरा डाले पड़ी है अश्वत्थामा ने एक लात मारकर धृष्टद्युम्न को जगाया धृष्टद्युम्न ने जागकर देखा कि अश्वत्थामा सम्मुख खड़ा है और शय्या से उठना चाहा परन्तु अश्वत्थामा ने उसके केश पकड़कर वहांहीं गिरादिया और आप उसकी छाती पर चढ़ बैठा धनुष् की ज्यासे उसका कण्ठ बांधकर जिसप्रकार पशुको मारे उसीभांति धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामा ने मारदिया धृष्टद्युम्न निद्रा से व्याकुल था और अठारह दिन के युद्ध से थका हुआ था इसलिये कुछ पराक्रम न करसका फिर युधामन्यु उत्तमौजा द्रौपदी के पांचोपुत्र सोमक जो युद्ध से बचे थे और शिखण्डी आदि और भी राजाओं को अश्वत्थामा ने खड्ग से मारा अश्वत्थामा के भय से जो भगकर बाहर गये उनको कृपाचार्य और कृतवर्मा ने मारा इस प्रकार क्षणमात्र में उन तीनों ने पाण्डवों की सेना का संहार किया और तीनों उस शिबिर से निकल भय से इधर उधर भगे अश्वत्थामा नर्म्मदा तीर पर पहुँचा वहां हज़ारों वेदवेत्ता ऋषि तप करते थे उनके समीप अश्वत्थामा गया परन्तु उन्होंने योगबल से इसका सब कर्म जान लिया और अश्वत्थामा से मुनियों ने यह कहा कि हे द्रोणपुत्र ! तू ब्राह्मणों में अधम है तैंने ऐसा घोर पाप किया सोते हुये मनुष्यों को मारा तेरे दर्शन से हम पतित होते हैं और तेरे साथ संभाषण करने से ब्रह्महत्या के तुल्य पाप लगता हैं इसलिये हे पापिन् ! शीघ्र तू हमारे आश्रम से निकलजा यह मुनियों का वचन सुन लज्जित हो अश्वत्थामा वहां से चला और काशीआदि तीर्थों में जहां २ गया वहांहीं ब्राह्मणों ने तिरस्कार किया तब प्रायश्चित्त की इच्छा से बदरिकाश्रम में व्यासजी के पासगया और व्यासजी को प्रणाम किया तब व्यासजी ने कहा

कि हे अश्वत्थामन् ! शीघ्रही हमारे आश्रम से निकल तू बड़ा पातकी है तेरे साथ वार्तालाप करने से हमको भी पातक लगता है यह व्यासजीका वचन सुन अतिदुःखी हो अश्वत्थामा ने कहा कि हे महाराज ! सबने मेरा तिरस्कार किया तब आपकी शरण में आया अब आप भी मुझे त्याग देवें तो मैं किस की शरण जाऊं आप दयालु हैं मेरे ऊपर भी कृपा करें और इस पाप का मुझे प्रायश्चित्त बतावें आप सर्वज्ञ हैं यह अश्वत्थामा का दीन वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर व्यासजी ने कहा कि हे अश्वत्थामन् ! इस पाप का प्रायश्चित्त किसी स्मृति में तो लिखा नहीं तो भी हम एक उपाय तुमको बताते हैं दक्षिण समुद्र में रामसेतु के समीप धनुष्कोटि नाम तीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उस तीर्थ में जाकर हे अश्वत्थामन् ! तू स्नान कर एक महीने स्नान करने से शुद्ध हो जायगा यह व्यासजी की आज्ञा पाय अश्वत्थामा धनुष्कोटितीर्थपर पहुँचा और संकल्पपूर्वक एकमास नियम से स्नान किया नित्य तीनकाल रामनाथ का पूजन और पञ्चाक्षर मन्त्र का जप किया एक महीना पूरा होनेपर उस दिन उपवास रक्खा और रामनाथ के समीप रात्रि को जागरण किया प्रभात होते ही धनुष्कोटि में स्नानकर रामनाथ का पूजन किया और भक्ति से अश्रुपात करता हुआ शिवजी के आगे नृत्य करनेलगा तब भक्तवत्सल श्रीमहादेव जी प्रसन्नहो प्रकट हुये उनको देख अश्वत्थामा स्तुति करनेलगा॥

द्रौणिरुवाच॥ नमस्ते देवदेवेश करुणाकर शङ्कर॥ आपदम्बुधिमग्नानां पोतायितपदाम्बुज॥ १॥ महादेव कृपामूर्त्ते धूर्जटे नीललोहित॥ उमाकान्त विरूपाक्ष चन्द्रशेखर ते नमः॥ २॥ मृत्युंजय त्रिनेत्र त्वं पाहि मां कृपया दृशा॥ पार्वतीपतये तुभ्यं त्रिपुरघ्नाय शम्भवे॥ ३॥ पिनाकपाणये तुभ्यं त्र्यम्बकाय नमोनमः॥ अनन्तादिमहानागहारभूषणभूषित॥ ४॥ शूलपाणे नमस्तुभ्यं गङ्गाधर मृडाव्यय॥ रक्ष मां कृपया देव पापसंघातपञ्जरात्॥ ५॥

यह स्तुति सुन प्रसन्न हो श्रीमहादेवजी ने अश्वत्थामा से कहा कि हे द्रोणपुत्र ! धनुष्कोटि में स्नान करने से सुप्तमारणदोष से तू मुक्त हुआ अब जो वर चाहे वह मांग यह शिवजी का वचन सुन अश्वत्थामा ने प्रार्थना की कि हे महाराज ! आपके दर्शन सेही मैं कृतार्थ हुआ आप का दर्शन पापी पुरुषों को कोटिजन्म में भी दुर्लभ है अब यही वर चाहता हूं कि आपके चरणारविन्द में दृढ़ भक्ति रहे शिवजी ने उसको यही वर दिया और अन्तर्धान हुये और अश्वत्थामा निष्पाप होगया तब सब ऋषियों ने उसको अपने में मिलाया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! धनुष्कोटि का यह वैभव हमने वर्णन किया जिसमें स्नान करतेही अश्वत्थामा शुद्ध हुआ जो पुरुष इस अध्याय को पढ़े अथवा सुने वह सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को जाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भा०व्याख्यायामश्वत्थामकथानकं नामैकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

राजा नन्द और धर्मगुप्त की अद्भुत कथा और धनुष्कोटितीर्थ का माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! हम आपकी प्रीति के लिये फिर भी धनुष्कोटि का वैभव वर्णन करते हैं चन्द्रवंश में नन्द नाम एक बड़ा प्रतापी चक्रवर्ती राजा हुआ है उसका पुत्र धर्मगुप्त नाम था राजा नन्द सब राज्यभार पुत्र को सौंप तप करने को वन में गया और धर्मगुप्त राज्य करने लगा धर्मगुप्त ने बहुत यज्ञ किये ब्राह्मणों को सुवर्ण गौ भूमि आदि दान दिये उसके राज्य में सब प्रजा धर्म में तत्पर थी और चौर आदि की पीड़ा किसी को नहीं थी किसी समय धर्मगुप्त घोड़ेपर चढ़ आखेट के लिये वन को गया वह वन ताल, तमाल, हिंताल, कुरबकआदि वृक्षों से पूर्ण कमल, कुमुद, कह्लार, नीलोत्पल आदि से भरे तड़ागों करके शोभित था और अनेक ऋषि उस वन में तप करते थे वहां राजा धर्मगुप्त मृगया खेलने लगा एक मृग के पीछे लगा हुआ दूर चलागया और सब सेना पीछे रहगई इतने में रात्रि होगई तब राजा धर्मगुप्त एक सरोवर के तटपर उतरा

वहां सन्ध्याकर रात्रि व्यतीत करने के लिये सिंह आदि जीवों के भय से एक वृक्षपर चढ़गया इतने में एक रीछ भगाहुआ आया कि जिसके पीछे एक सिंह लगरहा था वह रीछ भी सिंह से भयभीत हुआ इसी वृक्षपर चढ़ा और राजा को उसने देखा और कहा कि हे महाभाग! मुझसे मत डर हम दोनों यहां रात्रि व्यतीत करदेंगे नीचे बड़ा भयंकर सिंह खड़ा है अब आधीरात्रि तक तू निद्राकर मैं तेरी रक्षा करूंगा पीछे मैं सोऊंगा तू मेरी रक्षा करना यह रीछ का वचन सुन धर्मगुप्त सोगया और रीछ उसकी रक्षा करनेलगा तब सिंह ने कहा कि हे रीछ! यह मनुष्य सोगया है इसको तू नीचे ढकेल दे तब रीछ ने कहा कि हे मृगराज! तू धर्म नहीं जानता विश्वासघाती पुरुष की कभी सद्गति नहीं होती ब्रह्महत्या आदि पाप तो किसी प्रकार निवृत्त हो भी सके हैं परन्तु मित्रद्रोह का पाप कोटिजन्मों में भी नहीं छूटता पृथ्वी को जितना भार विश्वासघातक पुरुष का लगता है उतना मेरु आदि महापर्वतों का नहीं यह रीछ का वचन सुन सिंह चुप हुआ इतने में आधीरात हुई तब रीछ सोया और राजा उसकी रक्षा में बैठा तब सिंह ने राजा से कहा कि इस रीछ को नीचे डाल दे यह सिंह का वचन सुन राजा ने उस रीछ को धीरे से ढकेल दिया परन्तु वह रीछ भूमिपर न गिरा उसने वृक्ष की एक शाखा पकड़ ली और फिर ऊपर चढ़ा और राजा से बोला कि हे राजन्! मैं भृगुकुल में उत्पन्न ध्यानकाष्ठाभिध मुनि हूं मैंने अपनी इच्छा से रीछ का रूप धरा है तैंने विना अपराध मुझे नीचे डालना चाहा इसलिये उन्मत्त होजा यह शाप राजा को दे सिंह से कहा कि हे सिंह! तू कुबेर का मन्त्री नृसिंह नाम यक्ष है एक समय अपनी भार्या को संग ले हिमालयपर्वत में गौतमऋषि के आश्रम के समीप जाय विहार करनेलगा इतने में गौतमऋषि समिधा लाने को अपनी पर्णकुटी से निकले गौतममुनि ने तुझको नग्न देख शाप दिया कि हे मूढ़! हमारे आश्रम के समीप तू विवस्त्र हुआ इसलिये सिंह होजा इस भांति तू गौतम मुनि के शाप से सिंह हुआ है कुबेर बड़े महात्मा हैं और उनके मन्त्री भी धर्मात्मा हैं फिर तुम हमको क्यों मारना चाहते हो यह ध्यानकाष्ठमुनि

का वचन सुनतेही सिंहरूप छोड़ वह दिव्य यक्ष का रूप धार मुनिको प्रणाम कर बोला कि हे मुने! आज मुझे पूर्वजन्म का वृत्तान्त स्मरण आया गौतम ने मेरा शापान्त यह किया था कि जब ऋक्षरूप ध्यानकाष्ठमुनि से तेरा संवाद होगा तब तू सिंहरूप को छोड़ यक्ष होगा वह संवाद आज हुआ और आप के प्रभाव को मैंने जाना इतना कह मुनि को प्रणामकर विमानपर चढ़ यक्ष तो अलकापुरीको गया और मुनि भी अपनी इच्छानुसार चलदिये धर्मगुप्त भी उन्मत्त हो वन में बिचरनेलगा इतने में उसकी सेना और सब मन्त्री आय मिले और राजा की यह अवस्था देख किसी प्रकार राजधानी को लाये और वहां से नर्मदा नदी के तटपर राजा धर्मगुप्त को लेगये जहां उसका पिता नन्द तप करता था नन्द से सब वृत्तान्त कहा तब राजा नन्द अपने पुत्र को जैमिनिमुनि के पास लाया और प्रार्थना की कि हे महाराज! यह मेरा पुत्र उन्मत्त हो गया है आप इसके आरोग्य होने का कोई उपाय बतावें यह राजा नन्द का वचन सुन जैमिनिमुनि कुछ काल ध्यानधर बोले कि हे राजन्! तेरे पुत्र को ध्यानकाष्ठमुनि ने शाप दिया है उस शाप की निवृत्ति का हम उपाय कहते हैं दक्षिणसमुद्र के तटपर रामसेतु में सब पाप और शाप हरनेवाला धनुष्कोटि नाम तीर्थ है वहां अपने पुत्र को ले जाकर स्नान कराइये तब यह आरोग्य होजायगा यह जैमिनिमुनि का वचन सुन राजा नन्द अपने पुत्र को धनुष्कोटितीर्थ पर लेआया और स्नान कराया स्नान करातेही उसका उन्माद निवृत्त हुआ राजा नन्द ने भी धनुष्कोटि में स्नान किया और एक दिन उपवासकर रामनाथ का पूजनकर राजा नन्द तो तप करने चलागया पीछे से धर्मगुप्त ने ब्राह्मणों को दान दिये और भक्ति से रामनाथ का पूजन किया कुछ दिन वहां रहकर अपने मन्त्रियों समेत राजधानी को आया और धर्म से राज्य करनेलगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जो पुरुष भूत, राक्षस, ग्रह, अपस्मार, उन्माद आदि से पीड़ित होय उसको धनुष्कोटि में अवश्य स्नान करना चाहिये जो पुरुष धनुष्कोटितीर्थ को छोड़ और तीर्थ को ढूंढ़ता फिरे वह गोदुग्ध छोड़ थूहर के दुग्ध को ढूंढ़नेवाले मनुष्य के समान मूढ़

होता है जो मनुष्य तीन काल अथवा स्नान के ही समय नित्य धनुष्कोटि का स्मरण करें वे ब्रह्मलोक को जाते हैं हे मुनीश्वरो! इस धर्मगुप्त की कथा श्रवण करने से ब्रह्महत्या सुवर्णस्तेय आदि सब पाप नष्ट होते हैं॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां नृपनन्दधर्मगुप्तकथानकं नामद्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

परावसु ब्राह्मण की कथा और धनुष्कोटितीर्थ का माहात्म्य॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! फिर भी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णन करते हैं जिसके श्रवण करतेही सब पातक दूर होजायँ पूर्वकाल में परावसु नाम वेदवेत्ता ब्राह्मण अज्ञान से अपने पिता को मार धनुष्कोटि तीर्थ में स्नानकर उस घोर हत्या से छूटा यह सुन ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी! परावसु ने अपने पिता को क्यों मारा और फिर उस हत्या से किसविधि छूटा यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! बड़ा धर्मात्मा बृहद्द्युम्न नाम चक्रवर्ती राजा पूर्वकाल में हुआ है जिसने अनेक यज्ञ किये और उसके यज्ञ करानेहारे रैभ्यमुनि थे उनके अर्वावसु और परावसु ये दो पुत्र थे दोनों पुत्र वेद, वेदाङ्ग, श्रौत, स्मार्त, न्याय, मीमांसा, सांख्य, योगशास्त्र आदि में निपुण थे रैभ्यमुनि ने एक समय इन दोनों को यज्ञ कराने के लिये राजा बृहद्द्युम्न के पास भेजा और रैभ्यमुनि अपनी बड़ी स्नुषा अर्थात् अर्वावसु की स्त्री सहित अपने आश्रम में रहे वे दोनों भाई भी पिता की आज्ञा से राजा को यज्ञ कराने लगे सब कर्म साङ्गोपाङ्ग उन्होंने कराये कहीं चूके नहीं उस यज्ञ में राजा के निमन्त्रण से वशिष्ठ, गौतम, अत्रि, जाबालि, कश्यप, क्रतु, दक्ष, पुलस्त्य, पुलह, नारद, मार्कण्डेय, शतानन्द, विश्वामित्र, पराशर, भृगु, कुत्स, वाल्मीकि, व्यास, धौम्य आदि अपने २ हजारों शिष्य प्रशिष्यों को साथ लिये आये और चारो दिशाओं से बड़े २ राजा भांति २ की भेंट लेकर उस यज्ञ में आये और चारो वर्ण चारो आश्रम के मनुष्य उस यज्ञ में एकत्र हुये राजा बृहद्द्युम्न ने सब का सत्कार किया और अनेक प्रकार के

उत्तम २ भोजन वस्त्र रत्न सुवर्ण गौ आदि देकर सब को सन्तुष्ट किया और रैभ्य के पुत्रों ने सब यज्ञकर्म ऐसी चतुरता से कराया कि वशिष्ठ आदि मुनीश्वरों ने भी उनकी बहुत प्रशंसा की तीसरे सवन के अन्त में परावसु अपने घर को सम्हालने आया और अर्वावसु यज्ञ में रहा परावसु रात्रि के समय अपने आश्रम में पहुँचा आगे से मृगचर्म ओढ़े रैभ्यमुनि आते थे परावसु ने जाना कि कोई दुष्ट मृग मुझे मारनेआता है इसलिये पहिले मैं ही इसको मारडालूं यह विचार परावसु ने अपने पिता को मारदिया अन्धकार था और परावसु निद्रा से पीड़ित था इसलिये उसको यह धोखा हुआ मारकर समीप आया जब देखा कि यह तो मेरा पिता है तब बहुत विलाप किया और अपने पिता की सब प्रेतकृत्य किया और फिर यज्ञ में आय सब वृत्तान्त अपने छोटे भाई अर्वावसु से कहा वह भी सुन शोक से रोदन करने लगा फिर उससे परावसु ने कहा कि राजा का यज्ञ होरहा है तू इसका भार नहीं उठासक्ता और मुझ से ब्रह्महत्या होगई उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये मैं अकेला भी यज्ञ का भार उठासक्ता हूँ और तू बालक है तुझ अकेले से यहां का काम न चलेगा इसलिये मेरी हत्या निवृत्ति के लिये तू व्रत धारणकर और मैं यज्ञ कराऊंगा अर्वावसु ने भी अपने ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञा अङ्गीकार की और अपने बड़ेभाई परावसु को यज्ञ में छोड़ आप चलागया बारह वर्षतक ब्रह्महत्या निवृत्ति का व्रत और तीर्थाटन अर्वावसुने किया बारह वर्ष के अन्त में अर्वावसु फिर यज्ञ में आया उसको देखते ही परावसु ने कहा कि हे राजन्! यह ब्रह्महत्या किये तुम्हारे यज्ञ में आया है इसको शीघ्रही बाहर निकलवाइये नहीं तो यज्ञ भ्रष्ट होजायगा यह सुनतेही राजा बृहद्द्युम्न ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि बहुत शीघ्र अर्वावसु को यज्ञ से बाहर निकालो तब अर्वावसु ने कहा कि मैंने ब्रह्महत्या नहीं की ब्रह्महत्या तो मेरे ज्येष्ठ भ्राता परावसु ने की है और इसके बदले मैंने बारह वर्ष पर्यन्त प्रायश्चित्त किया है यह अर्वावसु का वचन किसी ने न माना और उसको निकालदिया और सब ब्राह्मणों ने उसको धिक्कार दिया वह भी इसभांति अनादर पाय तपोवन में जाय उग्र तप करनेलगा उसने सूर्य

भगवान् की प्रसन्नता के लिये ऐसा तप किया कि थोड़ेही काल में सूर्य नारायण प्रसन्न हो प्रकट हुये और इन्द्रआदि सब देवता भी वहां आये और अर्वावसु से कहा कि हे अर्वावसु ! तू तप ब्रह्मचर्य वेद आचार शास्त्रज्ञान आदि करके श्रेष्ठ है परावसु ने तेरा निराकरण किया तोभी तू उसपर क्रोध नहीं करता परावसु ने पिता को मारा और तैंने उसके बदले प्रायश्चित्त किया इसलिये हम तुझे स्वीकार करते हैं और परावसु को त्यागते हैं फिर सूर्य आदि देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु! और जो चाहे सो वर मांग तब अर्वावसु बोला कि हे महाराज ! वही वर चाहता हूं कि मेरा पिता फिर जी उठे और पिता के वध का वृत्तान्त सब भूल जावे देवताओं ने यही वर अर्वावसु को दिया और कहा कि और भी वर मांग तब अर्वावसु ने कहा कि यह वर मिले कि मेरा भ्राता परावसु पिता की हत्या से छूटे यह सुन देवताओं ने कहा कि हे अर्वावसु ! ब्राह्मण तिसमें भी पिता उसको मारने से बड़ी हत्या परावसु को लगी है और पञ्चमहापातकों में और की द्वारा प्रायश्चित्त करने से पातक निवृत्त नहीं होता तिसमें ब्राह्मण पिताको मारनेवाला तो आप भी प्रायश्चित्त करे तो भी शुद्ध नहीं होसक्ता इसलिये परावसु किसी प्रकार शुद्ध नहीं होसक्ता यह देवताओं का वचन सुन फिर अर्वावसु ने प्रार्थना की कि हे महाराज ! आप अनुग्रह करके कोई उपाय बतावें जिससे मेरे भ्राता का उद्धार होय यह आप मुझ पर कृपा करें तब देवताओं ने बहुत काल विचारकर कहा कि हे अर्वावसु ! एक उपाय हम बताते हैं दक्षिण समुद्र के तीर रामसेतु में धनुष्कोटि नाम एक बड़ा तीर्थ है उसमें स्नान करतेही सब पातक महापातक आदि निवृत्त होजाते हैं और दुःस्वप्न ऋण दारिद्र्य अमङ्गल आदि का नाश होकर धन सन्तान आदि की वृद्धि होती है जे पुरुष निष्काम होकर स्नान करें वे मोक्ष पाते हैं जो धनुष्कोटि नाम को भी स्मरण करता रहे वह भी स्वर्ग और मोक्ष का अधिकारी होताहै उस तीर्थ में जाकर तेरा भ्राता स्नान करे तो उसी क्षण ब्रह्महत्या से छूटजाय यह अति गुप्त बात हम ने तुझ को बतादी है इतना कह सब देवता अपने २ धाम को गये और

अर्वावसु भी अपने भ्राता को साथ ले धनुष्कोटि पर पहुँचा वहां दोनों भ्राताओं ने संकल्पपूर्वक धनुष्कोटि में स्नान किया स्नान के अनन्तर आकाशवाणी हुई कि हे परावसु! अब तू पिता की हत्या से छूटगया यह सुन परावसु बहुत प्रसन्न हुआ और अर्वावसु को साथ ले धनुष्कोटि को प्रणाम कर और भक्ति से रामनाथ महादेव का पूजन कर निष्पाप हो अपने आश्रम को आया आश्रम में आकर देखा कि रैभ्यमुनि बैठे हैं उनको दोनों भाइयों ने प्रणाम किया रैभ्यमुनि भी अपने पुत्रों को देख बहुत प्रसन्न हुआ और परावसु को निष्पाप जान सब मुनियों ने भी ग्रहण करलिया हे मुनीश्वरो! इसप्रकार धनुष्कोटि के प्रभाव से परावसु पितृहत्या से छूटा और भी महापातक धनुष्कोटि में स्नान करतेही निवृत्त होते हैं जो पुरुष इस अध्याय को पढ़े अथवा श्रवण करे वह भी सब पातकों से मुक्त होजाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां द्विजपरावसुकथानकंनाम त्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

एक वानर और जम्बुक की कथा सुमतिनामक एक महापापी ब्राह्मण का इतिहास ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! फिर भी हम धनुष्कोटि का प्रभाव वर्णन करते हैं पूर्वकाल में एक वानर और एक जम्बुक दोनों मित्र थे पहिले जन्म में वे दोनों मनुष्य थे तब भी उनका बड़ा स्नेह था और वानर जम्बुक हुये तब भी दोनों परस्पर स्नेह रखते और दोनों जातिस्मर थे एक दिन वह जम्बुक श्मशान के बीच किसी मृतक के शरीर को खाता था तब वानर ने कहा कि हे मित्र! तैंने पूर्वजन्म में क्या पाप किया था कि श्मशान में दुर्गन्धयुक्त मनुष्यमांस तू भक्षण कररहा है तब जम्बुक कहने लगा कि हे मित्र! मैं पूर्वजन्म में वेद शास्त्र के जाननेवाला देवशर्मा नाम ब्राह्मण था मैंने ब्राह्मण को धन देना कहकर फिर न दिया उसी पाप से मैं जम्बुक हुआ और उसी पाप से यह मनुष्यमांस खाता हूं जे दुष्ट पुरुष स्वीकार करके फिर ब्राह्मण को नहीं देते वे अवश्य जम्बुकयोनि में प्राप्त होते हैं और उनके दशजन्म के किये पुण्य उसीक्षण नष्ट होजाते हैं और

वह पाप सौ अश्वमेध करने से भी निवृत्त नहीं होता अब मैं नहीं जानता कि इस पाप से कब छूटूंगा ब्राह्मण को देना स्वीकार करके अवश्य देना चाहिये नहीं तो जम्बुकयोनि में अवश्यही जन्म लेना पड़ता इतना कह जम्बुक ने पूछा कि हे मित्र ! तैंने क्या पाप किया ? जिससे वानर हुआ और विना अपराध वनचर पक्षियों को मारता फिरता है तब वानर कहने लगा कि पूर्वजन्म में मैं भी वेदनाथ नाम ब्राह्मण था और मेरे पिता का नाम विश्वनाथ और माता का नाम कमला था पूर्वजन्म में भी तेरे साथ मेरी मैत्री थी यह तू भी जानता है मैंने शिवजी का इतना आराधन किया कि मैं त्रिकालज्ञ हुआ परन्तु एक दिन किसी ब्राह्मण का शाक मैंने हर लिया उसी पाप से मुझे वानर होना पड़ा इसलिये कभी ब्राह्मण की कोई वस्तु न हरनी चाहिये विष तो खानेवाले कोही मारता है और ब्राह्मण का धन समेत कुल के नाश करता है ब्राह्मण के धन को हरनेवाला पुरुष बहुत दिन कुम्भीपाक नरक में रहकर वानर होता है ब्राह्मण चाहे बालक दारिद्र्य कृपण मूर्ख चाहे जैसा हो उसका अनादर न करना चाहिये और तो मुझे सब ज्ञान है परन्तु इस पाप के निवृत्त होने का उपाय नहीं जानता तू भी जातिस्मर है परन्तु किसी प्रतिबन्ध से भूत और भविष्य तू नहीं जानता अब हे मित्र! यह दोनों नहीं जानते कि इन पापयोनियों से कब छूटेंगे इस प्रकार दोनों वार्तालाप कररहे थे इतने में वहां सिन्धुद्वीप ऋषि आ निकले जो रुद्राक्ष और विभूति से भूषित और शिवजी का नाम लेते मानो साक्षात् शिवही थे उनको देख वानर और जम्बुक ने भक्ति से प्रणाम किया और प्रार्थना की कि हे महाराज ! हमको कोई ऐसा उपाय कृपा करके बतावें जिससे हम दोनों दुष्टयोनियों से छूटें आप जैसे महात्मा अनाथ, कृपण, मूर्ख, बालक, रोगी, दुःखी आदि जीवोंकी रक्षा करते हैं यह उनका दीन वचन सुन बहुत काल ध्यानकर सिन्धुद्वीपमुनि बोले कि हे शृगाल! तैंने एक सेर धान ब्राह्मणको देनेको कहकर फिर न दिये इससे तू जम्बुक हुआ और हे वानर ! तैंने ब्राह्मण के घरसे शाक चोराया इसलिये सब पक्षियों को भय देनेहारी वानरयोनि में प्राप्त हुआ अब तुम्हारे उद्धार के

लिये हम उपाय बताते हैं दक्षिणसमुद्र में धनुष्कोटितीर्थ है उस तीर्थ में जाकर स्नान करो तब इस पापयोनि से मुक्त होगे पूर्वकाल में सुमति नाम ब्राह्मण ने एक किराती स्त्री अर्थात् भीलनी के संग में सुरापान किया तब धनुष्कोटि में स्नानकर शुद्ध हुआ यह सुन जम्बुक और वानर ने पूछा कि हे महाराज ! सुमति कौन था और उसने किरातकी स्त्री के संग में क्यों-कर सुरापान किया यह आप वर्णन करें तब सिन्धुद्वीपमुनि कहनेलगे कि महाराष्ट्र देश में वेद और शास्त्र का जाननेहारा यज्ञदेव नाम एक ब्राह्मण था वह सदा अतिथियों का पूजन और शिवार्चन किया करता उसके सुमति नाम एक पुत्र था वह अपने माता पिता और पतिव्रता भार्या को छोड़ विटों के साथ लग उत्कलदेश को चलागया उस देश में एक युवती किराती रहती थी जो तरुण पुरुषों को अपने रूप से वश करके उनका धन हरती थी सुमति ब्राह्मण भी उसके घर गया परन्तु इसके पास धन न था इस कारण उस स्त्री ने इसका कुछ आदर न किया तब यह उदास हो चला आया परन्तु वह मन में बसगई थी इसलिये नित्य चोरी करनेलगा कुछ काल में थोड़ा धन एकत्र करके उसके पास गया और वह धन उसको दिया तब वह प्रसन्न हुई उस दिन से सुमति उसी के घर में रहनेलगा और नित्य उसके साथ भोजन करता और दोनों एकही चषक अर्थात् प्याले में मद्य पीते और रात्रि को एकत्र सोते इस प्रकार सुमति वहांहीं आसक्त होगया माता पिता और अपनी पतिव्रता पत्नी को भूलगया एक दिन वह किरातों के साथ लगकर चोरी करने निकला वे सब लाटदेश में पहुँचे रात्रि को चोरी करने के लिये एक ब्राह्मण के घर में घुसे वह ब्राह्मण जगउठा तब सुमति ने खड्ग से उसके दो टुकड़े करडाले और बहुत सा धन वहां से ले किराती के घर को चला परन्तु अतिभयंकर नीलेवस्त्र पहिने लाल जिसके केश गर्जती और भूमि को कँपाती ब्रह्महत्या उसके पीछेलगी उसके भय से सुमति सब देशों में दौड़ता फिरा परन्तु वह हत्या पीछे लगी रही तब वह अपने ग्राम में पहुँचा और पिता के पास जाकर पुकारा कि हे पितः ! मेरी रक्षा कर यह पुत्र का दीन वचन सुन पिता ने कहा कि मत डर मैं तेरी रक्षा

करता हूं तब ब्रह्महत्या बोली कि हे ब्राह्मण! इसकी रक्षा का यत्न मत कर यह बड़ा पातकी है इसने माता पिता और पतिव्रता पत्नी का त्याग किया फिर किराती का संगकर सुरापान किया चोरी की और ब्राह्मण का वध किया इसलिये इसको मैं नहीं छोड़ती और तेरे सम्पूर्ण कुटुम्ब को भक्षण करूंगी इस पुत्र को जो तू छोड़ देगा तो तेरा कुटुम्ब बच जायगा और तुझे भी एक पुत्र के लिये सब कुटुम्ब का नाश करना उचित नहीं इसलिये तू इसको त्याग दे यह ब्रह्महत्या का वचन सुन यज्ञदेव ब्राह्मण बोला कि पुत्र का स्नेह बहुत बलवान् है इसलिये मैं इसका त्याग नहीं करसक्ता तब फिर हत्या ने कहा कि इस पतित का मोह मतकर इसके दर्शन से भी पाप लगता है इतना कह हत्या ने एक थप्पड़ सुमति के मारा कि वह रोनेलगा और हे मातः! हे पितः! कहकर चिल्लाने लगा तब उसके माता पिता और भार्या भी दुःख से रोदन करनेलगे उसी अवसर में शिव जी के अवतार दुर्वासामुनि वहां आ निकले तब यज्ञदेव ने उनको प्रणाम किया और बहुतसी स्तुति करके प्रार्थना की कि हे महाराज! आप साक्षात् शिवजी का अंश हैं आपका दर्शन पापी पुरुषों को कभी नहीं होसक्ता यह मेरा पुत्र बड़ा दुराचारी है और ब्रह्महत्या इसके पीछे लगी है वह इसको मारना चाहती है अब आप कृपाकर ऐसा उपाय बतावें जिससे यह इस हत्या से छूटे यह एकही मेरा पुत्र है इसके मरजाने से मेरा वंश उच्छिन्न होजायगा और पितरों को पिण्ड देनेवाला कोई न रहेगा इसलिये आप कृपा करें यह ब्राह्मण का वचनसुन दुर्वासामुनि ने बहुत काल ध्यान कर कहा कि हे यज्ञदेव! यह तेरा पुत्र बड़ा पातकी है इसके पातक निवृत्त करनेहारा कोई प्रायश्चित्त नहीं परन्तु हम एक उपाय बताते हैं सावधान होकर सुनो दक्षिण समुद्र में रामधनुष्कोटितीर्थ में जो तेरा पुत्र स्नान करे तो तत्क्षणही पातकों से मुक्त होजाय उस तीर्थ में स्नान करने से दुर्विनीत नाम ब्राह्मण गुरुस्त्री-गमन पातक से मुक्त हुआ वह रामचन्द्रजी का बनाया धनुष्कोटितीर्थ सब पातक हरने में समर्थ है उसी तीर्थ के स्नान करने से तेरा पुत्र शुद्ध होजायगा॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां वानरजम्बुकसुमत्यादिकथनंनाम चतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्विनीत नाम ब्राह्मण की कथा धनुष्कोटितीर्थ का माहात्म्य ॥

यज्ञदेव ने पूछा कि हे महाराज! दुर्विनीत कौन था और उसने गुरुस्त्रीगमन क्योंकर किया और धनुष्कोटि में स्नान कर उस महापातक से क्योंकर छूटा यह आप कृपाकर मुझ से कथन करें तब दुर्वासामुनि कहने लगे कि हे यज्ञदेव! पाण्ड्यदेश में बहुत शास्त्रों का जाननेहारा इध्मबाहु नाम एक ब्राह्मण था और उसकी रुचि नाम भार्या थी उसके दुर्विनीत नाम एक पुत्र हुआ वह बालकही था तब इध्मबाहु मृतक होगया दुर्विनीत ने अपने पिता का और्ध्वदैहिक कृत्य किया कुछ दिन तो अपने घर में रहा पीछे बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ा तब अपनी माता समेत देशान्तर को निकला और गोकर्ण में पहुँचा वहां सुभिक्ष था इस कारण वहांहीं दोनों रहनेलगे कुछ काल में दुर्विनीत तरुण होगया एक दिन ऐसा काम के वश हुआ कि बलात्कार से अपनी माता को पकड़ उसके साथ मैथुन किया और वह पुकारती रही परन्तु यह काम करके अन्धा होरहा था इस लिये कुछ न सुना और यह महापातक कर शोचनेलगा कि मैं ने बड़ा घोर पातक किया अब मेरा उद्धार क्योंकर होगा मैंने अपनी जननी से मैथुन किया यह शोचकर रोदन करनेलगा बहुत काल दुःख से रोदन कर अपनी निन्दा करता हुआ मुनियों की समाज में गया और मुनियों से प्रार्थना की कि हे महाराज! मुझ को गुरुस्त्रीगमन के पातक का प्रायश्चित्त बताइये जो शरीर त्यागने से मेरी शुद्धता होय तो मैं करूं अथवा और कोई प्रायश्चित्त आप कहें तो वह करूं यह उसका वचन सुन कोई मुनि तो मौन होगये कि इसके साथ वार्ता करने से पातक लगता है और कोई मुनि उससे कहनेलगे कि रे पातकी! तैंने मातृगमन किया है इसलिये हमारे सम्मुख मत खड़ा हो जल्दी चलाजा उन सब मुनियों को निवारण कर परम दयालु श्रीवेदव्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणपुत्र! तू अपनी माता सहित धनुष्कोटितीर्थ पर जा और जितेन्द्रिय जितक्रोध और निराहार होकर मकर के सूर्य में एकमासपर्यन्त नित्य स्नान करो तब तुम दोनों

निष्पाप होजावोगे ऐसा कोई पाप नहीं जो धनुष्कोटि में स्नान करने से निवृत्त न होय श्रुति स्मृति और पुराणों में धनुष्कोटि की बड़ी प्रशंसा लिखी है वह तीर्थ महापातक निवृत्त करने में समर्थ है हे ब्राह्मणपुत्र! हमारे वाक्य को वेद के तुल्य मान और शीघ्रही धनुष्कोटितीर्थ पर जा करोड़ों महापातक भी उस तीर्थ में स्नान करने से निवृत्त होते हैं यह व्यासजी का वचन सुन उनको प्रणामकर अपनी माता को संग ले दुर्विनीत धनुष्कोटि पर पहुँचा वहां जाय निराहार और जितेन्द्रिय रहकर दोनों माता पुत्र स्नान करनेलगे संकल्पपूर्वक एक महीने पर्यन्त स्नान किया और नित्य त्रिकाल रामनाथ का पूजन किया इस विधि मकर के सूर्य में स्नान कर महीने के अन्त में पारण किया और दोनों फिर व्यास जी के पास आये और प्रणामकर व्यासजी से प्रार्थना की कि हे महाराज! आपकी आज्ञानुसार माघमास में निराहार रहकर हमने धनुष्कोटि में स्नान किया व नित्य रामनाथ का पूजन किया अब जो आज्ञा आप करें वह कीजाय यह उसका वचनसुन व्यासजी बोले कि हे दुर्विनीत! अब तुम दोनों निष्पाप होगये इसमें कुछ सन्देह मत करो अब तुम्हारे बान्धव और ब्राह्मण तुमको ग्रहण करलेंगे हे दुर्विनीत! हमारे प्रसादसे तू शुद्ध हुआ अब जाकर विवाहकर और गृहस्थाश्रम में रहकर धर्म का सेवनकर जीवहिंसा मतकर और भक्ति से सज्जनों का सेवनकर सन्ध्यावन्दन आदि कर्मों को कभी मत छोड़ जितेन्द्रिय हो नित्य शिव और विष्णु का पूजनकर द्वेष मतकर और किसीकी निन्दा करने में प्रवृत्त मत हो दूसरे का ऐश्वर्य देख मन में सन्ताप मतकर परस्त्री को माता के समान समझ पढ़ेहुये वेदों को मत भूल अतिथियों का अनादर मतकर पितृदिन में श्राद्धकर किसी का पैशुन्य अर्थात् चुगुली स्वप्न में भी मत कर इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, वेदान्त, वेद, वेदाङ्ग आदि नित्य देखतारह शिव और विष्णु के नाम सदा उच्चारण करतारह जाबाल्युपनिषद् के मन्त्रों से भस्मोद्धूलन और त्रिपुण्ड्रकर रुद्राक्ष धारणकर शौच और आचार में तत्पर हो तुलसी और बिल्वपत्र करके त्रिकाल दो काल अथवा एकही काल नित्य नारायण

और सदाशिव का अर्चनकर और तुलसीदल करके युक्त और चरणोदकसे प्रोक्षित नैवेद्य सदा भोजन कर अन्न की शुद्धि के लिये बलिवैश्वदेव कर ब्रह्मचारी भिक्षुक वृद्ध रोगी आदि जो घर में आवे उसको भोजन आदि से सन्तुष्ट कर नित्य माता की शुश्रूषाकर पञ्चाक्षर षडक्षर अथवा अष्टाक्षर मन्त्र का नित्य जपकर इस प्रकार और भी श्रुतिस्मृतिप्रोक्त धर्मों का सेवनकर इस आचरण से देहान्त होनेपर अवश्यही मुक्ति पावेगा यह व्यासजी की आज्ञा पाय अपने घर गया और बहुत काल गृहस्थधर्म का सेवनकर अन्त में मुक्त हुआ और उसकी माता ने भी धनुष्कोटि के प्रभाव से सद्गति पाई इतनी कथा सुनाय दुर्वासा मुनि ने कहा कि हे यज्ञदेव! यह दुर्विनीत की कथा हमने तुझको सुनाई अब तू भी इस अपने पुत्र को साथ ले धनुष्कोटि को जा सिन्धुद्वीपऋषि कहते हैं कि हे जम्बुक! हे वानर! दुर्वासामुनि की आज्ञा पाय यज्ञदेव अपने पुत्र को धनुष्कोटितीर्थ पर लेगया वहां दोनों छहमहीने रहे यज्ञदेव नित्य अपने पुत्र को धनुष्कोटि में स्नान कराता छहमहीने के अन्त में आकाशवाणी हुई कि हे यज्ञदेव! तेरे पुत्र की ब्रह्महत्या निवृत्त हुई और चोरी, सुरापान, किराती संग आदि सब पापों से छूटगया इसमें तू संशय मत कर यह आकाशवाणी सुन यज्ञदेव बहुत प्रसन्न हुआ और रामनाथ का पूजनकर धनुष्कोटि की प्रशंसा करता हुआ अपने पुत्र को साथ ले अपने घर आया और सुख से रहनेलगा इतना कह सिन्धुद्वीप ऋषिने जम्बुक और वानर से कहा कि तुम दोनों भी धनुष्कोटि में स्नान करो तब निष्पाप होगे और कोई उपाय तुम्हारे निष्पाप होने का नहीं है सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सिन्धुद्वीपऋषि से यह उपदेश पाय जम्बुक और वानर किसी प्रकार धनुष्कोटितीर्थ पर पहुँचे वहां जाय दोनों ने स्नान किया स्नान करते ही दिव्यदेह होगये और विमान में बैठ उत्तम भूषण वस्त्रआदि से शोभित हो स्वर्ग को गये हे मुनीश्वरो! धनुष्कोटि के प्रभाव से इसप्रकार वानर और जम्बुक सद्गति को प्राप्त हुये इस अध्याय को जो पढ़े अथवा सुने वह धनुष्कोटितीर्थस्नान के फल को पाय उस गति को पाता है जो योगियों को भी दुर्लभ है॥

इति श्रीस्कान्दे द्विजदुर्विनीतकथानकंनामपञ्चत्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

दुराचार नाम ब्राह्मण की कथा महालयश्राद्ध के माहात्म्य का विस्तार से वर्णन॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! धनुष्कोटि का माहात्म्य कहांतक वर्णन करें जहां स्नानकर एक बड़ापातकी दुराचार नाम ब्राह्मण पापसे मुक्त हुआ यह सुन मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी! दुराचार कौन था और उसने क्या पाप किया और फिर धनुष्कोटि में स्नानकर क्योंकर निष्पाप हुआ? यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! दुराचार नाम एक ब्राह्मण बड़ाक्रूर और पापी गोदावरी नदी के तटपर रहता था वह सदा महापातकी मनुष्यों का संग रखता इससे वह भी महापातकी होगया और ब्राह्मणपना जातारहा जो ब्राह्मण एक दिन महापातकी का संग करे उस का ब्राह्मणत्व चतुर्थांश जाता रहता है दो दिन महापातकी के साथ शयन भोजन सहवास आदि करने से आधा ब्राह्मणत्व रहजाता है तीन दिन के संसर्ग से तीन भाग ब्राह्मणत्व नष्ट होजाता है और चौथे दिन भी महापातकी का संसर्ग करे तो सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व नष्ट होजाता है चार दिन के अनन्तर भी उनका संग करता रहे तो वह भी महापातकी होजाता है महापातकी मनुष्यों के संग से दुराचार का सब ब्राह्मणपना जातारहा और वह भी महापातकी होगया तब उसको एक भयंकर वेताल ने आक्रान्त करलिया वह भी वेतालाविष्ट हुआ देश २ और वन २ में भटकने लगा दैवयोग से कुछ काल में धनुष्कोटितीर्थ में कूद पड़ा तीर्थ का जल स्पर्श होतेही वेताल ने उसको छोड़ दिया दुराचार भी तीर्थ से बाहर निकल विचार करनेलगा कि वह कौन देश है समुद्र का तीर देख पड़ता है मैं गौतमी नदी के तटपर रहनेवाला यहां क्योंकर आया इतने में वहां दत्तात्रेयमुनि देखे दुराचार उनके चरणों पर गिरा और प्रार्थना करनेलगा कि हे महाराज! मैं गोदावरीतटनिवासी दुराचार नाम ब्राह्मण हूं मैं इस देश में क्योंकर आया और यह कौन देश है आप कृपाकर मेरा संशय निवृत्त करें यह उसका वचन सुन क्षणमात्र विचार कर परमदयालु दत्तात्रेय

मुनि बोले कि हे दुराचार! तैंने महापातकी मनुष्यों का संसर्ग किया इससे तेरा ब्राह्मणत्व नष्ट होगया तब तुझे वेताल ने ग्रहण किया वही तुझे यहां ले आया और धनुष्कोटितीर्थ में भी तुझे उसी ने डुबाना चाहा परन्तु तीर्थ का जल स्पर्श होतेही तू निष्पाप होगया इसलिये उस वेताल ने तुझे छोड़ दिया धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करने से सब पातक निवृत्त हो-जाते हैं इसी से तेरा भी संसर्गदोष निवृत्त हुआ और वेताल ने तुझे छोड़ा जिस वेताल ने तुझे ग्रहण किया वह भी पूर्वजन्म में ब्राह्मण था उसने महालयपक्ष में पितरों का श्राद्ध नहीं किया इसलिये पितरों के शाप से वह वेताल हुआ वह भी धनुष्कोटि का दर्शन करतेही वेतालत्व से छूट विष्णुलोक को गया जो पुरुष आश्विनकृष्णपक्ष में श्राद्ध नहीं करते वे लोभी पितरों के शाप से वेताल होते हैं और जो पुरुष उस पक्ष में पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को उत्तम २ भोजन देते हैं वे कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होते सामर्थ्य के अनुसार एक दो तीन अथवा बहुत ब्राह्मणों को अ-वश्यही भोजन कराना चाहिये पितरों का श्राद्ध इसने नहीं किया इससे वेताल हुआ और तुझे महापातकी जान इसने ग्रहण किया भाद्रपद से ले कर वृश्चिकपर्यन्त महालय का काल तत्त्वदर्शी मुनीश्वरों ने कहा है उस में भी आश्विनमास और आश्विनमास में कृष्णपक्ष उत्तम है आश्विन कृष्णपक्ष प्रतिपदा को जो मनुष्य भक्ति से श्राद्ध करे उसके ऊपर अग्नि देवता प्रसन्न होता है और श्राद्ध करनेहारा पुरुष अग्निलोक में जाकर अग्नि के समीप सुखपूर्वक निवास करता है और अग्नि के अनुग्रह से प्रतिपदा को श्राद्ध करनेहारा सब ऐश्वर्य पाता है जो प्रतिपदा को महा-लय श्राद्ध न करे उसके गृह क्षेत्र और ऐश्वर्य आदि को अग्नि दग्ध करता है प्रतिपदा के दिन एक वेदवेत्ता ब्राह्मण को भोजन करावे तो दश दश कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं द्वितीया के दिन जो महालयश्राद्ध करे वह शिवजी के अनुग्रह से बड़ी सम्पत्ति पाता है और शिवजी प्रसन्न होकर उसको कैलास में वास देते हैं द्वितीया के दिन जो श्राद्ध न करे उसके ब्रह्मवर्चस् को शिवजी कोप करके नाश करते हैं और वह पुरुष

रौरव कालसूत्र आदि नरकों में निवास करता है द्वितीया को एक ब्राह्मण को भी भोजन करावे तो बीस कल्प पर्यन्त उसके पितर तृप्त रहते हैं और पितरों के अनुग्रह से सन्तान की वृद्धि होती है तृतीया के दिन श्राद्ध करने से कुबेर तृप्त होता है और महापद्म आदि निधि देता है जो तृतीया को श्राद्ध न करे वह दारिद्र्य और दुःखी रहता है और तृतीया को श्राद्ध करने से तीस हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं चतुर्थी को श्राद्ध करने से गणेशजी प्रसन्न होते हैं और सब विघ्न निवृत्त करते हैं जो चतुर्थी को श्राद्ध न करे उसके सब कार्यों में गणेशजी विघ्न करते हैं और वह पुरुष चण्ड कोलाहल नाम नरक में गिरता है चतुर्थी को श्राद्ध करने से चालीस हज़ार कल्पपर्यन्त पितर तृप्त रहते हैं और श्राद्ध करनेहारे को बहुत पुत्र देते हैं पञ्चमी को श्राद्ध करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है और बहुत सम्पत्ति देती है दिन २ उस पुरुष की कीर्ति बढ़ती है जो पुरुष पञ्चमी को श्राद्ध न करे उसके घर को लक्ष्मी त्यागदेती है और अलक्ष्मी का निवास होता है पञ्चमी को श्राद्ध करने से पचास हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और उसके वंश का विच्छेद नहीं होता और पार्वती भी प्रसन्न होती हैं षष्ठी को श्राद्ध करने से स्वामिकार्त्तिकेय प्रसन्न होते हैं और उसके पुत्र पौत्रों को ग्रह और बालग्रह कभी पीड़ा नहीं देते और जो श्राद्ध न करे उसके बालकों को जन्म लेतेही पूतना आदि ग्रह हरलेते हैं और वह पुरुष वह्निज्वालाप्रवेशनामक नरक में गिरता है षष्ठी को श्राद्ध करने से साठ हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और पुत्र तथा सम्पत्ति को देते हैं सप्तमी को श्राद्ध करने से सुवर्णहस्त श्रीसूर्यभगवान् प्रसन्न होकर अपने हाथ से सुवर्ण देते हैं और आरोग्य भी देते हैं जो पुरुष सप्तमी को श्राद्ध न करे वह अनेक रोगों करके पीड़ित रहता है और तीक्ष्णधारास्त्र-शय्या नाम नरक में गिरता है और सप्तमी को श्राद्ध करने से सत्तर हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान भी देते हैं अष्टमी को श्राद्ध करने से मृत्युंजय सदाशिव प्रसन्न होते हैं शिवजी के प्रसन्न होने से कोई पदार्थ भी दुर्लभ नहीं मुक्ति तो हाथ परही रक्खी है जो अष्टमी को

श्राद्ध न करे उसका कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता और वह संसारसागर में डूबाही रहता है कभी मुक्ति नहीं पाता और वैतरणी में गिरता है अष्टमी को श्राद्ध करने से अस्सी हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं और सब विघ्न निवृत्त करते हैं नवमी को श्राद्ध करने से दुर्गाभगवती प्रसन्न होती हैं और क्षय अपस्मार कुष्ठ भूत प्रेत पिशाच आदि को निवृत्त करती हैं जो पुरुष नवमी को श्राद्ध न करे वह अपस्मार आदि रोग और ब्रह्मराक्षस अभिचार कृत्या आदि करके पीड़ित होता है उस दिन श्राद्ध करने से नब्बे कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं दशमी को श्राद्ध करने से चन्द्रमा प्रसन्न होते हैं और उसकी खेती अच्छी लगती है और दशमी को श्राद्ध न करने से खेती निष्फल होती है दशमी को श्राद्ध करने से सौ हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं एकादशी को श्राद्ध करने से सब लोक का संहार करनेहारे रुद्रभगवान् प्रसन्न होते हैं रुद्रभगवान् के प्रसन्न होने से सब शत्रुवों को जीतता है ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होते हैं और अग्निष्टोम आदि यज्ञों का फल प्राप्त होता है और जो पुरुष श्राद्ध न करे वह शत्रुवों करके पीड़ित रहता है और उसके सब यज्ञ निष्फल होते हैं एकादशी को श्राद्ध करने से दोसौ हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं द्वादशी को श्राद्ध करने से विष्णुभगवान् प्रसन्न होते हैं विष्णुभगवान् के प्रसन्न होने से चराचर जगत् सन्तुष्ट होता है दिन २ सम्पत्ति बढ़ती है भगवान् की कौमोदकी गदा उसके सब रोगों का नाश करती है सुदर्शनचक्र शत्रुवों का संहार करता है और पाञ्चजन्य शंख अपनी ध्वनि से भूत प्रेत राक्षस आदि के भय को निवृत्त करताहै इसप्रकार सब पीड़ाको विष्णुभगवान् हरते हैं जो द्वादशीको श्राद्ध न करे उसकी सम्पत्ति नष्ट होजाती है और अपस्मार आदि रोग भूत, प्रेत, राक्षस, शत्रु आदि पीड़ा देते हैं और अस्थिभेदन नाम नरक में गिरता है द्वादशी को श्राद्ध करने से छहसौ हज़ार कल्पतक पितर तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं त्रयोदशी को श्राद्ध करने से कामदेव प्रसन्न

होता है उत्तम २ स्त्री वस्त्र भूषण मालाआदि प्राप्त होती हैं और जन्मभर सुखी रहता है जो त्रयोदशी को श्राद्ध न करे वह कोई भोग नहीं पाता और अङ्गारशय्या नाम नरक में गिरता है जो त्रयोदशी को महालयश्राद्ध करे उसके पितर हज़ार कल्पतक तृप्त रहते हैं और अविच्छिन्न सन्तान देते हैं चतुर्दशी को श्राद्ध करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं और सब मनोरथ सिद्ध करते हैं और ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्णस्तेय आदि पातक तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं और अश्वमेध पौण्डरीक आदि यज्ञों का फल प्राप्त होता है जो पुरुष चतुर्दशीको महालय न करे वह करोड़ों वर्ष संसाररूप अन्धकूप में पड़ा रहता है कभी उसकी निष्कृति नहीं होती और महापातक विना कियेही महापातकों से लिप्त होता है और उसके यज्ञ आदि सब कर्म निष्फल होते हैं जो पुरुष चतुर्दशी को भक्ति से महालयश्राद्ध करे उसके पितर नरक में होयँ तो स्वर्ग को जायँ और करोड़ों कल्पतक तृप्त रहें और अविच्छिन्न सन्तान देवें अमावास्या को श्राद्ध करे तो अनन्त कालतक उसके पितर तृप्त रहें अमृतपान से जैसी तृप्ति देवताओं को होती है वैसी ही तृप्ति अमावास्या को श्राद्ध करने से पितरों को होती है यह तिथि महापुण्याहै और देवता तथा पितरों की प्रिया है और शिवजी को भी बहुत प्रिया है अमावास्या को श्राद्ध करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होजाते हैं और सब कर्म सफल होते हैं और श्राद्ध करनेहारा पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है जो पुरुष अमावास्या को श्राद्ध न करे उसके पितर ब्रह्मलोक में होयँ तो भी नरक को चलेजाते हैं और वंश भी विच्छिन्न होजाता है यह बड़ा अनर्थ है कि महालय की अमावास्या को श्राद्ध न करे और ब्राह्मणों को भोजन न करावे आश्विन की अमावास्या को पितर नृत्य करते हैं कि आज हमारे पुत्र ब्राह्मण भोजन करावेंगे जिस से हम नरकक्लेश से छूट स्वर्ग को जायँगे आश्विनकृष्णपक्ष में पितरों की तृप्ति के लिये नित्यही ब्राह्मण भोजन करावे उसके मातृकुल और पितृकुल के पितर कई कल्पपर्यन्त अमृत पान करके तृप्त रहते हैं सप्तमी से लेकर अमावास्या पर्यन्त नित्य तीन २ ब्राह्मणों को भोजन करावे द्वादशी

से अमावास्या पर्यन्त तो अवश्यही ब्राह्मणभोजन करावे जो ब्राह्मणभोजन न करावे उसका ऐश्वर्य भङ्ग होजाताहै और वह महादारिद्र्यको प्राप्त होता है इसलिये धन का लोभ छोड़ अनेक प्रकार के भोजन वेदवेत्ता ब्राह्मणों को करावे और उनको सन्तुष्ट करे ब्राह्मणों के तृप्त होने से ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि देवता और अग्निष्वात्ता आदि पितर तृप्त होते हैं और तीनों लोक तृप्त होते हैं पार्वणविधान से महालयश्राद्ध करना चाहिये और यथाशक्ति दक्षिणा देनी चाहिये दक्षिणा में वित्तशाठ्य न करे दक्षिणा से यज्ञ सफल होता है विधवा और अपुत्रा स्त्री भी अपने पति के उद्देश्य से महालयश्राद्ध में ब्राह्मण भोजन करावे नहीं तो धर्म की हानि होती है और वह स्त्री नरक को जाती है आश्विनमास में जो पुरुष महालयश्राद्ध नहीं करते उनका वंश उच्छिन्न होजाता है और ब्रह्महत्या को वे पुरुष प्राप्त होते हैं और जो पुरुष भक्ति से श्राद्ध करते हैं उनका वंश कभी उच्छिन्न नहीं होता और सम्पत्ति भी स्थिर रहती है मह नाम कल्याण का है और आलय स्थान को कहते हैं कल्याण का स्थान होने से महालय कहाता है इससे कल्याणप्राप्ति के लिये महालयश्राद्ध अवश्यही करना चाहिये महालयश्राद्ध न करे तो अमङ्गल होता है जो माता पिता की क्षयाहश्राद्ध न करे तो भी महालयश्राद्ध तो अवश्यही करे कभी न भूले जो महालयश्राद्ध करने की सामर्थ्य न होय तो याचना करके भी महालयश्राद्ध करे परन्तु उत्तम ब्राह्मणों से धन धान्य लेवे पतितों से कभी याचना न करे ब्राह्मण से धन न मिले तो क्षत्रिय से क्षत्रियसे भी धन न मिले तो वैश्य से याचना करे और वैश्य से भी नहीं प्राप्त होय तो पितरों की तृप्ति के लिये गोग्रास देवे और गोग्रास देने की भी सामर्थ्य न होय तो जङ्गल में जाय ऊंचे स्वर से रोदन करे और आंसू डालता हुआ दोनों हाथों से अपने पेट को पीटकर यह कहे कि हे पितरो ! मैं निर्लज्ज कृपण दरिद्री और क्रूरकर्म करनेहारा हूं महालयश्राद्ध करने की मेरी सामर्थ्य नहीं सम्पूर्ण पृथ्वी पर याचना करने से भी मुझे कुछ न मिला इसलिये तुम्हारा महालयश्राद्ध मैं नहीं करसका आप सब मुझपर क्षमा करें ये वाक्य ऊंचे

स्वर से रोदन करता हुआ निर्जन वन में कहे उसका रोदन सुनतेही पितर तृप्त होजाते हैं जिस प्रकार अमृतपान से देवता तृप्त होयँ महालय श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कराने से जो तृप्ति पितरों को होती है वही दरिद्री पुरुष के गोग्रास और अरण्यरोदन से भी होती है महालयपक्ष में सूतक आदि कोई विघ्न होजाय तो सूतकान्त में वृश्चिक के सूर्यपर्यन्त भी श्राद्ध करे महालयश्राद्ध में नव ब्राह्मणों को निमन्त्रण देवे पिता १ पितामह २ प्रपितामह ३॥ मातामह १ प्रमातामह २ वृद्धप्रमातामह ३॥ इनके उद्देश्य से एक एक ब्राह्मणों को विश्वेदेवों के उद्देश्य से दो ब्राह्मणों को और विष्णुभगवान् के उद्देश्य से एक ब्राह्मण को निमन्त्रण देवे इसप्रकार नव ब्राह्मणों को वरे अथवा पिता आदि के निमित्त एक ब्राह्मण मातामह आदि के उद्देश्य से एक ब्राह्मण विश्वेदेवों के निमित्त एक और विष्णु भगवान् के उद्देश्य से एक ब्राह्मण वरे इस प्रकार चारही ब्राह्मणों को वरे परन्तु ब्राह्मण वेदवेत्ता कुलीन और सदाचार होने चाहियें दुःशील ब्राह्मणों को वरनेवाला श्राद्ध का घातक होता है जो पुरुष आश्विनकृष्णपक्ष में श्रद्धा से महालयश्राद्ध करे वह सब तीर्थों के स्नान का फल अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने का फल तुलापुरुष आदि महादान करने का फल चान्द्रायण आदि व्रत करने का फल सांग चारो वेदों के पारायण का फल गायत्री आदि महामन्त्रों के जप का फल और इतिहास पुराण आदि के श्रवण का फल पाता है महालयश्राद्ध के तुल्य कोई पुण्यकर्म नहीं है महालयश्राद्ध करने से विष्णुलोक ब्रह्मलोक और शिवलोक की प्राप्ति होती है महालयश्राद्ध नित्य है और काम्य भी है इसीसे उसके न करने से प्रत्यवाय होता है और करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं महालय श्राद्ध करने से भूत, वेताल, अपस्मार, ग्रह, शाकिनी, डाकिनी, राक्षस, पिशाच, वेताल और भी अनेक भूत तत्क्षण नाश को प्राप्त होते हैं और बहुत सम्पत्ति मिलती है महालयश्राद्ध करने से राजादशरथ ने रामचन्द्र आदि चार पुत्र पाये और उत्तम कीर्ति भी पाई ययाति राजा ने भी महालयश्राद्ध के प्रभाव से यदु आदि उत्तम २ पुत्र और स्वर्ग में वास पाया

दुष्यन्त राजा ने महालयश्राद्ध कर भरतनामक पुत्र पाया राजा नल महालयश्राद्ध के प्रभाव से बड़ी विपत्ति से छूट फिर राज्य को प्राप्त हुआ और अपने शत्रु कलियुग और पुष्कर का निग्रह किया और इन्द्रसेन नामक उत्तम पुत्र पाया हरिश्चन्द्र राजा भी महालयविधान से विश्वामित्र के दिये हुये घोर दुःख से टरा और फिर भी अपनी भार्या चन्द्रवती और पुत्र रोहिताश्व पाये और अठारह द्वीप का प्रभु हुआ दण्डकारण्य में महालयश्राद्ध कर रामचन्द्रजी ने रावण को मारा और सीता पाई राजा युधिष्ठिर ने महालयश्राद्ध के प्रभाव से सब शत्रु मारे वशिष्ठ, अत्रि, भृगु, कुत्स, गौतम, अङ्गिरा, कश्यप, भरद्वाज, विश्वामित्र, अगस्त्य, पराशर, मार्कण्डेय आदि मुनि महालयश्राद्ध करने से अणिमा आदि आठ सिद्धियों को प्राप्त हो जीवन्मुक्त हुये इसलिये कल्याण की इच्छावाले पुरुषों को अवश्यही महालयश्राद्ध करना चाहिये जो महालयश्राद्ध न करे उसको भूत वेताल आदि से भय होता है इतना कह दत्तात्रेयजी बोले कि हे दुराचार! कुशस्थल नाम ग्राम में वेदनिधि ब्राह्मण था उसने महालयश्राद्ध न किया इसलिये पितरों के शाप से वेताल हुआ वही वेताल तेरे शरीर में आविष्ट हुआ था हे दुराचार! महालयश्राद्ध कर और ब्राह्मणों को षट्रसभोजन कराये तो तू सदा सुखी रहेगा और कभी दरिद्री न होगा और आज से कभी महापातकी पुरुष का संग मत करना एक बार करने से तैंने बड़ा दुःख भोगा अब तू हमारी आज्ञा से अपने देश को जा यह दत्तात्रेय मुनि की आज्ञा पाय दुराचार प्रसन्न हो अपने देश को गया और अपने घर में जाय गृहस्थाश्रम के धर्म सेवन करनेलगा फिर उसने कभी महापातकी का संसर्ग नहीं किया और रामचन्द्र के धनुष्कोटि में स्नान करने के प्रभाव से अन्त में मुक्त हुआ इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह दुराचार के मुक्त होने का वृत्तान्त हमने वर्णन किया धनुष्कोटि सब पातक हरने में समर्थ है जहां स्नान करने से दुराचार मुक्त हुआ धनुष्कोटि के प्रभाव को कौन वर्णन करसक्ता है जिन पापों का प्रायश्चित्त नहीं है और किसी प्रकार से भी जे महापातक निवृत्त नहीं

होसके वे सब धनुष्कोटि में स्नान करतेही बिलाय जाते हैं शूद्र करके स्थापित शिवलिङ्ग और विष्णुमूर्ति को जो प्रणाम करे उस पाप का कहीं प्रायश्चित्त नहीं लिखा धनुष्कोटि में स्नान करने से वह पाप भी निवृत्त होजाताहै ब्राह्मण का निन्दक, विश्वासघाती, कृतघ्न, भ्रातृस्त्रीगामी, शूद्रान्न-भोजी, वेदनिन्दक, कन्याविक्रयी, घोड़े गौ देवमूर्ति धर्म तीर्थ फल आदि बेचनेहारे, मातृपितृद्रोही, संन्यासियों से द्रोह करनेहारे, शिव, विष्णु, गुरु, ब्राह्मण, यती आदि के निन्दक और सत्कथामें दूषण लगानेहारे मनुष्यों के शुद्ध होने के लिये कोई प्रायश्चित्त नहीं कहा परन्तु वे भी धनुष्कोटि में स्नान करने से शुद्ध होजाते हैं हे मुनीश्वरो! यह धनुष्कोटि का वैभव हमने वर्णन किया जिसके श्रवण करने से मनुष्य मुक्त होजाता है॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां द्विजदुराचारकथानकंनाम षट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

क्षीरकुण्ड का माहात्म्य और मुद्गलमुनि की कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! चक्रतीर्थ से लेकर धनुष्कोटि पर्यन्त चौबीस तीर्थों का हमने माहात्म्य वर्णन किया अब आप क्या श्रवण किया चाहते हैं यह सूतजी का वचन सुन नैमिषारण्यवासी शौनक आदि मुनि बोले कि हे सूतजी! आपने पहिले कहा था कि क्षीरकुण्ड के समीप चक्रतीर्थ है सो चक्रतीर्थ का माहात्म्य तो श्रवण किया अब आप क्षीरकुण्ड का माहात्म्य विस्तार से वर्णन करें और क्षीरकुण्ड के नाम का कारण भी कहें यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! जो आपने पूछा उसका हम वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवण करें देवीपत्तन से पश्चिमदिशा में थोड़ी दूरपर पुलग्राम नाम पुण्यक्षेत्र है जहां से रामचन्द्रजी ने सेतुका आरम्भ किया उसी स्थान में क्षीरकुण्ड है जिस के ध्यान करने से दर्शन से और स्पर्श से मनुष्य के पातक निवृत्त होते हैं पूर्वकाल में नारायण की प्रीति के लिये मुद्गलमुनि ने पुलग्राम में यज्ञ किया तब प्रसन्न हो विष्णुभगवान् प्रकट हुये कि नीलमेघ के समान

जिनका वर्ण पीताम्बर पहिने शंख, चक्र, गदा, पद्म धारे कौस्तुभमणि करके शोभित भक्तों को आनन्द देनेहारे और वामाङ्ग में लक्ष्मी करके शोभित थे उनको देख भक्ति से मुद्गलमुनि स्तुति करनेलगे॥

मुद्गल उवाच॥ प्रथमं जगतः स्रष्ट्रे पालकाय ततः परम्॥ संहर्त्रे च ततः पश्चान्नमो नारायणाय ते॥ १॥ नमः शङ्कररूपाय कमठाय चिदात्मने॥ नमो वराहवपुषे नमः पञ्चास्यरूपिणे॥ २॥ वामनाय नमस्तुभ्यं जमदग्निसुताय ते॥ राघवाय नमस्तुभ्यं बलभद्राय ते नमः॥ ३॥ कृष्णाय कल्कये तुभ्यं नमो विज्ञानरूपिणे॥ रक्ष मां करुणासिन्धो नारायण जगत्पते॥ ४॥ निर्लज्जं कृपणं क्रूरं पिशुनं दाम्भिकं शठम्॥ परदारपरद्रव्यपरक्षेत्रैकलोलुपम्॥ असूयाविष्टमनसं मां रक्ष कृपया हरे॥ ५॥

यह मुद्गलमुनि के मुख से स्तुति सुन प्रसन्न हो भगवान् कहनेलगे कि हे मुद्गल! हम तेरी भक्ति स्तुति से प्रसन्न होकर यज्ञभाग ग्रहण करने को साक्षात् आये हैं यह भगवान् का वचन सुन प्रसन्न हो मुद्गलमुनि ने प्रार्थना की कि हे महाराज! आज मेरा जन्म, तप, वंश और शरीर सफल हुआ जो आप मेरे यज्ञ में हवि ग्रहण करने के लिये साक्षात् आये जिनको योगी पुरुष ध्यान से देखते हैं उनका मैं साक्षात् दर्शन कररहाहूं इसप्रकार प्रार्थनाकर मुद्गलमुनि ने पाद्य, अर्घ्य, आचमन, आसन, चन्दन, पुष्प आदि से भगवान् का पूजनकर पुरोडाश आदि हवि उनको अर्पण किया भगवान् ने भी उस हवि को अपने हाथ से ग्रहण कर भक्षण कियां भगवान् के हवि भक्षण करने से अग्नि सहित सब देवता, ब्राह्मण, ऋत्विक्, यजमान और सम्पूर्ण चराचर जगत् तृप्त होगये भगवान् ने कहा कि हे मुद्गल! हम प्रसन्न हैं वर मांग तब मुद्गल ने प्रार्थना की कि हे महाराज! आपने मेरे यज्ञ में हवि ग्रहण किया इसी से मैं कृतार्थ हूं तो भी यह चाहता हूं कि आपके चरणारविन्द में निष्कपट और निश्चल मेरी भक्ति

होनी चाहिये और यह भी मेरी इच्छा है कि सायंकाल और प्रातःकाल गौ के दुग्ध से आपकी प्रीति के लिये हवन किया करूं वेद में दोनों काल दुग्ध करके हवन करना लिखा है और मुझसरीखे निर्धन तपस्वी के पास गौ कहां से आवे यह मुद्गल का वचन सुन भक्तवत्सल श्रीविष्णुभगवान् ने विश्वकर्मा को बुलाकर एक उत्तम सरोवर बनवाया और स्फटिक आदि उत्तम पाषाणों का प्राकार उसके चारो ओर बनवाया और कामधेनु को बुलाकर भगवान् ने आज्ञा दी कि हे सुरभि ! यह हमारा भक्त मुद्गलमुनि हमारी प्रीति के लिये हवन किया चाहता है इसलिये दोनों काल आयकर इस सरोवर को दुग्ध से भर दे उसी दुग्ध से यह हवन किया करेगा कामधेनु ने भगवान् की यह आज्ञा अङ्गीकार की तब भगवान् ने मुद्गल से कहा कि हे मुद्गल ! इस सरोवर से कामधेनु का दुग्ध नित्य लेकर हमारी प्रसन्नता के लिये सायंकाल और प्रातःकाल हवन कियाकर जिससे हमारी प्रसन्नता होय हमारी प्रसन्नता होनेसे तुझे सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त होंगी और यह क्षीरसर नाम तीर्थ होगा जिसमें स्नान करने से पातक महापातक सब निवृत्त होजायँगे और हे मुद्गल ! तू भी देह के अन्त में हमारे समीप प्राप्त होगा इतना कह मुद्गलको आलिङ्गनकर विष्णुभगवान् अन्तर्धान होगये मुद्गल ने भी सैकड़ों वर्ष उस सरोवर से दुग्ध लेकर हवन किया और अन्त में मुक्ति पाई इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ! यह क्षीरसर की उत्पत्ति हम ने कही यह तीर्थ सब लोकमें प्रसिद्ध है कश्यपमुनि की पत्नी कद्रू ने छल से अपनी सपत्नी विनता को जीता इससे इसको बड़ा पाप लगा तब कश्यपजी की आज्ञा से कद्रू ने क्षीरसरोवर में स्नान किया तब वह पाप निवृत्त हुआ इस तीर्थ में जो पुरुष स्नान करें उनको यज्ञ, दान तप, तीर्थसेवन, वेदपाठ आदि कर्मों से कुछ प्रयोजन नहीं क्षीरकुण्ड का पवन जिसके देह में लगे वह ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है और वहां बहुत काल निवास करके मुक्ति पाता है क्षीरकुण्ड में स्नान करनेहारे पुरुष अग्नि के तुल्य देदीप्यमान हो २ कर यमराज के भी मस्तकपर विराजमान होते हैं और सब नरक उनके लिये व्यर्थ होजाते हैं और वैतरणी नदी

भी शीतल होजाती है क्षीरकुण्ड को छोड़ और तीर्थ में जाना गोदुग्ध को छोड़ अर्कदुग्ध के लिये भटकने के तुल्य है क्षीरकुण्ड में स्नान करनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं मुक्ति भी हाथपर ही धरी है यह हम भुजा उठाकर सत्य कहते हैं कभी इस बात में सन्देह मत करो जो इस अध्याय को भक्ति से पढ़े वह क्षीरकुण्ड के स्नान के फल को प्राप्त होता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां क्षीरकुण्डमाहात्म्यमुद्गलमुनिकथानं नाम सप्तत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

विनता कद्रू की कथा और गरुड़ का विचित्र इतिहास क्षीरकुण्ड का माहात्म्य ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी! कद्रू कौन थी और उसने अपनी किस सखी को छलसे जीता क्या छल किया और फिर किस प्रकार क्षीरकुण्ड में स्नान कर निष्पाप हुई ? यह आप कृपाकर वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! प्रजापति की कन्या विनता और कद्रू दोनों कश्यप की भार्या थीं विनता के पुत्र अरुण और गरुड़ हुये कद्रू के पुत्र वासुकि अनन्त आदि हज़ारों सर्प हुये एक दिन कद्रू और विनता ने इन्द्र के घोड़े उच्चैःश्रवा को देखा तब कद्रू ने कहा कि हे विनते ! इस घोड़े के बाल नीले हैं कि श्वेत तब विनता बोली कि हे कद्रू ! मुझे तो इसके बाल श्वेत देखपड़ते हैं कद्रू ने कहा कि जो इसके श्वेत बाल होयँ तो मैं तेरी दासी बनूं और नील होयँ तो तू मेरी दासी होगी यह प्रण दोनों ने किया कद्रू ने सर्पों को बुलाकर सब बात कही और अपने पुत्र वासुकि आदिकों से यह कहा कि तुम उच्चैःश्रवा के श्वेत बालों को आच्छादन करो जिससे मुझे विनता की दासी न बनना पड़े यह बात सर्पोंने अङ्गीकार न की तब कद्रू ने क्रोध कर उनको शाप दिया कि जनमेजय के यज्ञ में तुम्हारा नाश होगा यह शाप सुन व्याकुल हो कर्कोटक नाग ने कद्रू से कहा कि हे मातः ! मैं उच्चैःश्रवा को कृष्णवर्ण करदूंगा तू कुछ भय मत कर यह कह कर्कोटक नाग उच्चैःश्रवा के लिपटगया उसकी देहकान्ति से उच्चैःश्रवा का रङ्ग नील अञ्जन के समान होगया तब कद्रू विनता को

संग ले उच्चैःश्रवा को देखने चली और चन्द्र ऐरावत आदि रत्नों के उत्पत्ति स्थान समुद्र को लङ्घन कर इन्द्र के वाहन उच्चैःश्रवा के समीप पहुँची वहां देखा कि उच्चैःश्रवा का रङ्ग काला है तब विनता बहुत व्याकुल हुई कद्रू ने उसको अपनी दासी बनालिया इतने में विनता का पुत्र गरुड़ भी अण्डे को फोड़ पर्वत के समान और अग्निज्वाला के तुल्य देदीप्यमान निकला गरुड़ का रूप देख तीनों लोक भयभीत होगये देवता स्तुति करनेलगे तब गरुड़ ने अपने उस भयंकररूप को त्यागदिया और अपने बड़ेभाई अरुण को पीठपर चढ़ाय गरुड़ अपनी माता के समीप पहुँचा कद्रू ने विनता से कहा कि हे दासी! मैं पाताल को जाया चाहती हूं इसलिये तू मुझे उठा ले और तेरा पुत्र गरुड़ मेरे पुत्र नागों को उठाके ले चले विनता ने यह बात गरुड़ से कही गरुड़ ने माता की आज्ञा अङ्गीकार की और सब सर्पों को पीठपर चढ़ाकर उड़ा कद्रू विनतापर चढ़कर चली गरुड़ बहुत ऊंचा उड़ा इसलिये सूर्य के तेज से सर्प दग्ध होनेलगे तब कद्रूने इन्द्र की स्तुति की इन्द्र ने वृष्टि करके सर्पों का ताप शान्त किया गरुड़ भी क्षणमात्र में नागलोक में जा पहुँचा वहां सर्पों ने फिर गरुड़ से कहा कि हे दासीपुत्र! हम द्वीपान्तर देखने जाया चाहते हैं इसलिये शीघ्रही हमको उठा ले चल तब गरुड़ ने अपनी माता विनता से पूछा कि हे मातः! मैं सर्पों को उठाये फिरता हूं और तू कद्रू का वाहन हो रही है और सर्प मुझे बारबार दासीपुत्र कहते हैं इसमें क्या कारण है? यह सब तू मुझे यथार्थ बता दे तब विनता ने कहा कि हे पुत्र! मुझ को कद्रू ने छल से जीतकर अपनी दासी बनाया इससे तुझे दासीपुत्र कहते हैं और इसीकारण मैं और तू इन के वाहन बनरहे हैं यह सब वृत्तान्त विनता के मुख से सुनकर गरुड़ने पूछा कि हे मातः! इस दासपने से हम क्योंकर छूटें तब विनता ने कहा कि हे पुत्र! सर्पों से और कद्रू से पूछ गरुड़ ने सर्पों से पूछा कि मेरी माता दासभाव से क्योंकर छूट सकी है सर्पों ने कहा कि हे गरुड़! स्वर्ग से जो तू हमको अमृत लादेवे तो आजही तेरी माता को छोड़ देवें यह सुन गरुड़ अपनी माता के समीप आया और कहनेलगा कि हे मातः!

में देवताओं से अमृत लेने को जाता हूं कुछ मुझे खाने को दे विनता ने कहा कि हे पुत्र! समुद्र में एक समूह म्लेच्छों का रहता है उनको तू भक्षणकर और अमृत लेआ उन म्लेच्छों में एक ब्राह्मण भी एक म्लेच्छ स्त्री में अनुरक्त होकर रहता है उसको मत भक्षण करना उसके भक्षण करने से कण्ठ में दाह होगा हे पुत्र! शीघ्र जाकर अमृत लेआ इन्द्र आदि देवता तेरे अङ्गों की रक्षा करें गरुड़ भी माता से बिदा हो समुद्र में पहुँचा और पर्वत की कन्दरा के समान अपना मुख फैलाय म्लेच्छों को भक्षण करनेलगा उनके साथ वह ब्राह्मण भी गरुड़ के मुख में आगया परन्तु कण्ठदाह होने से गरुड़ ने जाना और उस ब्राह्मण से कहा कि हे ब्राह्मण! है तो तू पातकी परन्तु ब्राह्मण होने से अवध्य है इसलिये मेरे मुख से निकलजा ब्राह्मण ने कहा कि मेरी स्त्री भी निकले तो मैं निकलूं उसके विना मैं क्षणभर भी नहीं रहसक्ता गरुड़ ने ब्राह्मण को और उसकी स्त्री को भी अपने मुख से निकालदिया ब्राह्मण अपनी स्त्री समेत वहां को चला गया और गरुड़ भी सब म्लेच्छों को भक्षणकर अपने पिता कश्यप जी के समीप आया कश्यपजी ने पूछा कि हे पुत्र! कहां जाता है गरुड़ ने कहा कि हे महाराज! माता का दासीभाव निवृत्त करने के लिये अमृत लेने जाता हूं बहुत से म्लेच्छ भक्षण करके भी मुझे तृप्ति नहीं हुई क्षुधा के मारे प्राण जाते हैं इसलिये मुझे कुछ भोजन आप बतावें उस भोजन के करने से मैं अमृत लाने को समर्थ होजाऊंगा यह गरुड़ का वचन सुन कश्यपजी बोले कि हे पुत्र! पूर्वकाल में विभावसु नाम एक मुनि था और उसका छोटा भाई सुप्रतीक नाम था उन दोनों ने आपस में विवादकर परस्पर शाप दिया उस शाप से सुप्रतीक तो छहयोजन ऊंचा हाथी होगया और विभावसु दशयोजन चौड़ा और तीनयोजन ऊंचा कूर्म अर्थात् कछुवा होगया वे दोनों इस सरोवर में पूर्व वैर को स्मरण करते हुये अब भी युद्ध करते हैं उन दोनों को तू भक्षण करले गरुड़ भी पिता की आज्ञा पाय वहां गया और उन दोनों को अपने पञ्जों में उठाय ले उड़ा और विलम्ब नाम तीर्थपर गया वहां एक पुराना वटवृक्ष था उसने

गरुड़ से कहा कि हे गरुड़ ! तू मेरी शाखापर बैठकर इनको भक्षण कर ले वटवृक्ष का यह वचन सुन गरुड़ उसकी शाखापर बैठा गरुड़ के बैठतेही भार से वह शाखा टूटी उसमें साठहज़ार बालखिल्य ऋषि तप करने को लटक रहे थे गरुड़ ने देखा कि शाखा भूमिपर गिरेगी तो इनको क्लेश होगा इसलिये गरुड़ अपनी चोंच में उस शाखा को भी लेउड़ा तब गरुड़ से कश्यपजी ने कहा कि हे पुत्र ! निर्जनवन में जाकर इस शाखा को रख दे गरुड़ ने भी पिता की आज्ञा से निर्जनवन में जाय वह शाखा रक्खी और हाथी तथा कच्छप को भक्षण किया इस अवसर में स्वर्ग के बीच उत्पात होनेलगे तब इन्द्र ने बृहस्पति से पूछा कि हे देवगुरो ! उत्पात क्यों होते हैं? तब बृहस्पति कहनेलगे कि हे देवराज ! पूर्वकाल में कश्यपमुनि ने यज्ञ करना चाहा तब अंगुष्ठ प्रमाण बालखिल्य ऋषियों को यज्ञ की सामग्री इकट्ठी करने के लिये भेजा मार्ग मं गौ के खुरके गढ़े में जल भरा था, उसमें वे डूबनेलगे उनको देख तुमने हास्य किया तब क्रोधकर उन्हों ने यज्ञाग्नि में इस कामना से हवन किया कि कश्यप के ऐसा पुत्र होय जो इन्द्र को भय देवे वह कश्यप का पुत्र गरुड़ हुआ है और अब अमृत हरने के लिये यहां आता है इससे ये दारुण उत्पात होते हैं यह बृहस्पति का वचन सुन इन्द्रने सब देवताओं को बुलाकर कहा कि गरुड़ अमृत हरने आता है तुमसे रक्षा कीजाय तो करो यह इन्द्र का वचन सुन अस्त्र शस्त्र धारण कर सब देवता अमृत की रक्षा करनेलगे इतने में गरुड़ भी वहां आय पहुँचा उसको देख सब देवता भय से कांपउठे देवताओं के साथ गरुड़ का युद्ध होनेलगा गरुड़ ने अपनी चोंच से देवताओं को भेदन किया देवताओं ने भी गरुड़ को शस्त्रों से बहुत पीड़ा दी तब गरुड़ ने अपने पंखों के पवन से देवताओं को उड़ाकर दूर फेंकदिया देवता बड़ा क्रोधकर गरुड़ के ऊपर बाण, भिन्दिपाल, तोमर आदि शस्त्रों की वर्षा करनेलगे गरुड़ ने अपने पंखों से इतनी धूलि उड़ाई कि देवताओं के नेत्र फूटने लगे तब देवताओं ने वायु करके उस धूलि को शान्त किया और गरुड़ ने भी वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत आदि देवताओं को अपने तीखे नख

और चोंच से घायल किया तब देवता भागगये गरुड़ अमृत के समीप चला तो देखा कि अमृत के चारो ओर प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित होरहा है तब गरुड़ ने हज़ार चोंच करली और बड़ी २ नदियों को चोंचों में भर २ उस अग्नि को बुझाया आगे जाकर देखा तो बड़ा तेजस्वी और तीखी धारवाला चक्र अमृत के चारो ओर भ्रमता है तब गरुड़ ने छोटी देह किया और चक्र के बीच से निकलकर पार होगया आगे देखा तो दो सर्प अमृत की रक्षा करते हैं जिनकी दृष्टि सेही सब भस्म होजायँ गरुड़ ने अपने पंख और चोंच से उन सर्पों को मूर्च्छित करदिया और अमृत के घट को लेकर उड़ा तब विष्णुभगवान् ने कहा कि हे गरुड़! तेरा पराक्रम देख हम बहुत प्रसन्न हुये वर मांग गरुड़ ने कहा कि तुम्हारे ऊपर मेरी स्थिति होय और अजर अमर होजाऊं और तुम को जो वर चाहिये वह मुझ से भी मांगो तब विष्णुभगवान् ने कहा कि हमारे वाहन तुम हो जावो गरुड़ ने भी यह बात अङ्गीकार की विष्णुभगवान् ने गरुड़ को वर दिया अपने रथ की ध्वजापर स्थापन किया और वाहन भी बनाया इन्द्र ने देखा कि गरुड़ अमृत को लिये जाता है तो बड़ा क्रोधकर वज्र मारा परन्तु गरुड़ ने हँसकर कहा कि हे इन्द्र! तेरे वज्र प्रहार से मुझे कुछ भी व्यथा न हुई परन्तु तेरे आदर के लिये एक पंख मैं अपना गिरायेदेता हूं यह कह गरुड़ने एक छोटा सा पर डालदिया उस सुन्दर पर को देख देवताओं ने गरुड़ का नाम सुपर्ण रक्खा गरुड़ ने कहा कि हे इन्द्र! तीनों लोक को मैं उठा सक्ता हूं और हज़ार इन्द्र भी आवें तो मेरा क्या कर सक्ते हैं? यह गरुड़ का वचन सुन इन्द्र ने कहा कि हे गरुड़! तू अमृत को क्या करेगा हम को देदे जिन सर्पों को तू अमृत दिया चाहता है वे अमृतपान कर अजर अमर होजायँगे तो देवताओं को और सब जगत् को पीड़ा देंगे यह सुन गरुड़ ने कहा कि हे इन्द्र! जहां मैं इस अमृत को स्थापन करूं वहां से तुम हर लाना गरुड़ का यह वचन सुन प्रसन्न हो इन्द्र ने कहा कि हे गरुड़! तुम से हम प्रसन्न हैं वर मांग तब गरुड़ ने कहा कि हे इन्द्र! जिन सर्पों ने मेरी माता को छल से दासी बनाया वे मेरे भक्ष्य होयँ इन्द्र ने

गरुड़ को यही वर दिया गरुड़ अमृत लेकर चला इन्द्र उसके पीछे २ गये गरुड़ ने माता के समीप पहुँच सर्पों से कहा कि यह अमृत मैं ले आया हूं और कुशों के ऊपर इस अमृतघट को रखता हूं तुम भी स्नानकर पवित्र हो इस अमृत को पान करना अब मेरी माता को छोड़ दो सर्प भी अमृतघट देख प्रसन्न होगये और गरुड़ की माता विनता को छोड़ दिया और आप सब स्नान करने गये इस अवसर में इन्द्र आकर अमृत को उठा ले गये इतने में सर्प भी स्नानकर आये तो देखा कि अमृत नहीं है तब उन कुशों को चाटनेलगे जिन पर अमृतघट रक्खा था कुशों के चाटने से सर्पों की जिह्वा चीरी गई उसी दिन से सर्प द्विजिह्व कहाये और अमृत के स्पर्श होने से कुश भी पवित्र मानेगये इसप्रकार अपनी माता को दासी-भाव से छुटाय गरुड़ ने कद्रू को शाप दिया कि तैंने मेरी माता को छल से दासी बनाया इसलिये तू पति की सेवा के योग्य न होगी यह शाप देकर गरुड़ चलागया कद्रू और विनता दोनों कश्यपजी के समीप गईं कद्रू को देख कश्यपजी क्रोधकर बोले कि हे कद्रू ! तैंने छल से विनता को जीता इसलिये हमारी सेवा के योग्य तू नहीं है जो स्त्री पुरुष छल से जीते वह महापातकी होता है और उसके साथ भाषण करने से भी पातक लगता है इसलिये तेरे साथ सम्भाषण करने से हम भी पातकी होजायँगे छली मनुष्य जिस पंक्ति में भोजन करे वह पंक्ति नरक को जाती है छली पुरुष का मुख देख सूर्य जल अथवा अग्नि को देखे तब शुद्ध होता है छली पुरुष के समीप रहने से अवश्य नरक में वास होता है इसलिये हे दुष्टे ! शीघ्र ही हमारे आश्रम से चलीजा इतना कह कश्यपजी ने विनता को अङ्गीकार करलिया कद्रू भी पति का यह रूक्ष वचन सुन रोती हुई उन के चरणों पर गिरी परन्तु कश्यपजी ने उसका अपराध क्षमा नहीं किया तब विनता ने प्रार्थना की कि हे महाराज ! आप इस मेरी बहिन का अप-राध क्षमा करें इसने भूल से यह अपराध किया इसलिये आपको कृपाकर क्षमा ही करना चाहिये साधु पुरुष दयालु होते हैं यह विनता का वचन सुन कश्यपजी बोले कि हे विनते ! तेरी शपथ खाकर कहते हैं कि जब

तक यह दुष्टा इस पातक का प्रायश्चित्त न करेगी हम ग्रहण न करेंगे तब विनता ने फिर प्रार्थना की कि हे महाराज ! आपही प्रायश्चित्त बतावें जिससे यह आपकी सेवा के योग्य होय तब क्षणमात्र ध्यानकर कश्यपजी ने कहा कि दक्षिणसमुद्र के तीर फुल्लग्राम के समीप क्षीरसरोवर नाम तीर्थ है वहां जाकर यह स्नान करे तब शुद्ध होगी और चाहे हजार प्रायश्चित्त करे तो भी शुद्ध नहीं होसक्ती यह पति का वचन सुन अपने पुत्रों को संग लेकर कद्रू क्षीरसरोवर को चली और कुछ दिनों में वहां पहुँच उपवास कर संकल्पपूर्वक तीन दिन स्नान किया चौथे दिन स्नान करनेलगी तब आकाशवाणी हुई कि हे कद्रू ! इस तीर्थ के प्रभाव से तू छलदोष से निवृत्त हुई और गरुड़ का शाप भी जाता रहा अब जाकर पति की शुश्रूषा कर पति भी तुझे ग्रहण करेगा यह आकाशवाणी सुन प्रसन्न हो तीर्थ की प्रदक्षिणा कर अपने पुत्रों समेत कद्रू कश्यपजी के समीप आई कश्यपजी ने भी उसको शुद्ध जान अङ्गीकार किया इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! यह क्षीरकुण्ड का प्रभाव हमने वर्णन किया जो इस अध्याय को पढ़े अथवा सुने वह क्षीरकुण्ड के स्नान फल को प्राप्त होता है और अश्वमेधआदि यज्ञ करने का सहस्र गोदान का और गङ्गा आदि तीर्थों में स्नान करने का फल पाय उत्तम गति पाता है॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां विनताकद्रूकथानकगरुडोतिहासनिरूपणं नामाष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

कपितीर्थ का माहात्म्य और रम्भा अप्सरा की कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अब हम कपितीर्थ का माहात्म्य वर्णन करते हैं वह तीर्थ लोकों के कल्याण के लिये वानरों ने बनाया है रावण को मार गन्धमादनपर्वत में जब हनुमान् आदि वानर आये तब उन्होंने यह तीर्थ बनाया उसमें सबने स्नान किया और तीर्थ को यह वर दिया कि इस तीर्थ में जो पुरुष स्नान करें वे सब पातकों से छूट मुक्ति पावें और उनको नरक दारिद्य आदि का भय नहीं होवे जो यह विचार करे कि

मैं कपितीर्थ को जाऊंगा और इस निमित्त सौ क़दम भी चले वह सद्गति पावे यह वर देकर सब वानरों ने रामचन्द्रजी से प्रार्थना की कि आप भी इस हमारे तीर्थ को उत्तम वर देवें तब अपने भक्त वानरों की प्रार्थना सफल करने के लिये रामचन्द्रजी ने वर दिया कि इस तीर्थ में स्नान करने से गङ्गा प्रयाग आदि तीर्थों के स्नान का फल गोसहस्रदान अग्निष्टोम आदि यज्ञ गायत्री आदि मन्त्रों के जप चारो वेद के पारायण और शिव विष्णु आदि देवताओं के पूजन का फल प्राप्त होगा रामचन्द्रजी के यह वर देने के अनन्तर शिव, ब्रह्मा, इन्द्र यम, वरुण, कुबेर, वायु, चन्द्रमा, आदित्य, निर्ऋति, साध्य, वसु, विश्वेदेव आदि सब देवता सनकआदि योगी ...द आदि देवर्षि अत्रि, भृगु, कुत्स, गौतम, पराशर, कण्व, अगस्त्य, सुतीक्ष्ण, विश्वामित्र आदि सब मुनीश्वर उस तीर्थ की प्रशंसा करने लगे और सबों ने भक्ति से उस कपितीर्थमें स्नान किया और सबों ने यह कहा कि यह कपितीर्थ सब लोक में प्रसिद्ध होगा इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! मोक्ष की इच्छावाले पुरुषों को अवश्यही कपितीर्थ में स्नान करना चाहिये इस तीर्थ का माहात्म्य हम कहांतक वर्णन करें विश्वामित्र मुनिके शाप से शिला हुई रम्भा इस तीर्थ के प्रभाव से फिर अपने रूप को प्राप्त हुई यह सुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी! रम्भाको विश्वामित्रमुनि ने क्यों शाप दिया और शिला होकर कपितीर्थ में क्योंकर पहुँची यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! पूर्वकाल में कुशिकवंश के बीच विश्वामित्र नाम एक राजा हुआ है वह एक समय बहुतसी सेना साथ ले अपने राज्य को देखने निकला बहुत देश देखताहुआ वशिष्ठजीके आश्रम में पहुँचा वशिष्ठजी ने भी कामधेनु के प्रभाव से राजा का और उसकी सेना का भलीभांति सत्कार किया भांति २ के भोजन सबको कराये कामधेनु का प्रभाव देख राजा विश्वामित्र ने वशिष्ठजी से कामधेनु की याचना की परन्तु वशिष्ठजी ने कामधेनु न दी तब राजा ने बलात्कार से कामधेनु को हरना चाहा परन्तु कामधेनु के शरीर से इतने म्लेच्छगण उत्पन्न हुये कि उन्होंने विश्वामित्र की सेना का संहार किया तब राजा विश्वामित्र वशिष्ठजी से पराजित हो

हिमालय में जाय तप करनेलगा और शिवजी को प्रसन्नकर उन से सब अस्त्र पाये फिर वशिष्ठजी के आश्रम में आय राजा विश्वामित्र वशिष्ठजी पर अस्त्र छोड़नेलगा परन्तु वशिष्ठजी ने अपने ब्रह्मदण्ड करके सब अस्त्रों को निष्फल करदिया तब विश्वामित्र बहुत लज्जित हुआ और ब्राह्मण बनने के लिये तप करने में प्रवृत्त हुआ पूर्व आदि तीन दिशाओं में जहां तप करनेलगा वहांहीं विघ्न हुआ तब उत्तरदिशा में हिमालयपर्वत के बीच कौशिकी नदी के तटपर तप करनेलगा निराहार जितेन्द्रिय और जितश्वास होकर दिव्य हज़ार वर्षपर्यन्त तप किया ग्रीष्मऋतु में पञ्चाग्नि तापता शिशिर ऋतु में जलशय्या में सोता और वर्षाऋतु में निरावरणस्थान में रहता इस प्रकार ऊपर को भुजा उठाय एक हज़ार दिव्य वर्ष तक अत्युग्र तप विश्वामित्र ने किया तब देवता बहुत व्याकुल हुये और सब ने रम्भा को बुलाकर कहा कि हे रम्भे ! हिमालयपर्वत में जाकर विश्वामित्र को अपने कटाक्षों से मोहितकर जिस प्रकार उसके तप में विघ्न होय ऐसा उपाय कर यह देवताओं का वचन सुन हाथ जोड़ भय से कांपती हुई रम्भा कहनेलगी कि हे महाराज ! विश्वामित्रमुनि महाक्रूर है वह मुझे अवश्यही शाप देगा इसलिये आप सब मुझे ऐसे क्रूरकर्म में आज्ञा न देवें मैं आपकी दासी हूं मेरी रक्षा करें यह रम्भा का वचन सुन इन्द्र ने कहा कि हे रम्भे ! भय मतकर तेरी सहाय के लिये वसन्त और कामदेव को साथ ले मैं भी आता हूं तू चलकर अपने रूप से विश्वामित्र को वशकर रम्भा इन्द्रकी आज्ञा पाय विश्वामित्र के आश्रमको गई वहां जाय विश्वामित्र के सम्मुख खड़ी होकर हाव भाव करनेलगी और वसन्तऋतु चारोंओर छागया कोकिल मीठे २ शब्द बोलनेलगे यह सब देख विश्वामित्र के मन में संशय हुआ फिर योगबल से जाना कि यह सब कर्म इन्द्रका है और रम्भाको देख विश्वामित्र मुनि ने कहा कि हे रम्भे ! तू हमारे तप में विघ्न करने आई है इसलिये शिला होजा और बहुत कालतक शिलाभाव को प्राप्त होकर एक ब्राह्मण करके इस शाप से मुक्त होगी इतना कहतेही रम्भा शिला होगई विश्वामित्र मुनि भी बहुत काल तपकर वशिष्ठजी के वाक्य से ब्राह्मण हुये और रम्भा को

भी शिला हुये बहुत काल व्यतीत हुआ उसी आश्रम में अगस्त्यमुनिका शिष्य श्वेतमुनि मोक्ष की इच्छा से तप करनेलगा उसके तप में एक अङ्गारका नाम राक्षसी नित्य विघ्न करती मूत्र विष्ठा आदि लाकर आश्रम में डालदेती और अनेकप्रकार के उपद्रव करके नित्यही मुनि को त्रास देती एक दिन श्वेतमुनि ने क्रोधकर वह शिला जो रम्भा होगई थी उठाई और वायव्यास्त्र मन्त्र पढ़ उस राक्षसी पर चलाई आगे २ राक्षसी और पीछे २ शिला सब दिशाओं में घूमती अन्त में राक्षसी व्याकुल हो दक्षिण समुद्र के तीर कपितीर्थ में घुसी परन्तु वह शिला भी उसके ऊपर तीर्थ में गिरी गिरतेही वह राक्षसी चूर्ण होगई और शिला भी तीर्थ का जल स्पर्श होतेही रम्भा होगई और उसके ऊपर देवताओं ने पुष्पवृष्टि की इतने में आकाश से विमान आया रम्भा भी वस्त्र भूषणआदि से अलंकृत हो उर्वशी आदि अपनी सखियों समेत विमान में बैठ कपितीर्थ की प्रशंसा करती हुई स्वर्ग को गई वह राक्षसी भी पूर्वजन्म में घृताची नाम अप्सरा थी और अगस्त्य मुनि के शाप से राक्षसी होगई थी वह भी कपितीर्थ में प्राण त्यागने से अपने रूप को प्राप्त हो रम्भा के साथही विमान में बैठ स्वर्ग को गई इस भांति शिला और राक्षसी अगस्त्यजी के शिष्य श्वेतमुनि के प्रसाद करके और कपितीर्थ के प्रभाव से अपने पूर्वरूप को प्राप्त हुईं इस कारण हे मुनीश्वरो ! सब प्रकार से कपितीर्थ में स्नान करना चाहिये जो पुरुष भक्ति से इस अध्याय को पढ़ें अथवा श्रवण करें वे कपितीर्थ के स्नानफल को प्राप्त होकर सद्गति पाते हैं ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां कपितीर्थमाहात्म्यरम्भा-
कथानकं नामैकोनचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

गायत्रीतीर्थ और सरस्वतीतीर्थ का माहात्म्य और ब्रह्माजी की कथा ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! महापुण्य को देनेहारा और नरक क्लेश का नाश करनेहारा गायत्री और सरस्वती का माहात्म्य हम वर्णन करते हैं जिसके पढ़ने और सुनने से महापातक की निवृत्ति होय गायत्री

और सरस्वती में जो मनुष्य स्नान करें वे कभी गर्भवास का दुःख नहीं भोगते और मुक्त होते हैं गन्धमादनपर्वतमें ब्रह्मपत्नी गायत्री और सरस्वती के सन्निधान से दो तीर्थ हैं इतना सुन मुनीश्वरों ने पूछा कि हे सूतजी ! गन्धमादनपर्वत में किस कारण से गायत्री और सरस्वती का सन्निधान हुआ है यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने काम के वश हो अपनी पुत्री सरस्वती को चाहा वह भी अपने पिता का दुस्संकल्प जान लज्जा से हरिणी होगई ब्रह्माजी भी हरिण का रूप धार उसके पीछे लगे तब सब देवता ब्रह्माजी की बहुत निन्दा करनेलगे शिवजी भी ब्रह्माजी का यह दुराचार देख क्रोध से धनुष् बाण ले व्याध का रूप धार उनके पीछे लगे और एक बाण ऐसा मारा कि हरिणरूप ब्रह्माजी भूमिपर गिरे और उनके देह से एक तेजपुञ्ज निकलकर आकाश को गया वही मृगशिरानक्षत्र होगया और आर्द्रानक्षत्र के रूप से शिवजी स्थिति हुये जो अबतक भी मृगशिरानक्षत्र के पीछे मृग व्याधरूप से आकाश में देख पड़ते हैं इसप्रकार ब्रह्माजी के मृतक होने के अनन्तर अतिशोकातुर हो गायत्री और सरस्वती विचार करके ब्रह्माजी के पुनर्जीवन के लिये शिवक्षेत्र गन्धमादनपर्वत में जाय तप करनेलगीं उन्होंने स्नान के लिये अपने २ नाम से एक २ तीर्थ बनाया तीन काल उन तीर्थों में स्नानकर काम क्रोधआदि त्याग जितेन्द्रिय हो शिवजी का ध्यान करतीहुईं दोनों पञ्चाक्षर मन्त्र का जप करतीं इस भांति अपने पति ब्रह्माजी के जीवन के लिये बहुत कालतक उग्र तप किया तब श्रीमहादेवजी प्रसन्न हुये और गणेश, कार्त्तिकेय, नन्दी, भृङ्गी आदि सहित गायत्री और सरस्वती के सम्मुख प्रकट हुये उनको देख भक्ति से दोनों स्तुति करनेलगीं ॥

गायत्रीसरस्त्यावूचतुः ॥ नमो दुर्वारसंसारध्वान्तध्वंसैकहेतवे ॥ ज्वलज्ज्वालावलीभीमकालकूटविषादिने ॥ १ ॥ जगन्मोहन पञ्चास्त्रदेहनाशैकहेतवे ॥ जगदन्तकर क्रूर यमान्तक नमोस्तु ते ॥ २ ॥ गङ्गातरङ्गसंपृक्तजटामण्डलधा-

रिणे ॥ नमस्तेस्तु विरूपाक्ष बालशीतांशुधारिणे ॥ ३ ॥ पिनाकभीमटङ्कारत्रासितत्रिपुरौकसे॥ नमस्ते विविधाकार-जगत्स्रष्टृशिरश्छिदे ॥ ४ ॥ शान्तामलकृपादृष्टिसंरक्षित-मृकण्डुज॥ नमस्ते गिरिजानाथ रक्षावां शरणागते ॥ ५ ॥ महादेव जगन्नाथ त्रिपुरान्तक शङ्कर ॥ वामदेव महादेव रक्षावां शरणागते ॥ ६ ॥

यह स्तुति सुन प्रसन्न हो श्रीमहादेवजी ने कहा कि हे गायत्रि ! हे सरस्वति ! हम तुम से प्रसन्न हैं जो वर चाहती हो मांगो तब उन दोनों ने यह प्रार्थना की कि हे नाथ ! आप हमारे पिता और हम दोनों आपकी पुत्री हैं अब आप ऐसी अनुग्रह करें जिससे हमारे पति ब्रह्माजी जी उठें और फिर हमारा उनका समागम होजाय यह उनकी प्रार्थना सुन शिवजी ने अपने गणों के हाथ ब्रह्माजी का शरीर वहां मँगवाया और शिर भी मँगवाया फिर गायत्री और सरस्वती के सम्मुखही शिवजी ने ब्रह्माजी का शिर धड़ से जोड़कर उनको जिलादिया और ब्रह्माजी उठ खड़े हुये जैसे सोकर उठें और भक्ति से शिवजी की स्तुति करनेलगे ॥

ब्रह्मोवाच ॥ नमस्ते देवदेवेश करुणाकर शङ्कर॥ पाहि मां कृपया शम्भो निषिद्धाचरणात्प्रभो ॥ मा प्रवृत्तिर्भवेद् भूयो रक्ष मां त्वं तथा सदा ॥

यह ब्रह्माजी की प्रार्थना सुन शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! अब ऐसा प्रमाद कभी मत करना जे पुरुष उत्पथ में चलें उनको हम दण्ड देते हैं इसीलिये आपको भी दण्ड दिया इतनी बात ब्रह्माजी सें कह गायत्री और सरस्वती से कहा कि तुम्हारे तप के प्रभाव से ब्रह्माजी का पुनर्जीवन हुआ अब तुम सब ब्रह्मलोक कों जावो और तुम्हारे सन्निधान से इन दोनों कुण्डों में स्नान करनेवाले पुरुषों की मुक्ति होगी तुम दोनों के नाम से ये दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे ये दोनों तीर्थ सब तीर्थों को भी शुद्ध करनेवाले

होंगे इन तीर्थों में स्नान करने से महापातकों का नाश सब मनोरथों की सिद्धि हमारा और विष्णु जी का प्रसाद भी होगा इन दोनों तीर्थों के तुल्य न कोई तीर्थ हुआ न होगा गायत्री जप से रहित वेदाभ्यास पञ्चयज्ञ नित्यानुष्ठान आदि से वर्जित पुरुष भी इन कुण्डों में स्नान करने से उन कर्मों के फल को प्राप्त होंगे और भी पातकी पुरुष इनमें स्नानकर शुद्ध होजायँगे इतना कह शिवजी तो अन्तर्धान हुये और गायत्री सरस्वती सहित ब्रह्मा जी ब्रह्मलोकको गये इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो! इस प्रकार गन्धमादनपर्वत में गायत्री और सरस्वती का सन्निधान हुआ है जो पुरुष इस अध्याय को भक्ति से पढ़े अथवा सुने वह दोनों तीर्थों के स्नानफल को प्राप्त हो सद्गति पाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां गायत्रीसरस्वतीतीर्थमाहात्म्य-ब्रह्मकथानकंनाम चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

राजापरीक्षित और कश्यपनाम ब्राह्मणकी कथा और गायत्रीतीर्थ व सरस्वतीतीर्थका माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! गायत्रीतीर्थ और सरस्वतीतीर्थ का प्रभाव हम और भी वर्णन करते हैं कश्यप नाम ब्राह्मण नरकप्रद बड़े पाप से इन तीर्थों में स्नानकर छूटा मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी ! कश्यप कौन था उसने क्या पाप किया और फिर क्योंकर पाप से मुक्त हुआ यह आप कृपा करके वर्णन करें आपका वचनरूप अमृत पान करते २ हमको तृप्ति नहीं होती यह सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ! गायत्री और सरस्वती के माहात्म्य का एक इतिहास हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पातक नाश होयँ अभिमन्यु का पुत्र राजा परीक्षित धर्म से हस्तिनापुर में राज्य करता था वह साठ वर्ष की अवस्था में एक दिन आखेट के लिये वनमें गया वहां एक मृग के पीछे लगाहुआ अपनी सेना से अलग होकर दूर चलागया और क्षुधा तृषा से भी बहुत व्याकुल था आगे एक मुनि समाधि लगाये बैठा था उससे राजा ने पूछा कि हे मुने ! मेरे बाण से बिधाहुआ मृग तुमने देखा कि नहीं यह राजा का वचन सुन

कर भी मुनि ने कुछ उत्तर न दिया तब धनुष् के अग्रभाग से एक मरा सर्प उठाकर राजा ने मुनि के गले में डालदिया और आप अपनी राजधानी को चलाआया उस मुनि के पुत्र का शृङ्गी नाम था उसके मित्र कृशाख्यने शृङ्गी से कहा कि तेरा पिता गले में मरा सर्प डाले बैठा है अब तू झूठा अहंकार मत कियाकर यह सुन शृङ्गी ने बड़ा कोप किया और राजा परीक्षित को शाप दिया कि जिस दुष्ट ने मेरे पिता के गले में सर्प डाला है उसको सात दिन के भीतर तक्षक नाग डसेगा और वह मरजायगा इसप्रकार मुनि-पुत्र ने शाप दिया यह बात उसके पिता शमीकऋषि ने समाधि खुलने के अनन्तर सुनी तब अपने पुत्र से कहा कि तैंने सब प्रजा के रक्षक राजा को क्यों शाप दिया विना राजा के राज्य में हम क्योंकर रहसकेंगे क्रोध से बड़ा पाप होता है दया से सुख मिलता है जो उत्पन्न हुये क्रोध को क्षमा से निवृत्त करता है वह दोनों लोकों में सुख पाता है क्षमावाले पुरुष सदा सुख पाते हैं इतना कह शमीकऋषि ने अपने शिष्य गौरमुख से कहा कि तू जाकर राजा परीक्षित से कह आ कि मेरे पुत्र ने तुमको शाप दिया है यह गुरु की आज्ञा पाय गौरमुख ने जाकर राजा परीक्षित से कहा कि हे राजन् ! तुम शमीकमुनि के गले में मरा सर्प डाल आये इसलिये उनके पुत्र ने शाप दिया है कि सात दिन के भीतर तक्षक नाग के डसने से तुम्हारी मृत्यु होगी यह बात कहने के लिये मेरे गुरु ने मुझको भेजा है इतना कह गौरमुख अपने आश्रम को गया और राजा भी अतिव्याकुल हुआ राजा ने गङ्गा के बीच अति ऊंचे एक स्तम्भ के ऊपर एक मण्डप अर्थात् बँगला बनवाया और आप उसमें बैठा अनेक गारुड़ी मान्त्रिक चिकित्सक आदि अपने समीप रक्खे और बहुत से ब्रह्मवेत्ता ऋषि राजा के समीप बैठे उस अवसर में कश्यप नाम एक ब्राह्मण यह बात सुन राजा परीक्षित के पास को चला वह सब मान्त्रिकों में उत्तम था और इस अभिप्राय से आया कि तक्षक के विष से राजा की रक्षाकर बहुत सा धन पाऊंगा उसी अवसर में तक्षक भी ब्राह्मण का रूप धार हस्तिनापुर को चला आता था उसने मार्ग में कश्यप को देखा और पूछा कि हे ब्राह्मण ! तू कहां जाता है तब

कश्यप ने कहा कि राजा परीक्षित को आज तक्षक नाग डसेगा उसका विष निवृत्त करने के लिये मैं जाता हूं तब तक्षक ने कहा कि हे ब्राह्मण! तक्षक मैंही हूं और मेरे डसे के ऊपर किसीका मन्त्र तन्त्र नहीं चलसक्ता जो तुझ में सामर्थ्य होय तो इस वटवृक्ष को डसकर मैं भस्म करता हूं और तू इसका उज्जीवन कर इतना कह तक्षक ने उस वृक्ष को डसा डसतेही वह वृक्ष भस्म होगया एक मनुष्य भी उस वृक्षपर पहिले से चढ़ा था वह भी भस्म होगया उसको तक्षक और कश्यप दोनों नहीं जानते थे कश्यप ने कहा कि अब मेरे मन्त्र की शक्ति को सब देखें इतना कह कश्यप ने वट वृक्ष को मन्त्र के प्रभाव से फिर जीता करदिया वह मनुष्य भी जो वृक्ष के साथ जल गया था जी उठा तब तक्षक ने कहा कि हे कश्यप! मुनिकुमार का वचन मिथ्या न होय ऐसा करना चाहिये राजा से तू जितना धन चाहता है उससे भी द्विगुणधन मुझी से लेले और अपने घर को लौटजा इतना कह तक्षक ने बहुत से उत्तम रत्न कश्यप को दिये कश्यप ने भी ज्ञानदृष्टि से जाना कि राजा परीक्षित की आयुर्दाय समाप्त होचुकी है इस धन को क्यों छोड़ते हो यह विचार तक्षक का दिया बहुत सा धन ले अपने आश्रम को चला आया तक्षक ने अपने सर्पों से कहा कि तुम मुनि-वेष धारकर राजा परीक्षित के पास जावो और उत्तम २ फल राजा को दो यह तक्षक की आज्ञा पाय वे सर्प मुनिवेष धार राजा के समीप पहुँचे और अनेक उत्तम फल राजा को दिये उनमें एक फल के बीच तक्षक भी छोटेसे कीट का रूप धार बैठ गया था राजा ने वे फल मन्त्रियों को बांटदिये और सब से बड़ा फल अपने हाथ में रक्खा इतने में सूर्य अस्त होनेलगे राजा ने उस फल में एक रक्तवर्ण का कीट देखकर कहा कि आज सात दिन पूरे होगये ऋषि का वचन मिथ्या न होना चाहिये इसलिये यह छोटा सा कीट मुझे काटलेवे यह कहकर राजा ने वह कीट अपनी ग्रीवापर रखलिया रखतेही वह कीट तक्षक होगया और राजा के सब शरीर को लपेटकर ऐसा दंशित किया कि उस महल समेत राजा भस्म होगया आसपास के लोग तक्षक को देखतेही भाग गये थे इससे बचगये राजा की मृत्यु के अनन्तर

सब औध्र्वदैहिक कृत्य कराय मन्त्रियों ने परीक्षित के पुत्र जनमेजय को गद्दीपर बैठाया कश्यप भी अपने आश्रम में गया परन्तु सब ब्राह्मणों ने उसका तिरस्कार किया कि ऐसे धर्मात्मा राजा की तैंने रक्षा न की और धनलोभसे लौटआया कश्यप भी बड़ा व्याकुल हुआ जिस नगर ग्राम आश्रम आदि में जाय वहांहीं उसको सब धिक्कार देवें तब अतिदुःखी हो शाकल्यमुनि की शरण में गया और प्रार्थना की कि हे महाराज! सब ब्राह्मण मुनि बन्धु मित्र आदि मेरी निन्दा करते हैं इसका मैं कारण नहीं जानता ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुस्त्रीगमन, सुवर्ण की चोरी आदि कोई महापातक मैंने नहीं किया और महापातकी पुरुषों का कभी मैंने संसर्ग भी नहीं किया और भी कोई उपपातक मैंने नहीं किया फिर मेरी निन्दा क्यों करते हैं जो आप इसका कारण जानते होयँ तो मुझ से कृपाकर कहो कश्यप का यह वचन सुन क्षणमात्र ध्यान कर शाकल्यमुनि बोले कि हे कश्यप! राजा परीक्षित की रक्षा के लिये तू चला और तक्षक से धन लेकर मार्ग से ही चला आया जो चिकित्सा करने को समर्थ होकर भी विष रोग आदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करे वह ब्रह्मघातक होता है क्रोध से काम से भय से लोभ से मात्सर्य से मोह से जो समर्थ होकर विष शस्त्र रोग आदि करके पीड़ित मनुष्य की रक्षा न करे वह ब्रह्मघातक, सुवर्णस्तेयी, गुरुदारागामी, सुरापान करनेहारा और संसर्ग दोष दुष्ट भी गिनाजाता है कन्या बेचनेवाले, रस बेचनेवाले, घोड़े हाथी बेचनेवाले, कृतघ्न, विश्वासघातक आदि सबका प्रायश्चित्त है परन्तु जो समर्थ होकर आरत की रक्षा न करे उसका कुछ प्रायश्चित्त नहीं उस मनुष्य के साथ पंक्ति में भोजन न करे सम्भाषण न करे और उसका मुख भी न देखे उसके साथ सम्भाषण करने से महापातक लग जाता है राजा परीक्षित परमविष्णुभक्त धर्मात्मा महायोगी और चारो वर्णों की रक्षा करनेहारा था तैंने तक्षक का वचन माना और राजा की रक्षा न की इसीकारण सब तेरी निन्दा और तिरस्कार करते हैं यद्यपि राजा परीक्षित की आयुर्दाय समाप्त होगई थी तो भी जबतक श्वास रहे तबतक उपाय करना चाहिये

क्योंकि काल की गति विलक्षण है कदाचित् बचजाय यह प्राचीन वैद्यों का निश्चय है तू चिकित्सा करने में समर्थ होकर भी मार्ग से लौटगया और राजा की रक्षा न की इसलिये राजा का पाप तुझ को लगा यह शाकल्यमुनि का वचन सुन कश्यप ने प्रार्थना की कि हे महाराज! कोई ऐसा उपाय बतावें जिससे यह पातक निवृत्त होय आप दयालु हैं और मैं आपकी शरण में प्राप्त हुआ हूं यह कश्यप की प्रार्थना सुन क्षणमात्र ध्यानकर शाकल्यमुनि बोले कि हे कश्यप! इस पातक के निवृत्त होने के लिये हम एक उपाय कहते हैं उसको शीघ्रही कर दक्षिण समुद्र के बीच सेतु के मध्य गन्धमादनपर्वत में गायत्री और सरस्वती नामक दो तीर्थ हैं वहां तू स्नान करतेही शुद्ध होजायगा उन तीर्थों का पवन लगतेही सब पाप निवृत्त होजाते हैं इसलिये तू भी शीघ्रही जाकर स्नान कर कश्यप यह शाकल्यमुनि की आज्ञा पाय उनको प्रणामकर गन्धमादनपर्वत को चला वहां जाय गायत्री सरस्वती और दण्डपाणि भैरव को प्रणामकर संकल्पपूर्वक दोनों तीर्थों में स्नान किया स्नान करतेही कश्यप निष्पाप होगया और तीर्थ के तीरपर बैठ जप करनेलगा थोड़े काल के अनन्तर सब आभरणों से भूषित गायत्री और सरस्वती प्रकट हुईं उनको देख कश्यप ने भक्ति से प्रणाम किया और पूछा कि तुम दोनों कौन हो तब वे बोलीं कि हे कश्यप! हम दोनों गायत्री और सरस्वती हैं नित्य तीर्थरूप करके यहां निवास करती हैं इन दोनों तीर्थों में स्नान करने से हम तुझपर प्रसन्न हुई हैं जो वर तू चाहे वह मांग इन तीर्थों में जो स्नान करे उसको हम अभीष्ट वर देती हैं यह उनका वचन सुन कश्यप स्तुति करनेलगा॥

कश्यप उवाच॥ चतुराननगेहिन्यौ जगद्धात्र्यौ नमाम्यहम्॥ विद्यास्वरूपे गायत्रीसरस्वत्यौ शुभे उभे॥ १॥ सृष्टिस्थित्यन्तकारिण्यौ जगतां वेदमातरौ॥ हव्यकव्यस्वरूपे च चन्द्रादित्यविलोचने॥ २॥ सर्वदेवाधिपे वाणीगायत्र्यौ सततं भजे॥ गिरिजा कमला चापि युवामेव

जगद्धिते ॥ ३ ॥ युष्मद्दर्शनमात्रेण जगत्सृष्ट्यादिकल्पनम् ॥ युष्मन्निमेषे सततं जगतां प्रलयो भवेत् ॥ ४ ॥ उन्मेषे सृष्टिरभवद्धो गायत्रिसरस्वति ॥ युवयोर्दर्शनादद्य कृतार्थोभवमाशु वै ॥ ५ ॥

यह स्तुतिकर कश्यप ने प्रार्थना की कि सब मुनि और उत्तम ब्राह्मण मुझे निष्पाप जान अङ्गीकार करलेवें और अब कभी मेरी बुद्धि पापकृत्य में न लगे सदा धर्म में ही तत्पर रहे यह वर मुझे आप दोनों कृपा करके दो यह वचन सुन दोनों बोलीं कि हे कश्यप! यह सब बात तुझ को हमारी अनुग्रह से प्राप्त होगी इतना कह अपने २ तीर्थ में दोनों अन्तर्धान होगईं और कश्यप भी कृतार्थ हो अपने देश को आया और सब ब्राह्मणों ने उसको निष्पाप जान अङ्गीकार किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! इसप्रकार गायत्री और सरस्वती में स्नानकर कश्यप बड़े पातक से छूट गया जो पुरुष भक्ति से इस अध्याय को पढ़े अथवा सुने वह गायत्री और सरस्वती के स्नानफल को प्राप्त हो सब पापों से छूटता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां परीक्षितकश्यपकथानकं नामैकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

गन्धमादनपर्वत के ऋणमोचनआदि सब तीर्थों का माहात्म्य ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! सेतुके बीच और भी जे तीर्थ हैं उन का वैभव हम वर्णन करते हैं ऋणमोचन नाम एक तीर्थ है जिसमें स्नान करने से तीन प्रकार का ऋण निवृत्त होता है ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों पर ऋषि देवता और पितरों का ऋण होता है ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान न करे तो ऋषियों का ऋण रहता है यज्ञ न करे तो देवताओं का ऋण और पुत्र उत्पन्न न करने से पितरों का ऋण रहता है ब्रह्मचर्य यज्ञ और पुत्रोत्पादन बिनाही ऋणमोचनतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य ऋषि देवता और पितरों के ऋण से छूटजाता है ऋषि देवता और पितर ब्रह्मचर्य आदि से वैसे सन्तुष्ट नहीं होते जैसे ऋणमोचन में स्नान करने से होते हैं और

दारिद्रय पुरुष जो धनवानों के ऋण से ग्रस्त होय वह भी इस तीर्थ में स्नान करे तो उसका ऋण निवृत्त होजाय और वह आप धनाढ्य होजाय यहां स्नान करने से ऋणमुक्ति होती है इसी से इसका नाम ऋणमोचन है ऋषि पुरुषों को अवश्यही इस तीर्थ में स्नान करना चाहिये इस तीर्थ के समान तीर्थ न हुआ न होगा यहां एक तीर्थ पाण्डवों का बनाया है पांचो पाण्डवों ने भोग और मोक्ष के लिये वहां यज्ञ किये इसलिये उस तीर्थ का नाम पञ्चपाण्डव हुआ दशहजार कोटि तीर्थ सदा पञ्चपाण्डव तीर्थ में निवास करते हैं आदित्य, वसु, रुद्र, साध्य, मरुद्गण आदि सब देवता उस तीर्थ में निवास करते हैं इस तीर्थ में स्नानकर जो पुरुष देवता और पितरों का तर्पण करे वह सब पापों से छूट ब्रह्मलोक को जाता है जो पुरुष इस तीर्थ के तटपर एक ब्राह्मण को भी भोजन करावे वह दोनों लोकों में सुखी रहता है चारो वर्णों में से कोई मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करे वह फिर वियोनि में नहीं जन्म लेता पर्वदिनों में जो मनुष्य पाण्डवतीर्थ में स्नान करें वे कभी नरक को नहीं देखते जो सायंकाल और प्रातःकाल इस तीर्थ का स्मरण करे वह गङ्गाआदि सब तीर्थों के स्नानफल को प्राप्त होता है गन्धमादनपर्वत में इन्द्र आदि देवताओं ने दैत्यों का नाश होने के लिये एक देवतीर्थ बनाया है उसमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होते हैं और अक्षय स्वर्गवास होता है स्त्री अथवा पुरुष ने जन्मभर पाप किये होयँ वे सब पाप देवतीर्थ में स्नान करतेही नष्ट होजाते हैं सब देवताओं में जैसे विष्णुभगवान् प्रधान हैं इसीप्रकार सब तीर्थों में देवतीर्थ मुख्य है सौ वर्ष पर्यन्त अग्निहोत्र करने से जो पुण्य होता है वह देवकुण्ड में एक वार स्नान करने से होता है देवतीर्थ पर निवास करना दान देना जप आदि कर्म करने और भक्ति से देवतीर्थ में स्नान करना ये सब बातें बहुत दुर्लभ हैं देवतीर्थ में जाने से अश्वमेध का फल प्राप्त होता है वहां दो चार दिन निवास करे तो उत्तम सिद्धि को प्राप्त होता है और जन्म मरण से छूटजाता है तीन दिन स्नान करने से वाजपेययज्ञ का फल प्राप्त होता है देवतीर्थ के स्मरण करने से ये सब पाप निवृत्त होजाते हैं इस

तीर्थ पर देवता और पितरों का अर्चन करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं और सब यज्ञों का फल प्राप्त होता है इस तीर्थ के तुल्य कोई तीर्थ न हुआ न होगा दोनों लोकों में कल्याण की इच्छावाले पुरुषों को विशेष करके मुमुक्षु पुरुषों को देवतीर्थ में अवश्यही स्नान करना चाहिये यह देवतीर्थ का माहात्म्य हमने संक्षेप से वर्णन किया विस्तार से तो कहां तक वर्णन करें अब रामसेतु में सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहते हैं सुग्रीवतीर्थ में स्नान करने से अश्वमेध का फल प्राप्त होकर सूर्यलोक में निवास होता है और हजार गोदान का फल होता है ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं वेदपारायण का फल होताहै वहां स्नानकर देवता पितरों का तर्पण करे तो आठ अग्निष्टोमयज्ञ का फल होताहै सुग्रीवतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य जातिस्मर होता है इसलिये अवश्यही सुग्रीवतीर्थ में स्नान करना चाहिये यह सुग्रीवतीर्थ का माहात्म्य कहा अब नलतीर्थ का वैभव वर्णन करते हैं नलतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य सब पापों से निवृत्त हो अग्निष्टोम आदि यज्ञों का फल पाय स्वर्ग में निवास करता है तीन दिन उपवास करे और नलतीर्थ में देवता और पितरों का तर्पण करे तो अतिरात्र अश्वमेध आदि यज्ञके फलको पाय सूर्यके तुल्य प्रकाशित होता है अब नीलतीर्थ का माहात्म्य कहते हैं अग्नि के पुत्र नील ने वह तीर्थ बनाया है नीलतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो बहुत स्वर्णयज्ञ का सौगुणा फल पाय अग्निलोक को जाता है गवाक्षतीर्थ में स्नान करे तो कभी नरक का भय न होय अङ्गदतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है इसप्रकार गज, गवय, शरभ, कुमुद, पनसआदि वानरों के बनाये तीर्थ गन्धमादन में हैं उनमें स्नान करने से मोक्ष प्राप्त होता है विभीषण के बनाये तीर्थ में स्नान करे तो पाप, दुःख, रोग, कुम्भीपाक आदि नरकों का भय दुःस्वप्न, दारिद्र्य आदि नाश को प्राप्त होते हैं वहां स्नान करनेहारा मनुष्य सर्वपापों से छूट वैकुण्ठ को जाता है विभीषण के मन्त्रियों ने चार तीर्थ बनाये हैं उनमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होते हैं गन्धमादनपर्वत में रामनाथ महादेव का सेवन करने के

लिये सरयूनदी वहां निवास करती है उसमें स्नान करने से सब यज्ञ, तप, तीर्थ, दान आदि का फल प्राप्त होता है दशहजार कोटि तीर्थ गन्धमादन में निवास करते हैं गङ्गाआदि नदी सातो समुद्र ऋषियों के आश्रम पुण्यवन शिव विष्णु आदि क्षेत्र सब गन्धमादन में निवास करते हैं तैंतीसकोटि देवता, पितर, मुनि, यक्ष, किन्नर आदि सब रामसेतु में निवास करते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! यह गन्धमादन के सब तीर्थों का माहात्म्य हमने वर्णन किया इस अध्याय को जो पुरुष पढ़े अथवा सुने वह सब पापों से छूट मोक्ष को प्राप्त होता है॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायामृणमोचनादिसकलतीर्थनिरूपणं नाम द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः॥ ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय॥

रामेश्वर का माहात्म्य अष्टविध भक्ति का वर्णन रामेश्वर के पूजन आदि का फल॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! अब हम रामनाथ का माहात्म्य वर्णन करते हैं जिसके सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट जायँ रामचन्द्रजी के स्थापन किये लिङ्ग का जो मनुष्य दर्शन करे वह मुक्ति पाता है सत्ययुग में जो पुण्य दश वर्ष में साधन करसक्ते थे वह त्रेतायुग में एक वर्ष करके द्वापर में एक मास करके और कलियुग में एक दिन करके सिद्ध होसक्ता है वह पुण्य कोटिगुण एक २ निमेष में रामनाथ के दर्शन से प्राप्त होता है रामेश्वरलिङ्ग में सब तीर्थ, सब देवता, ऋषि, पितर, मुनि आदि निवास करते हैं नित्य त्रिकाल जो रामेश्वर का स्मरण अथवा कीर्तन करते हैं वे सब पापों से छूट सच्चिदानन्दस्वरूप साम्ब शिव में लीन होते हैं कभी उन मनुष्यों को यमयातना नहीं होती जो रामनाथलिङ्ग का एक बार भी पूजन करें वे मनुष्य नहीं साक्षात् रुद्र हैं जो रामेश्वर का पूजन न करें वे कभी संसार के दुःख से नहीं छूटते जो रामेश्वर का स्मरण करता रहे उसको दान व्रत तप यज्ञआदि करने की कुछ अपेक्षा नहीं जो रामेश्वर का स्मरण न करें वे अज्ञानी जड़ मूक बधिर अन्ध आदि होते हैं और उनके धन सन्तान क्षेत्र आदि की सदा हानि होती है रामेश्वरलिङ्ग

के दर्शन किये पीछे गया प्रयाग काशी आदि तीर्थों में जाने का कुछ प्रयोजन नहीं जो पुरुष अतिदुर्लभ मनुष्यजन्म पाय रामेश्वर का दर्शन और पूजन करते हैं उनका जन्म सफल है रामेश्वरलिङ्गका पूजन करनेहारे मनुष्य को ब्रह्मा विष्णु इन्द्र आदि देवता की कुछ आकांक्षा नहीं रहती रामेश्वर को जो मनुष्य प्रणाम प्रदक्षिणा आदि करें वे कभी दुःख नहीं देखते और यमलोकको भी नहीं जाते हज़ारों ब्रह्महत्या आदि पाप रामेश्वर का दर्शन करतेही विलय को प्राप्त होजाते हैं जो मनुष्य स्वर्गसुख भोगना चाहें वे सदा रामेश्वर का पूजन करें करोड़ों जन्मों के किये पाप रामेश्वर के दर्शन करतेही नाश को प्राप्त होजाते हैं लोभ से भय से संसर्ग से जो मनुष्य एक बार भी रामेश्वर का स्मरण अथवा पूजन करते हैं वे कभी दोनों जन्मों में दुःख नहीं पाते रामेश्वर का कीर्तन और पूजन करने से अवश्यही शिवसायुज्य प्राप्त होता है जिस भांति अग्नि काष्ठ को दग्ध करदेता है इसी प्रकार रामेश्वर का दर्शन पापों को भस्म करता है रामेश्वर की भक्ति आठ प्रकार की है रामेश्वर के भक्तों में स्नेह रखना, पूजा देखकर प्रसन्न होना, आप पूजन करना, रामेश्वर के अर्थ देह की चेष्टा करना, रामेश्वरकथा सुनने में आदर, रामेश्वरस्मरण से शरीर में रोमाञ्च और अश्रुपात आदि होना, रामेश्वर का स्मरण करते रहना और रामेश्वर के आश्रय से जीना यह आठ प्रकार की भक्ति म्लेच्छ में भी हो तो वह मुक्ति का भागी होता है देवता में अनन्यभक्ति ब्रह्मज्ञान और वेदान्त शास्त्र श्रवण से जितेन्द्रिय मुनीश्वरों को प्राप्त होती है वह मुक्ति विना ज्ञान विना वैराग्य और विना कायक्लेश के सब वर्ण और सब आश्रम के मनुष्यों को रामेश्वर के दर्शनमात्र से मिलसक्ती है कृमि, कीट, देवता, मनुष्य, बड़े तपस्वी मुनि रामेश्वर का दर्शन करने से तुल्यही गति पाते हैं पापी पुरुष पाप का भय न करें और पुण्य करनेहारे पुण्य का गर्व न रक्खें रामेश्वरदर्शन किये पीछे सब समान हैं जो भक्ति से रामेश्वर का दर्शन करे उसकी तुल्यता चार वेद जाननेहारा ब्राह्मण भी नहीं करसक्ता रामेश्वर का भक्त चाण्डाल भी मिले तो वेदवेत्ता ब्राह्मण को छोड़ सब दान

उसको देने चाहियें जो गति ऊर्ध्वरेता योगीश्वरों की होती है वह ही रामेश्वरदर्शन करनेहारों की होती है रामेश्वर में बसनेवाले सब मनुष्य मरण के अनन्तर साक्षात् शिवस्वरूप होते हैं रामेश्वर को जो मनुष्य यात्रा करें उनके एक २ पद में अश्वमेध का फल होता है रामेश्वर में जो एक ग्रास भर अन्न भी ब्राह्मण को देवे वह सप्तद्वीपवती भूमि के दानफल को पाता है रामनाथ को जो पुरुष भक्ति से पत्र फल जल अर्पण करे उस की सदा रामनाथ महादेव रक्षा करते हैं रामनाथ का पूजन भक्ति स्मरण स्तुति आदि सब अतिदुर्लभ हैं जो पुरुष भक्ति से रामनाथ की शरण में प्राप्त होते हैं वे दोनों लोकों में लाभ और जय पाते हैं जिसका चित्त दिन रात रामनाथ में लगा रहे वह धन्य है जो रामेश्वर का पूजन नहीं करते वे भोग मोक्ष नहीं पाते पूजन करनेहारेही भुक्ति और मुक्ति पाते हैं रामेश्वर पूजन से अधिक कोई पुण्य नहीं है जो पुरुष रामेश्वर के साथ द्वेष करे वह दशहजार ब्रह्महत्याओं से लिप्त होता है और उसके साथ सम्भाषण-मात्र करने से नरक में वास होता है सब देव और यज्ञ रामनाथ के ही हैं इस कारण सबको छोड़ रामनाथ की शरण में जाना चाहिये रामनाथ की शरण में प्राप्त हुये पुरुष सब पापों से छूट शिवलोक को जाते हैं सब यज्ञ, तप, दान, तीर्थस्नान आदि करने से जो फल मिलता है उससे कोटिगुणा फल रामेश्वर के दर्शन से होता है दो घड़ी रामनाथ का स्मरण करे तो सौपीढ़ी समेत शिवलोक में प्राप्त होता है जो दिनभर रामनाथ का दर्शन करे वह सब संसार सुख भोग अन्त में रुद्र बनता है जो प्रभात उठ रामनाथ का स्मरण करे उसको साक्षात् शिव जानना चाहिये रामनाथ के दर्शन करनेहारे पुरुष के दर्शन करने से सब पाप निवृत्त होजाते हैं मध्याह्न को रामनाथ का दर्शन करे तो हज़ारों सुरापानपातक नष्ट होते हैं सायंकाल को दर्शन करने से गुरुदारगमनपातक निवृत्त होते हैं सायं-काल के समय उत्तम स्तोत्रों से रामेश्वर की स्तुति करे तो हज़ार सुवर्ण-स्तेयपातक नाश को प्राप्त होते हैं धनुष्कोटि में स्नान और रामेश्वर का दर्शन एक बार भी करलेवे तो गङ्गाआदि तीर्थों की कुछ अपेक्षा नहीं रहती

है जो वस्तु रामनाथ की सेवा से न प्राप्त होय वह किसी प्रकार से भी नहीं प्राप्त होसक्ती है जो कभी रामनाथ का दर्शन न करे उसको वर्णसंकर जानना चाहिये जो प्रभात उठ तीनबार रामनाथ शब्द को उच्चारण करे उस का पूर्व दिन का किया पाप निवृत्त होजाता है रामनाथ के होते भी मनुष्य क्यों याचना करते फिरते हैं रामनाथ की कृपा होने से सब क्लेश निवृत्त होजाते हैं जिसप्रकार सूर्योदय होतेही अन्धकार प्राणत्याग के समय जो पुरुष रामनाथ का स्मरण करे वह फिर जन्म नहीं लेता और साक्षात् शिव होजाता है जो पुरुष (हे रामनाथ ! हे करुणानिधे ! हे भक्तवत्सल !) इत्यादि वाक्य उच्चारण किया करे उसको कभी कलियुगकी बाधा नहीं होती और वह माया में भी लिप्त नहीं होता और काम क्रोध आदि भी उसको पीड़ा नहीं देते जो पुरुष काष्ठ से रामनाथ का मन्दिर बनावे वह तीनकोटि कुलसहित स्वर्ग को जाता है ईंटों से बनावे तो वैकुण्ठ पावे पत्थर से मन्दिर बनावे तो ब्रह्मलोक को जावे और स्फटिकआदि उत्तम शिलाओं से रामनाथ का मन्दिर बनावे तो उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जावे ताम्र करके रामनाथ का मन्दिर बनावे तो शिवसालोक्य पावे चांदी करके बनावे तो शिवसायुज्य मिले और सुवर्ण का मन्दिर बनवावे तो शिवसारूप्य पावे धनवान् सुवर्ण का बनवावे और दारिद्र्य पुरुष मृत्तिका का मन्दिर बनवावे तो भी दोनों को तुल्यही फल मिलता है रामनाथ के स्नान कराने के समय और तीनकाल आरती के समय जो पुरुष अनेक प्रकार के बाजे बजावें वे सब पापों से छूट रुद्रलोक को प्राप्त होते हैं जो पुरुष रामनाथ के स्नान समय में रुद्राध्याय, चमक, पुरुषसूक्त, त्रिसुपर्ण, पञ्चशान्ति, पवमान आदि का पाठ करे वह कभी नरक नहीं देखता गोदुग्ध दधि घृत पञ्चगव्य से जो रामनाथ को स्नान करावे वह नरक नहीं देखता घृत से स्नान करावे तो करोड़ों जन्म के पाप निवृत्त होते हैं दुग्ध से स्नान करावे तो इक्कीस कुल सहित शिवलोक को जाय दही से स्नान करावे तो विष्णुलोक में प्राप्त होय तिलतैल से जो रामेश्वरलिङ्ग को अभ्यङ्ग करावे वह कुबेर के समीप निवास करता है इक्षुरस से जो भक्तिपूर्वक एक बार भी रामनाथ को स्नान

करावे वह चन्द्रलोक को जाता है बड़हर और आम्र के रस से स्नान करावे वह पितृलोक में निवास करता है नारिकेल के जल से स्नान करावे तो ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं पकेकेलों से रामनाथलिङ्ग को लेपन करे तो सब पापों से छूट वायुलोक को जाय वस्त्र से छनेहुये जल करके रामनाथ को स्नान करावे तो वरुणलोक में निवास करे चन्दनयुक्त जल से स्नान करावे तो गन्धर्वलोक पावे कमलआदि पुष्पों करके सुगन्धित और सुवर्णयुक्त जल से स्नान करावे तो इन्द्र के समीप निवास करे पाटल उत्पल कह्लार आदि से वासित जल करके स्नान करावे तो सब पापों से छूटे और भी सुगन्ध पुष्पों करके वासित जल से स्नान कराने से शिवलोक की प्राप्ति होती है इलायची कपूर आदि से सुगन्ध जल करके रामेश्वर को स्नान करावे तो अग्निलोक में जाय सुखपूर्वक निवास करे रामनाथ के अभिषेक के लिये जो मृत्तिका के घट देवे वह सुखपूर्वक सौ वर्ष आयुर्दाय भोगता है ताम्र के घट देवे तो स्वर्ग को जाय चांदी के कुम्भ देवे तो ब्रह्म-लोक पावे सुवर्ण के कलश देने से शिवलोक मिले और रत्नकुम्भ अभि-षेक के लिये देवे तो शिवजी के समीप निवास करे जो दूध देनेहारी गौ रामेश्वर के अर्पण करे वह अश्वमेध यज्ञका फल पाय शिवलोक में निवास करता है स्नान के समय रामनाथ और धनुष्कोटि का स्मरण करे वह सेतुस्नान का फल पाता है जो रामनाथ के मन्दिर को कली पुतवाकर श्वेत करदेवे उसके पुण्य फल को हम सौ वर्ष में भी नहीं वर्णन करसक्ते जो रामनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करे वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छूटता है और नया मन्दिर बनाने से भी सौगुणा अधिक पुण्य पाता है रामनाथ के आगे जो दीप जलावे वह अविद्यारूप अन्धकार से छूट ब्रह्म-सायुज्य को प्राप्त होता है घृत, तेल, मूंग, चावल, गुड़, खांड़ आदि जो रामेश्वर के अर्पण करे वह इन्द्र के समीप निवास करता है रामनाथ के दर्शन, स्पर्श, स्मरण, पूजन आदि से सब पाप नाश को प्राप्त होते हैं जो पुरुष दर्पण और घण्टा रामनाथ को चढ़ावे वह उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जाता है भेरी, मृदङ्ग, पणव, वंशी आदि बाजे जो रामनाथ

के अर्पण करे वह भी उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जाय रामनाथ के निमित्त थोड़ा भी देवे वह अनन्तगुण होजाता है जन्मभर जो रामेश्वर क्षेत्रमें रहे वह अवश्यही मुक्ति पाता है आयुर्दाय, यौवन, सम्पत्ति, पुत्र, स्त्री आदि कोई पदार्थ जगत् में स्थिर नहीं राजा धन क्षेत्रआदि को हरलेते हैं इसलिये इन सबका मोह छोड़ रामेश्वर की शरण में प्राप्त होय जो पुरुष उत्तम ग्राम रामेश्वर के अर्पण करे वह साक्षात् शिवस्वरूपही होजाता है सब पात्रों में उत्तम पात्र रामेश्वर हैं इसलिये सब पदार्थ रामेश्वर के अर्पण करने चाहिये रामनाथ के दर्शन पर्यन्तही सब पातक रहते हैं पंखा, ध्वजा, छत्र, चामर, चन्दन, गुग्गुल, ताम्र, चांदी, सोने आदि के घट और भी उत्तम २ सामग्री जो पुरुष रामेश्वर के अर्पण करें वे जन्मान्तर में चक्रवर्ती राजा होते हैं रामेश्वर के पूजन के लिये जो भक्ति से पुष्प लाते हैं वे अश्वमेधादि यज्ञों का फल पाते हैं रामेश्वर का दर्शन, श्रवण, पूजन, स्मरण आदि करनेहारे पुरुषों को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं जो पुरुष रामनाथ को जाय उसके पातक भयभीत होजाते हैं रामनाथ का दर्शन करनेहारे पुरुषों को वेद, शास्त्र, तीर्थ, यज्ञ आदि से कुछ प्रयोजन नहीं चन्दन, केसर, कस्तूरी, गुग्गुल, रालआदि धूप जो पुरुष रामेश्वर के अर्पण करे वह धनाढ्य और वेद शास्त्र का जाननेहारा होता है मोतियों के हार और उत्तम २ वस्त्र जो रामनाथ के अर्पण करे वह कभी दुर्गति नहीं भोगता गङ्गाजल से जो रामनाथ को स्नान करावे उसका शिवजी भी सत्कार करते हैं जबतक वृद्धावस्था न प्राप्त होय इन्द्रिय शिथिल न होजायँ और मृत्यु न आपहुँचे तबतक रामेश्वरकी शरणमें प्राप्त होजाना चाहिये सब पुराण और धर्मशास्त्रों में रामेश्वरकी पूजाके तुल्य कोई धर्म नहीं है और रामेश्वर का सेवन करनेहारे पुरुष बहुत कालतक संसारसुख भोगकर अन्त में मुक्ति पाते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! यह रामनाथ का थोड़ा सा वैभव हम ने वर्णन किया जो पुरुष इसको भक्ति से पढ़े अथवा श्रवण करे वह धनुष्कोटि स्नान और रामनाथ के दर्शन करने का फल पाय सद्गति को प्राप्त होता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां रामेश्वरपूजनादिफलनिरूपणं नामत्रयश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय॥

रावण आदि के वध की कथा व रामेश्वर के स्थापन का कारण॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सर्वपुराणज्ञ, सूतजी! आपके मुख-कमल से यह सेतुमाहात्म्य और रामेश्वर का वैभव सुन हम कृतार्थ हुये अब आप यह वर्णन करें कि श्रीरामचन्द्रजी ने रामेश्वर का स्थापन किस प्रकार किया और किस समय किया यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! जिसलिये गन्धमादनपर्वत में रामचन्द्रजी ने रामेश्वर का स्थापन किया हम वर्णन करते हैं रामचन्द्रजी की भार्या सीता को रावण हरलेगया तब वानरों की सेनासहित रामचन्द्रजी महेन्द्र पर्वत पर पहुँचे और समुद्र को देखा और सेतु बांध पूर्णमासी के दिन सायंकाल के समय समुद्र पार बेलापर्वतपर पहुँचे रावण भी लङ्का में अपने महल के ऊपर बैठा था सुग्रीव ने जाकर रावण का मुकुट उतारलिया रावण भी मुकुट उतरने से लज्जित हो महल के भीतर चलागया रामचन्द्रजी ने सेना का डेरा किया तब रावण के अनुचर पर्वण, पूतना, जम्भ, खर, क्रोधवश, हरिभारुज, चारुज, प्रहस्त आदि अदृश्य होकर रामचन्द्रजी की सेना में आये परन्तु विभीषण ने उनको प्रकट करदिया इसलिये वे सब वानरों के हाथ से मारे गये यह बात रावण न सहसका इससे युद्ध करने निकला तब रामचन्द्र भी रावण के साथ युद्ध करने निकले और युद्ध होनेलगा लक्ष्मण मेघनाद का, सुग्रीव विरूपाक्ष का, अङ्गद खर्वट का, नल पौण्ड्र का, पनस पुटश का परस्पर युद्ध प्रवृत्त हुआ और भी वानर और राक्षसों का द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा वानरों ने बहुत से राक्षस मारे तब रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने रामचन्द्र और लक्ष्मण को नागपाश से बांधा उस समय गरुड़ ने आय उनको छुटाया प्रहस्त और विभीषण का युद्ध होता था प्रहस्त ने बड़े वेग से विभीषण पर गदा का प्रहार किया परन्तु विभीषण हिमालयपर्वत की भांति स्थिर रहा फिर विभीषण ने आठ घण्टाओं करके शोभित शक्ति प्रहस्तपर चलाई उसके लगते ही प्रहस्त का शिर उड़ गया और वृक्ष की भांति भूमिपर गिरा उसको गिरे देख धूम्राक्ष नाम दैत्य

वानरसेना की ओर चला उसको देख भय से वानरसेना भगी तब हनुमान् जी ने उसको मारगिराया यह सब वृत्तान्त राक्षसों ने रावण से कहा तब रावण ने कुम्भकर्ण को जगाया और युद्ध करने भेजा उसको लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र से मारा दूषण के छोटेभाई वज्रवेग और प्रमाथी हनुमान् और नील ने मारे जो रावण के तुल्य पराक्रमी थे वज्रदंष्ट्र को विश्वकर्मा के पुत्र नल ने और अकम्पन को कुमुद नाम वानर ने यमलोक को भेजा अतिकाय और त्रिशिरा को लक्ष्मण ने देवान्तक और नरान्तक को सुग्रीव ने कुम्भकर्ण के दोनों पुत्रों को हनुमान् ने मकराक्ष को विभीषण ने मारा तब रावण ने अपने पुत्र इन्द्रजित् को युद्ध की आज्ञा दी वह भी जाकर अदृश्य हो आकाश में स्थित होकर वानरों का संहार करनेलगा कुमुद, अङ्गद, सुग्रीव, नल, जाम्बवान् आदि सहित वानर भूमिपर गिरे रामचन्द्रजी को भी बड़ा क्षोभ हुआ तब विभीषण ने प्रार्थना की कि हे महाराज! कुबेर का भेजा हुआ एक यक्ष जल लेकर आया है उस जल को नेत्र में लगाने से अदृश्य भूत देख पड़ते हैं यह विभीषण का वचन सुन वह जल रामचन्द्रजी ने लिया और लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान्, अङ्गद, मैन्द, द्विविद आदि सबको दिया उन सब ने नेत्र धोये तब आकाश में इन्द्रजित् को देखा लक्ष्मण और इन्द्रजित् का घोर युद्ध होनेलगा जैसा इन्द्र और प्रह्लाद का पूर्वकाल में हुआ था तीसरे दिन लक्ष्मण ने इन्द्रजित् को मारा और उसके साथ जो सेना थी उसका वानरों ने संहार किया प्रिय पुत्र के मरजाने पर क्रोध और शोक करके पीड़ित रावण रथ में बैठ युद्ध करने आया रावण ने जानकी को मारना चाहा था परन्तु विन्ध्य ने उसको निवारण किया इतने में इन्द्र का सारथि मातलि रामचन्द्रजी के लिये रथ लाया तब रामचन्द्रजी इन्द्र के भेजेहुये उस रथ में बैठ रावण से युद्ध करनेलगे और ब्रह्मास्त्र से रावण को मारा रावण के मारने से सब ऋषि रामचन्द्रजी को आशीर्वाद देनेलगे देवता सिद्ध विद्याधर स्तुति और पुष्पवृष्टि करनेलगे रामचन्द्रजी भी लङ्का का राज्य विभीषण को दे सीता और लक्ष्मण सहित पुष्पक विमान पर चढ़ गन्धमादनपर्वत में पहुँचे वहां आय सीता का

अग्नि में शोधन किया वहांही सीता, लक्ष्मण, हनुमान्, विभीषण, सुग्रीव, अङ्गद आदि सहित रामचन्द्रजी स्थित थे तब दण्डकारण्य के सब मुनि अगस्त्यमुनि सहित वहां आये और रामचन्द्रजी की स्तुति करनेलगे ॥

मुनय ऊचुः ॥ नमस्ते रामचन्द्राय लोकानुग्रहकारिणे ॥ अरावणं जगत्कर्तुमवतीर्णाय भूतले ॥ १ ॥ ताटकादेहसंहर्त्रे गाधिजाध्वररक्षिणे ॥ नमस्ते जितमारीच सुबाहुप्राणहारिणे ॥ २ ॥ अहल्यामुक्तिसंदायिपादपङ्कजरेणवे ॥ नमस्ते हरकोदण्डलीलाभञ्जनकारिणे ॥ ३ ॥ नमस्ते मैथिलीपाणिग्रहणोत्सवशालिने ॥ नमस्ते रेणुकापुत्रपराजयविधायिने ॥ ४ ॥ सह लक्ष्मणसीताभ्यां कैकेय्यास्तु वरद्वयात् ॥ सत्यं पितृवचः कर्तुं नमोवनमुपेयुषे ॥ ५ ॥ भरतप्रार्थनादत्तपादुकायुगलाय ते ॥ नमस्ते शरभङ्गस्य स्वर्गप्राप्त्येकहेतवे ॥ ६ ॥ नमोविराधसंहर्त्रे गृध्रराजसखाय ते ॥ मायामृगमहाक्रूरमारीचाङ्गविदारिणे ॥ ७ ॥ रावणापहृतासीतायुद्धत्यक्तकलेवरम् ॥ जटायुषं तु संदह्य तत्कैवल्यप्रदायिने ॥ ८ ॥ नमः कबन्धसंहर्त्रे शबरीपूजिताङ्घ्रये ॥ प्राप्तसुग्रीवसख्याय कृतबालिवधाय ते ॥ ९ ॥ नमः कृतवनेसेतुं समुद्रे वरुणालये ॥ सर्वराक्षससंहर्त्रे रावणप्राणहारिणे ॥ १० ॥ संसाराम्बुधिसंतारपोतपादाम्बुजायते ॥ नमोभक्तार्तिसंहर्त्रे सच्चिदानन्दरूपिणे ॥ ११ ॥ नमस्ते रामभद्राय जगतामृद्धिहेतवे ॥ रामादिपुण्यनाम्ने च जगतां पापहारिणे ॥ १२ ॥ नमस्ते सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे ॥ नमस्ते करुणामूर्ते भक्तरक्षणदीक्षित ॥ १३ ॥ ससीताय नमस्तुभ्यं विभीषणसुखप्रद ॥ लङ्केश्वरवधाद्राम पालितं हि जग-

त्त्वया ॥ १४ ॥ रक्ष रक्ष जगन्नाथ पाह्यस्माञ्जानकीपते ॥

इस प्रकार मुनियों ने स्तुति की सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जो पुरुष इस स्तोत्र को तीन काल पढ़े वह भोग और मोक्ष पाता है यात्रा के समय पढ़े तो मार्ग में किसीप्रकार का भय नहीं होता इस स्तोत्र के पाठ से भूत, वेताल, रोग, पाप, दुःखआदि क्षय को प्राप्त होते हैं और पुत्र धन मोक्ष आदि सब पदार्थ इस स्तोत्र के पाठ से मिलते हैं मुनियों की कीहुई स्तुति सुन रामचन्द्रजी ने कहा कि हे मुनीश्वरो! सब जीव शुद्धि के लिये हमारी प्राप्ति चाहते हैं और जो हमारे दर्शन पावे वह मुक्त होजाता है तो भी हम भक्ति करके शान्तचित्त और जगत् के हित में प्रवृत्त साधुवों को प्रणामही करते हैं हम ब्राह्मणों के भक्त हैं इसलिये सदा ब्राह्मणों का सेवन करते हैं अब एक बात आप से पूछते हैं आप सब कृपाकरि हम से कहें पुलस्त्यमुनि के पुत्र रावण के वध से जो पाप हमको हुआ उसका आप प्रायश्चित्त बतावें जिसके करने से हम निष्पाप होजायँ यह रामचन्द्र जी का वचन सुन मुनि बोले कि हे महाराज! आप जगत्प्रभु हैं आप को कुछ पातक नहीं तो भी लोकों के कल्याण के लिये और पापकी शङ्का निवृत्त करने के अर्थ इस गन्धमादनपर्वत में आप शिवलिङ्ग स्थापन करें शिवलिङ्ग स्थापन के फल को ब्रह्माजी भी नहीं वर्णन करसक्के मनुष्य की तो क्या कथा है? आप के स्थापन किये लिङ्ग के दर्शन का फल काशी विश्वनाथ के दर्शन फल से कोटिगुणित होगा और आपके नामसे यह लिङ्ग प्रसिद्ध होगा इसलिये आप विलम्ब न करें यह मुनियों का वचन सुन हनुमान्‌को रामचन्द्रजी ने आज्ञा दी कि हे वायुपुत्र! शीघ्रही कैलास में जाय एक उत्तम शिवलिङ्ग ले आवो हनुमान्‌जी भी रामचन्द्रजी की आज्ञा पाय भुजाओं का शब्दकर गन्धमादन को कँपाय आकाश को उड़े और क्षणमात्र में कैलास पर्वतपर पहुँचे परन्तु वहां लिङ्गरूप महादेव न मिले तब लिङ्ग प्राप्ति के लिये हनुमान्‌जी ऊर्ध्वबाहु जितेन्द्रिय हो श्वास रोक कर तप करनेलगे कुछ काल के अनन्तर प्रसन्न हो शिवजी ने हनुमान् को एक उत्तम लिङ्ग दिया परन्तु हनुमान्‌जी के आगमन में विलम्ब होने

से मुनीश्वरों ने रामचन्द्र से कहा कि मुहूर्तकाल आगया और हनुमान् शिवलिङ्ग लेकर आया नहीं इसलिये सीताजी ने लीला करके जो बालू का शिवलिङ्ग बनाया है उसको आप स्थापन कीजिये यह मुनियों का वचन रामचन्द्रजी ने अङ्गीकार किया और ज्येष्ठमास शुक्ल पक्ष दशमी तिथि बुधवार हस्तनक्षत्र व्यतीपातयोग गरकरण आनन्दयोग कन्या के चन्द्र और वृष के सूर्य में सीतासहित रामचन्द्रजी ने रामेश्वरलिङ्ग का स्थापन किया और भक्ति से पूजन किया तब पार्वती सहित शिवजी ने प्रत्यक्ष हो रामचन्द्रजी से कहा कि हे रामचंद्रजी ! आप के स्थापन किये इस लिङ्ग का जो पुरुष दर्शन करेंगे वे महापातकों से निवृत्त होंगे धनुष्कोटितीर्थ में स्नान कर जो रामेश्वर का दर्शन करेंगे उनके अनेक जन्मों के पाप नाश को प्राप्त होंगे यह शिवजी ने वर दिया रामेश्वर के आगे रामचन्द्रजी ने नन्दिकेश्वर को स्थापन किया और धनुष् के अग्र करके भूमि को भेदन कर शिवजी के अभिषेक के लिये एक कूप बनाया उसका नाम धनुष्कोटि हुआ जिसका माहात्म्य पहिले वर्णन करचुके हैं उस तीर्थ के जल से शिवजी को स्नान कराया फिर सब देवता ऋषि गन्धर्व अप्सरा और वानरों ने एक २ शिवलिङ्ग स्थापन किया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! जिस प्रकार रामचन्द्रजी ने शिवलिङ्ग स्थापन किया वह हमने वर्णन किया जो इस अध्याय को पढ़े अथवा सुने वह रामेश्वर के दर्शन का फल पाय शिवसायुज्य पाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां रावणादिवधे रामेश्वरस्थापनकारणंनाम चतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

हनुमान्जी की अद्भुत कथा व हनुमान्जी के प्रति रामचन्द्रजी का ब्रह्मज्ञान उपदेश ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! उसी अवसर में हनुमान्जी भी उत्तम शिवलिङ्ग लेकर आपहुँचे और रामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि को प्रणाम किया और देखा कि रामचन्द्रजी ने शिवलिङ्ग स्थापन करदिया तब हनुमान्जी को बड़ा क्रोध हुआ और कहनेलगे कि हे

रामचन्द्रजी ! मेरा जन्म वृथा है मेरा ऐसा पुत्र किसी स्त्री के न हाय जो इतना दुःख भोगता फिरे पहिले तो आपकी सेवा में खिन्न हुआ फिर राक्षसों के साथ युद्ध में अतिदुःख भोगा और सब से यह अधिक क्लेश हुआ कि आपने मेरा अनादर किया सुग्रीव ने भार्या के लिये आपकी सेवा की और विभीषण ने राज्य के लिये परन्तु मैंने किसी प्रयोजन के लिये आप का सेवन नहीं किया विना हेतु दिनरात आपका सेवन करता हूं हजारों वानरों को बचा आपने मुझे आज्ञा दी तब मैं कैलास में गया वहां तपकर शिवजी को प्रसन्न किया और अति उत्तम शिवलिङ्ग लेकर आपके समीप पहुँचा परन्तु आप ने और ही लिङ्ग स्थापन करदिया और हमारा यह परिश्रम वृथा हुआ यह मेरा शरीर केवल भूमि का भार है मैं मन्दभाग्य इस दुःख को नहीं सहसक्ता क्या करूं और कहां जाऊं मैं शरीर त्यागता हूं तब यह अनादर का दुःख निवृत्त होगा यह कहकर हनुमान्जी रामचन्द्रजी के चरणों पर गिरपड़े तब उनका दुःख निवृत्त करने के लिये हँसकर रामचन्द्र जी कहनेलगे कि हे हनुमन् ! हम अपना और पराया सब व्यवहार जानते हैं अपने कर्मसेही जीव उत्पन्न होते हैं और मरते हैं अपने कर्मों से ही जीव नरक को जाते हैं और परमात्मा निर्गुण है हे हनुमन् ! इस प्रकार तत्त्व का निश्चय कर शोक को त्याग दे लिङ्गत्रय से मुक्त निराश्रय निराकार निरञ्जन ज्योतिःस्वरूप आत्मा को देख तत्त्वज्ञान के बाधक शोक को मतकर सदा तत्त्वज्ञान में निष्ठा रख स्वयंप्रकाश आत्मा का सदा ध्यान कर देह में ममता छोड़ धर्म को भज हिंसा को त्याग साधु पुरुषों का सेवनकर इन्द्रियों को जीत परनिन्दा को छोड़ शिव विष्णु आदि देवताओं का सदा पूजनकर सत्य बोल शोक का त्यागकर प्रत्यक् ब्रह्म की एकता जान भले बुरे की भ्रान्ति छोड़ पदार्थों को उत्तम जानने से उनमें राग उत्पन्न होता है और पदार्थों को बुरा समझने से द्वेष होता है राग द्वेष के वश में होकर जीव अनेकप्रकार के धर्म अधर्म करते हैं जिनसे देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्षआदि योनियों में जन्म लेते हैं और स्वर्ग नरक को जाते हैं जिस शरीर के स्पर्श से चन्दन अगुरु कर्पूर आदि सुगन्ध द्रव्य मल

होजाते हैं वह शरीर क्योंकर उत्तम मानाजाय भक्ष्य भोज्य पदार्थ जिसके संग से विष्ठा होजाते हैं उत्तम शीतल जल जिसके संग से मूत्र होजाता है वह शरीर क्योंकर शोभन होसक्ता है श्वेतवस्त्र जिसके संग से मलिन होजाते हैं वह शरीर शोभन किस भांति होय हे हनुमन्! इस संसारसमुद्र में कोई सुख नहीं है पहिले जीव जन्म लेकर बालक होता है पीछे तरुण और वृद्ध होकर मृत्युवश होता है और फिर जन्म लेता है अज्ञान से जीव दुःख भोगता है और ज्ञान से सुख पाता है अज्ञान का नाश कर्म से नहीं होता केवल ज्ञान से होता है ज्ञान भी वेदान्तवाक्यों करके विरक्त पुरुष को होता है और को नहीं होसक्ता ज्ञान के अधिकारी को भी गुरुकृपा से ही ज्ञान होता है जिसके हृदय से सब संकल्प निवृत्त होजायँ वह परब्रह्म को पाता है और जीवन्मुक्त होता है जागते, सोते, बैठते, चलते, भोजन करते सब अवस्थाओं में काल जीवों का ग्रास करता है सब संग्रहोंका अन्त क्षय है सब उच्चता का अन्त गिरना है सब समागमों का अन्त वियोग है इसी प्रकार जीवन का अन्त मरण है पकेहुये फलों को जिस प्रकार गिरने का भय होता है इसी भांति जीवों को मरण का भय है जिस प्रकार बहुत दृढ़ भी घर कुछ काल में जीर्ण होकर गिरजाता है इसीप्रकार शरीर भी जीर्ण होकर मृत्युवश होता है हे हनुमन्! नित्य दिन रात्रि व्यतीत होनेसे मनुष्यों की आयुर्दाय बीतती चलीजाती है इसलिये आत्मा का शोच कर और बातों का क्या शोच करताहै बैठेरहो चाहे दौड़ते फिरो आयुर्दाय तो क्षीण होतीही है मृत्यु जीवों के साथही चलता है साथ ही बैठता है दूर देश को जावों तो भी साथही जाता है शरीर में बलि पड़जाती है शिर के बाल श्वेत होजाते हैं वृद्धावस्था में श्वास कास आदि अनेक रोग देह को जीर्ण करडालते हैं जिस प्रकार समुद्र में अनेक काष्ठ इकट्ठे होजाते हैं और फिर इधर उधर बिखर जाते हैं इसीप्रकार संसार में पुत्र, स्त्री, धन, बन्धु, गृह, क्षेत्र आदि पदार्थ इकट्ठे होजाते हैं और फिर चले भी जाते हैं जिस भांति मार्ग में कई पथिक साथ होजाते हैं और थोड़ी दूर साथ चल के अपने २ रास्ते लगते हैं इसी प्रकार पुत्र स्त्री आदि का समागम है

शरीर के साथही मृत्यु भी नियत कियाजाता है मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है जीव कर्म के वश होकर एक शरीर को त्याग दूसरे को धारता है कभी प्राणियोंका वास एक स्थानमें नहीं रहसक्ता है सब अपने २ कर्मवश से वियोग को प्राप्त होते हैं शरीर केही जन्म मरण होते हैं आत्मा के नहीं होते आत्मा सदा निर्विकार है इसलिये हे कपीश्वर ! सद्रूप निर्मल ब्रह्म का चिन्तन कर तेरे किये और हमारे किये कर्म में कुछ भेद मत समझ हमने जो लिङ्ग स्थापन किया उसको तू अपने लाये लिङ्ग का स्थापन समझ तेरे आगमन में विलम्ब होनेसे हमने सीता का बनाया बालू का लिङ्ग स्थापन करदिया इसमें तू कुछ दुःख और शोक मतकर कैलास से लायेहुये लिङ्ग को तू स्थापन कर यह लिङ्ग तीन लोक में तेरे नाम से प्रसिद्ध होगा प्रथम तेरे स्थापन किये लिङ्ग का दर्शन करके सब मनुष्य रामेश्वर का दर्शन करेंगे बहुतसे ब्रह्मराक्षस तैंने मारे हैं उस पाप की निवृत्ति के लिये अपने नाम से इस लिङ्ग को स्थापन कर साक्षात् शिवजी के दिये इस लिङ्ग का दर्शन कर जे रामेश्वर का दर्शन करेंगे वे कृतकृत्य होंगे जे दूर देश में रहकर भी इन दोनों लिङ्गों का स्मरण करेंगे वे सायुज्य मुक्ति पावेंगे जे पुरुष हनुमदीश्वर और रामेश्वर का दर्शन करेंगे वे सब यज्ञ और तप का फल पावेंगे हम ने, सीता ने, लक्ष्मण ने, तैंने, सुग्रीव ने, नल ने, नील ने, जाम्बवान् ने, विभीषण ने, इन्द्रादि देवताओं ने और शेषनागादि नागों ने जे लिङ्ग स्थापन किये इन ग्यारह लिङ्गों में सदा सदाशिवका सन्निधान रहेगा इसलिये अपने पाप की शुद्धि के लिये तू भी लिङ्ग स्थापन कर और जो तू हमारे स्थापन किये लिङ्ग को उखाड़सके तो हम तेरे लाये लिङ्ग को स्थापन करें परन्तु हमारे स्थापन किये लिङ्ग को कौन उखाड़ सक्ता है इस लिङ्ग की जड़ सातो पाताल भेदनकर नीचे चलीगई है इसलिये अपने लाये लिङ्ग को तू शीघ्र स्थापन कर शोक मत कर यह रामचन्द्रजी का वचन सुन हनुमान्जी ने विचार किया कि इस बालू के लिङ्ग को उखाड़ देना क्या बड़ी बात है इसलिये इसको उखाड़ अभी अपने लाये हुये लिङ्ग को स्थापन करता हूं यह मन में विचार सब

देवता मुनि वानर आदि के और रामचन्द्र लक्ष्मण सीताजी के देखते २ हनुमान्‌जी ने दोनों हाथों से उस लिङ्ग को पकड़ा और उखाड़ने के लिये बहुत बल किया परन्तु वह लिङ्ग न हिला तब किलकिला शब्द करके और पूंछ को भूमि में पटककर सब बल लगाया तौभी वह लिङ्ग न हिला फिर पूंछ में लिङ्ग को लपेट और दोनों हाथ भूमि पर रख आकाश को हनुमान् जी उछले तब सातों द्वीपों सहित पृथ्वी कांपउठी परन्तु लिङ्ग नहीं उखड़ा और हनुमान्‌जी का पुच्छ लिङ्ग से छूटगया इसलिये एक कोसपर हनुमान्‌जी गिरे और उनके आंख, नाक, कान, मुख और गुदा से रुधिर गिरनेलगा उस रुधिर से रक्तकुण्ड बना हनुमान्‌जी को इस प्रकार गिरे देख सब जगत् में हाहाकार हुआ और रामचन्द्रजी लक्ष्मण सीता और वानरों सहित दौड़कर हनुमान्‌जी के समीप गये उस समय गन्धमादनपर्वत में राम लक्ष्मण ऐसे शोभित थे मानो रात्रि के समय तारागणों करके युक्त सूर्य और चन्द्रमा शोभित होयँ जायके हनुमान्‌जी को देखा कि मूर्च्छित हुये पड़े हैं और मुख से रुधिर बहता है शरीर चूर्ण होगया है उनको देख सब वानर हाहाकार कर मूर्च्छित हुये सीता ने अपने हाथ से हनुमान्‌जी को स्पर्श किया और रामचन्द्रजी हनुमान् को अपनी गोद में सुलाय अश्रुपात करते हुये हनुमान्‌जी के अङ्गों पर हाथ फेरनेलगे ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां हनुमत्कथानकंनामपञ्चचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय ॥

हनुमान्‌जी को रामचन्द्रजी ने जिसप्रकार आश्वासन किया उसका वर्णन
हनुमान्‌जी का किया रामस्तोत्र और सीतास्तोत्र हनुमत्कुण्ड
और हनुमदीश्वर महादेव का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! रामचन्द्रजी कहनेलगे कि हे हनुमन् ! पम्पासर के तटपर हम दीनदशा को प्राप्त होरहे थे उस समय तैंने हमारा आश्वासन किया और सुग्रीव से मैत्री कराई तेरे को देख हम माता पिता का भी स्मरण नहीं करते तैंने हमारे ऊपर अनेक उपकार किये हमारे प्रयोजन के लिये समुद्र उतरा मैनाकपर्वत को तलप्रहार किया नागों की माता सुरसा को जीता महाक्रूर छाया ग्रहण करनेवाली

राक्षसी को मारा सायंकाल के समय सुवेलपर्वत पर पहुँच लङ्का को जीत रावण के महल में गया निर्भय होकर सारी रात्रि लङ्का में सीता को ढूंढ़ा कहीं सीता न देखी तब अशोकवनिका में गया वहां सीता को सन्देश दे और हमारे लिये सीता से चूड़ामणि लेकर अशोकवनिका के वृक्षों को तोड़ा और अस्सीहजार किन्नर नाम राक्षसों को हमारे अर्थ मारा जो राक्षस अतिबली थे फिर प्रहस्त के पुत्र जम्बुमाली को सात मन्त्रिपुत्रों को पांच सेनापतियों को और रावण के पुत्र अक्ष को तैंने युद्ध में मारा तब इन्द्रजित् तुझे बांधकर रावण की सभा में लेगया वहां तैंने रावण का अति अनादर किया और लङ्कापुरी को भस्म करके फिर ऋष्यमूकपर्वत में पहुँचा हे हनुमन्! हमारे अर्थ तैंने बहुत क्लेश भोगे अब तू भूमिपर गिरा है इसलिये हमको बहुत शोक है हे हनुमन्! जो तू मरजायगा तो हम भी अभी प्राण त्यागेंगे फिर हम को सीता से और लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न से तथा राज्य से कुछ प्रयोजन नहीं हे वत्स! शीघ्र उठ हमारे भोजन के लिये कन्दमूल ले आ स्नान के लिये जल का कलश ला और हमारे शयन के लिये शय्या बिछाय मृगचर्म और दर्भ हमारे लिये ले आ ब्रह्मास्त्र से बँधेहुये हमको तैंने छुटाया औषध लाकर लक्ष्मण को जीवदान दिया तेरी सहायता से हमने रावण कुम्भकर्ण आदि बड़े पराक्रमी राक्षसों को मारा और सीता प्राप्त हुई हे वायुपुत्र! हे सीताशोकनाशक! हमको लक्ष्मण को और जानकी को अयोध्या में पहुँचाये विनाही क्यों त्याग करता है इस भांति हनुमान् का मुख देखतेहुये और दीन वचन कहतेहुये रामचन्द्रजी अश्रुपात करनेलगे और इतना अश्रुपात किया कि हनुमान् का शरीर आर्द्र होगया धीरे २ हनुमान् की भी मूर्च्छा खुली और देखा कि साक्षात् नारायण रावण के भय से लोकरक्षा के अर्थ मनुष्यरूप धारे जानकी लक्ष्मण करके सहित वानरों करके वेष्टित नीलमेघ के समान जिनका वर्ण कमल से नेत्र जटामण्डल करके शोभित देवता ऋषि पितर आदि करके स्तुत अतिदयालु श्री रामचन्द्रजी मुझे गोद में लिये बैठे हैं तब हनुमान्जी उठे और रामचन्द्रजी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम करके हाथ जोड़ भक्ति से स्तुति करनेलगे॥

हनुमानुवाच॥ नमो रामाय हरये विष्णवे प्रभविष्णवे॥ आदिदेवाय देवाय पुराणाय गदाभृते॥ १॥ विष्टरे पुष्पके नित्यं निविष्टाय महात्मने॥ प्रहृष्टवानरानीकजुष्टपादाम्बुजाय ते॥ २॥ निष्पिष्टराक्षसेन्द्राय जगदिष्टविधायिने॥ नमः सहस्रशिरसे सहस्रचरणाय च॥ ३॥ सहस्राक्षाय शुद्धाय राघवाय च विष्णवे॥ भक्तार्तिहारिणे तुभ्यं सीतायाः पतये नमः॥ ४॥ हरये नारसिंहाय दैत्यराजविदारिणे॥ नमस्तुभ्यं वराहाय दंष्ट्रोद्धृतवसुंधर॥ ५॥ त्रिविक्रमाय भवते बलियज्ञविभेदिने॥ नमो वामनरूपाय महामन्दरधारिणे॥ ६॥ नमस्ते मत्स्यरूपाय त्रयीपालनकारिणे॥ नमः परशुरामाय क्षत्रियान्तकराय ते॥७॥ नमस्ते राक्षसघ्नाय नमो राघवरूपिणे॥ महादेवमहाभीममहाकोदण्डभेदिने॥ ८॥ क्षत्रियान्तकरक्रूरभार्गवत्रासकारिणे॥ नमोऽस्त्वहल्यासन्तापहारिणे चापहारिणे॥ ९॥ नागायुतबलोपेतताटकादेहदारिणे॥ शिलाकठिनविस्तारबालिवक्षोविभेदिने॥ १०॥ नमो मायामृगोन्मादकारिणेऽज्ञानहारिणे॥ दशस्यन्दनदुःखाब्धिशोषणागस्त्यरूपिणे॥ ११॥ अनेकोर्मिसमाधूतसमुद्रमदहारिणे॥ मैथिलीमानसाम्भोजभानवे लोकसाक्षिणे॥ १२॥ राजेन्द्राय नमस्तुभ्यं जानकीपतये हरे॥ तारकब्रह्मणे तुभ्यं नमो राजीवलोचन॥ १३॥ रामाय रामचन्द्राय वरेण्याय सुखात्मने॥ विश्वामित्रप्रियायेदं नमः खरविदारिणे॥ १४॥ प्रसीद देवदेवेश भक्तानामभयप्रद॥ रक्ष मां करुणासिन्धो रामचन्द्र नमोऽस्तु ते॥ १५॥ रक्ष मां वेदवचसामप्यगोचर राघव॥

पाहि मां कृपया राम शरणं त्वामुपैम्यहम् ॥ १६ ॥ रघुवीर महामोहमपाकुरु ममाधुना ॥ स्नाने चाचमने भुक्तौ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु ॥ १७ ॥ सर्वावस्थासु सर्वत्र पाहि मां रघुनन्दन ॥ महिमानन्तव स्तोतुं कः समर्थो जगत्त्रये ॥ १८ ॥ त्वमेव त्वं महत्त्वं वै जानासि रघुनन्दन ॥

इस प्रकार रामचन्द्रजी की स्तुति करके हनुमान्जी सीताजी की स्तुति करनेलगे ॥

हनुमानुवाच ॥ जानकि त्वा नमस्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ दारिद्र्यदुःखसंहर्त्रीं भक्तानामिष्टदायिनीम् ॥ १ ॥ विदेहराजतनयां राघवानन्दकारिणीम् ॥ भूमेर्दुहितरं विद्यां नमामि प्रकृतिं शिवाम् ॥ २ ॥ पौलस्त्यैश्वर्यसंहर्त्रीं भक्ताभीष्टां सरस्वतीम् ॥ पतिव्रताधुरीणां त्वां नमामि जनकात्मजाम् ॥ ३ ॥ अनुग्रहपरामृद्धिमनघां हरिवल्लभाम् ॥ आत्मविद्यात्रयीरूपामुमारूपां नमाम्यहम् ॥ ४ ॥ प्रासादाभिमुखां लक्ष्मीं क्षीराब्धितनयां शुभाम् ॥ नमामि चन्द्रभगिनीं सीतां सर्वाङ्गसुन्दरीम् ॥ ५ ॥ नमामि धर्मनिलयां करुणां वेदमातरम् ॥ पद्मालयां पद्महस्तां विष्णुवक्षस्स्थलालयाम् ॥ ६ ॥ नमामि चन्द्रनिलयां सीतां चन्द्रनिभाननाम् ॥ आह्लादरूपिणीं सिद्धिं शिवां शिवकरीं सतीम् ॥ ७ ॥ नमामि विश्वजननीं रामचन्द्रेष्टवल्लभाम् ॥ सीतां सर्वानवद्याङ्गीं भजामि सततं हृदा ॥ ८ ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! इस प्रकार भक्ति से हनुमान्जी सीता और रामचन्द्रजी की स्तुतिकर आनन्द से अश्रुपात करतेहुये मौन होगये हनुमान्जी के किये इन दोनों स्तोत्रों को जो पुरुष भक्ति से पढ़े वह

बड़ा ऐश्वर्य पाता है धन, धान्य, क्षेत्र, दूध देनेहारी गौ, आयुर्दाय, विद्या, पुत्र, उत्तम स्त्री और सद्गति इस स्तोत्र के पाठ से प्राप्त होती हैं इस स्तोत्र के पाठ से ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं नरक का भय नहीं होता देहान्त होनेपर मुक्ति मिलती है रामचन्द्रजी हनुमान्‌जी की की हुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे वायुपुत्र ! तुमने अज्ञान से यह साहस किया इस लिङ्ग को ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रआदि देवता भी नहीं उखाड़सक्ते महादेवजी की अवज्ञा करने से तुम मूर्च्छित होकर गिरे फिर कभी सदाशिव से द्रोह मत करना आज से लेकर यह कुण्ड तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा इस कुण्ड में स्नान करने से महापातकों का नाश होगा महादेवजी की जटा से गोदावरी नदी निकली है उसमें स्नान करने से हज़ार अश्वमेध का फल होता है उससे सौगुणा अधिक पुण्य सरस्वती यमुना और गङ्गा में स्नान करने से होता है जहां ये तीनों मिली हैं अर्थात् प्रयाग में वहां स्नान करने से सहस्रगुण पुण्य होता है उतनाही पुण्य इस तुम्हारे कुण्ड में स्नान करने से प्राप्त होगा मनुष्यजन्म पाय हनुमत्कुण्ड के तीर जो पुरुष श्राद्ध न करे उसके पितर निराश होकर जाते हैं और उस पुरुष पर देवता ऋषि और पितरों का कोप होता है हनुमत्कुण्ड के तीरपर जो हवन और दान न करे उसका जीवन वृथा है और वह दोनों लोकों में दुःख पाता है जो पुरुष हनुमत्कुण्ड के तीर जल और तिलों से पितरों का तर्पण करे उसके पितर आनन्द को प्राप्त होते हैं और घृतकुल्या पीते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! रामचन्द्रजी का यह वचन सुन और उनकी आज्ञा पाय रामेश्वर के उत्तरभाग में हनुमान्‌जी का लायाहुआ लिङ्ग स्थापन किया रामेश्वरलिङ्ग में हनुमान्‌जी की पूंछ लपेटने के तीन चिह्न अद्यापि देख पड़ते हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! जिसप्रकार रामचन्द्रजी ने रामेश्वर का स्थापन किया वह हमने वर्णन किया जो पुरुष इस अध्याय को पढ़े अथवा सुने वह सब पापों से छूट शिवलोक को जाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां हनुमदीश्वरमाहात्म्यनिरूपणंनाम षट्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

रावण के जन्मआदि का वर्णन और रामचन्द्रजी को रावण के वध करने से ब्रह्महत्या लगने का वर्णन॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी! रावण राक्षस के मारने से रामचन्द्रजी को ब्रह्महत्या क्यों लगी ब्रह्महत्या तो ब्राह्मण के वध करने से लगती है रावण तो ब्राह्मण था ही नहीं फिर क्योंकर उसके वध से रामचन्द्रजी को हत्या लगी यह आप वर्णन करें तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो! ब्रह्माजी के पुत्र पुलस्त्य और पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा हुये विश्रवामुनि ने बहुत काल अतिदुष्कर तप किया उस काल में बड़ा पराक्रमी सुमाली नाम दैत्य अतिरूपवती अपनी कन्या को साथ लिये पाताल से आय भूमिपर बिचरता था उसने विश्रवा के पुत्र कुबेर को पुष्पकविमान में बैठे देखा और मनमें विचार किया कि ऐसा भाग्यशाली पुत्र हमारे भी होय तो हमारी वृद्धि सब प्रकार से होय यह मन में विचारकर अपनी पुत्री कैकसी से कहा कि हे पुत्रि! अब तू यौवन में प्राप्त हुई इसलिये तेरा विवाह होना चाहिये तरुण कन्या का विवाह न करने से माता पिता दुर्गति को प्राप्त होते हैं प्रत्याख्यान के भय से कोई तुझे मांगता नहीं कौन वर तुझे वरेगा यह मैं नहीं जानता अब ब्रह्माजी के पौत्र और पुलस्त्यमुनि के पुत्र विश्रवामुनि को तू आप जाय के वर ले जिससे कुबेर के तुल्य पुत्र तेरे भी होय यह पिता का वचन सुन कैकसी विश्रवामुनि की कुटी में गई और लज्जासे मुख नीचे कर बैठगई उस सन्ध्याकाल में विश्रवामुनि अग्निहोत्र करते थे उन्होंने अतिरूपवती कैकसी को देख पूछा कि हे भद्रे! तू किसकी पुत्री है और किस कार्य के लिये यहां आई है यह सब यथार्थ कह तब कैकसी बड़ी विनय से हाथजोड़ नम्र हो कहनेलगी कि हे महाराज! आप तप के प्रभाव से मेरा सब अभिप्राय जानते हैं मैं सुमाली दैत्य की कन्या कैकसी हूं और पिता की आज्ञा से आपके समीप आई हूं और मेरा अभिप्राय आप जानलेवें यह कैकसी का वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर

विश्रवामुनि ने कहा कि हे कैकसि ! तेरा अभिप्राय हमने जाना तू पुत्र के लिये हमारे पास आई है परन्तु तू इस अतिदारुण सन्ध्याकाल में हमारे समीप आई इसलिये अतिक्रूर राक्षस तेरे पुत्र उत्पन्न होंगे यह मुनि का वचन सुन फिर कैकसी ने विनय से प्रार्थना की कि हे महाराज! आपके संग से तो ऐसे पुत्र न उत्पन्न होने चाहिये तब फिर मुनि ने कहा कि अच्छा सब से पिछला पुत्र हमारे वंश के योग्य धर्मात्मा और शास्त्रवेत्ता होगा यह मुनि का वचन सुन प्रसन्न हो कैकसी वहां रही और कुछ काल के अनन्तर उसके एक अतिभयंकर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके दश शिर बीस भुजा बड़ी २ दाढ़ लालरंग के केश अतिकृष्ण वर्ण बड़ा शरीर था उसका नाम विश्रवामुनि ने रावण रक्खा फिर कुम्भकर्ण उत्पन्न हुआ वह रावण से भी अधिक क्रूर था पीछे शूर्पणखा नाम अतिक्रूरा राक्षसी कैकसी के गर्भ से उत्पन्न हुई सबके पीछे बड़ा धार्मिक और शास्त्रवेत्ता विभीषण उत्पन्न हुआ रावण कुम्भकर्ण आदि विश्रवामुनि के पुत्र थे इसलिये उनके मारने से रामचन्द्रजी को ब्रह्महत्या लगी उस हत्या की निवृत्ति के लिये रामचन्द्रजी ने वैदिकविधान से रामेश्वर का स्थापन किया रामचन्द्रजी ने भी रामेश्वरलिङ्ग को स्थापनकर अपने को कृतार्थ माना जहां रामचन्द्र जी की ब्रह्महत्या निवृत्त हुई वहां ब्रह्महत्याविमोचन नाम तीर्थ हुआ वहां स्नान करने से ब्रह्महत्या निवृत्त होती है उस तीर्थ के समीप छायारूप रावण अबतक देख पड़ता है उसके आगे एक नागलोक का बिल है रामचन्द्रजी ने उस हत्या को नागलोक के बिलमें प्रवेश करादेया और उस बिलके ऊपर मण्डप बनाय भैरव को स्थापन किया भैरव के भय से ब्रह्महत्या बिल के बाहर न निकलसकी निरुद्यम होकर बैठगई रामेश्वरलिङ्ग के दक्षिणभाग में पार्वतीजी हैं लिङ्ग के दोनों ओर सूर्य और चन्द्र हैं सम्मुखभाग में अग्नि निवास करता है आठो दिक्पाल, अपनी २ दिशा में रामनाथ के सेवन के लिये स्थित हैं गणपति कार्त्तिकेय और वीरभद्रआदि गण रामेश्वर के आसपास विद्यमान हैं सब देवता, मुनि, नाग, सिद्ध, गन्धर्व, अप्सरा आदि रामेश्वर की सेवा के लिये भक्तिपूर्वक वहां निवास करते हैं बहुतें

से वेदवेत्ता ब्राह्मण रामचन्द्रजी ने रामेश्वर का पूजन करने के लिये वहां नियुक्त किये उन ब्राह्मणों का भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि से अवश्य पूजन करना चाहिये उन ब्राह्मणों के प्रसन्न होने से देवता मुनि और पितर सन्तुष्ट होते हैं उन ब्राह्मणों को बहुत से ग्राम रामचन्द्रजी ने दिये और रामेश्वर के भोग के लिये बहुत सा धन और हज़ारों ग्राम भूषण वस्त्र रत्न वाहन आदि रामचन्द्रजी ने दिये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! रामेश्वर का प्रभाव कहांतक वर्णन करें गङ्गा यमुना भी अपना पाप निवृत्त करने के अर्थ निरन्तर जिनका सेवन करती हैं इस अध्याय को जो पुरुष भक्ति से पढ़े अथवा सुने वह विष्णुसायुज्य पाता है॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां रावणवधे रामस्य ब्रह्महत्यास्पर्शनंनाम सप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः॥ ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

पाण्ड्यदेश के शङ्करनाम राजा और शाकल्यमुनि की कथा रामेश्वरप्रशंसा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! रामनाथ के प्रभाव की एक कथा हम वर्णन करते हैं जिसके श्रवण करने से सब पातक दूर होजायँ पूर्वकाल बिषे पाण्ड्य देश में एक शङ्कर नाम राजा हुआ है वह बड़ाधार्मिक ब्रह्मण्य यज्ञकरनेहारा सत्यप्रतिज्ञ वेदवेदाङ्ग जाननेहारा वैदिकधर्म में तत्पर चारो वर्ण और आश्रमों की रक्षा में सावधान शिव विष्णु आदि देवताओं का पूजक और बड़ा दानी था वह एक दिन सिंह व्याघ्र महिष सूकर आदि जीवों से भरे वन में मृगया खेलनेगया और सेनासहित वन में जाय मृगों को मारनेलगा सेना के मनुष्य भी सिंह आदि जीवों को मारते थे उस वन में गुफ़ाके बीच एक शान्तचित्त मुनि व्याघ्रचर्म ओढ़े समाधि लगाये बैठे थे और उनकी पत्नी भी सेवा के लिये मुनि के समीप थी राजा ने जाना कि कोई व्याघ्र गुफ़ा में बैठा है यह जान एक बाण ऐसा मारा कि मुनि और मुनिपत्नी की देह में पार होगया तब उनका एक बालक था वह विलाप करनेलगा कि हे मातः! हे पितः! मुझ को छोड़ तुम कहां गये मैं किसकी शरण जाऊं मुझे कौन पढ़ावेगा भोजन कौन देगा आचार

कौन सिखावेगा और हे मातः! तेरी भांति मेरा लालन कौन करेगा विना अपराध किस दुष्ट ने तुम को मारदिया इसप्रकार ऊंचेस्वर से विलाप करने लगा उसका शब्द सुन राजा वहां गया और सब मुनि वहां आय एकत्र हुये मुनीश्वरों ने देखा कि मुनि और मुनिपत्नी मरे पड़े हैं और बालक विलाप कररहा है तब सब उसका आश्वासन करनेलगे कि हे बालक! धनवान्, दारिद्र्य, मूर्ख, पण्डित, पुष्ट, कृश, दुर्जन, सज्जनआदि चाहे जैसा पुरुष होय मृत्युसे कोई नहीं बचता वन, पर्वत, नगर, ग्राम आदि किसी स्थल में रहो वहीं मृत्यु जाय पहुँचती है हे वत्स! गर्भ में स्थित कोई मृत्युवश होते हैं कोई जन्मते ही मरजाते हैं कितने बाल्यावस्थामें मृतक होते हैं कोई तरुण होकर और कोई वृद्ध होकर यमलोक को जाते हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और यति सब मृत्यु के वश होते हैं कोई बच नहीं सक्ता ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता, गन्धर्व, नाग, राक्षस और भी सब जीव विलय होजाते हैं इसलिये हे बालक! तू माता पिता के मरने से शोक मत कर एक सच्चिदानन्द परब्रह्म का जन्ममरण नहीं होता और वह न घटता है न बढ़ता यह देह नव छिद्रों करके युक्त मल का भाण्ड है रुधिर पूय विष्ठा मूत्र आदि से भरा है जलबुद्बुद के तुल्य क्षणभंगुर है काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य, हिंसा, असूया, अशौच आदि का निवास स्थान है इस देह को जे पुरुष उत्तम समझैं वे मूढ़ और दुर्बुद्धि हैं अनेक छिद्रों करके युक्त घट के तुल्य यह देह है इसमें प्राणरूप पवन इतने दिन रुकारहा यही आश्चर्य है हे बालक! माता पिता का शोक मतकर वे तो अपने कर्म के वश हो देह को त्यागगये और तू कर्मवश से यहां विद्यमान है जब तेरे कर्म क्षय होंगे तब तू भी मृत्यु के वश होगा जिस काल में तेरे माता पिता उत्पन्न हुये उस समय तू नहीं उत्पन्न हुआ था इस लिये तेरा गमन उनके साथ क्योंकर होसक्ता है जो तेरी उनकी गति तुल्य होय तो जहां वे गये वहां तू भी जासक्ता है मृतक पुरुषों के बान्धव जो अश्रुपात करते हैं वह परलोक में मृतक पुरुषों को पान करने पड़ते हैं इस कारण रोदन मतकर धैर्य धर और इनका प्रेतकार्य वैदिकविधान से कर

इन दोनों की मृत्यु बाण लगने से हुई है इसलिये इनके अस्थि रामेश्वर क्षेत्र में रामसेतु के समीप डाल और वहांहीं इनका सपिण्डीकरण आदि कर तब यह अपमृत्युदोष निवृत्तहोगा यह वचन सब मुनियों का सुन उस शाकल्यमुनि के पुत्र जाङ्गल ने अपने माता पिता का पितृमेध किया दूसरे दिन उनके अस्थि लेकर हालास्यक्षेत्र में पहुँचा और कुछ दिन में रामेश्वरक्षेत्र में जाय पहुँचा वहां रामसेतु के समीप माता पिता के अस्थि डाले और एक वर्ष वहां रहकर सब कृत्य किया वर्ष समाप्ति में मुनिपुत्र ने स्वप्न देखा कि उसके माता पिता चतुर्भुज हो शंख, चक्र, गदा, पद्म धारे गरुड़ पर चढ़े तुलसी की माला और कौस्तुभमणि से भूषित देख पड़े उनको देख मुनिपुत्र बहुत प्रसन्न हुआ और अपने आश्रम में पहुँच सब वृत्तान्त उन मुनीश्वरों से कहा मुनि भी सुनकर प्रसन्न हुये परन्तु सब ने राजा शङ्कर से कहा कि हे पाण्ड्य देश के राजन्! तैंने क्रूरता और मूर्खता से स्त्रीहत्या और ब्राह्मणहत्या की इसलिये तू अग्नि में प्रवेशकर और किसी प्रकार से तेरी शुद्धि नहीं चाहे जितने प्रायश्चित्त कर तेरे सम्भाषण से हजारों ब्रह्महत्या लगती हैं इसलिये हे दुष्ट! तू हमारे आगे से चला जा यह मुनियों का वचन सुन राजा बोला कि हे मुनीश्वरो! आप मुझपर अनुग्रह करो मैं अभी अग्नि में प्रवेश करता हूं इतना कह राजा ने अपने मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि हे मन्त्रियो! मुझ से ब्रह्महत्या और स्त्रीहत्या अज्ञान से बनपड़ी उसकी निवृत्ति के लिये मुनियों की आज्ञा से मैं अग्नि में प्रवेश करूंगा इसलिये काष्ठ लाकर मुझे चिता बना दो और मेरे पुत्र सुरुचि को गद्दीपर बैठा दो इस बात का कुछ शोक भी मत करो दैव बलवान् है यह राजा का वचन सुन मन्त्री रोदन करनेलगे और बोले कि हे महाराज! आप ने हम को पुत्रवत् पालन किया अब आपके विना हम नगर में प्रवेश न करेंगे हम भी आपके आगे ही अग्नि में प्रवेश करेंगे यह मन्त्रियों का वचन सुन राजा ने कहा कि हे मन्त्रियो! मुझ ऐसे महा-पातकी के साथ दग्ध होना उचित नहीं और मैं अब राजसिंहासन के योग्य नहीं अब तुम सुरुचि को सिंहासन पर बैठाय उसकी सेवा में रहो और मेरे

लिये शीघ्रही चिता बना दो विलम्ब मत करो यह राजाकी दृढ़ आज्ञा पाय मन्त्रियों ने चिता बनाय अग्नि प्रज्वलित की राजा ने अग्नि को प्रज्वलित देख स्नान किया और अग्नि तथा मुनीश्वरों की प्रदक्षिणाकर हृदय में साम्ब सदाशिव का ध्यान करता हुआ राजा अग्नि में प्रवेश करनेलगा तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! अग्नि में प्रवेश मत कर ब्रह्महत्या निवृत्ति के लिये मैं तुझे उपाय बताता हूं सावधान होकर सुन दक्षिण समुद्र के तीर गन्धमादनपर्वत में रामचन्द्रजी के स्थापन किये रामेश्वर के लिङ्ग का एक वर्ष पर्यन्त तीन काल सेवन कर प्रदक्षिणा नमस्कार महाभिषेक आदि कर भांति २ के नैवेद्य लगाय चन्दन अगरु कर्पूर आदि से लिङ्ग का पूजन कर दोभार गोघृत दोभार गोदुग्ध और द्रोणभर शहद से नित्य रामेश्वर का अभिषेक कर पायस का नैवेद्य लगाय और तिलतैल से नित्य दीपक प्रज्वलित कर इसप्रकार रामेश्वर का सेवन करने से स्त्री-हत्या और ब्रह्महत्या निवृत्त होजायगी रामेश्वर का दर्शन करने से सौ भ्रूणहत्या और सुरापान, सुवर्णस्तेय, गुरुस्त्रीगमन, ब्रह्महत्या आदि हज़ारों महापातक तत्क्षण निवृत्त होजाते हैं रामेश्वर की सेवा न बनपड़े तो गया प्रयाग आदि तीर्थों से कुछ प्रयोजन नहीं इसलिये हे राजन्! शीघ्र जाकर रामनाथ की सेवा कर विलम्ब मत करो इतना कह आकाशवाणी बन्द होगई सब मुनियों ने राजा से कहा कि हे महाराज ! आप शीघ्र रामेश्वर को जावो हमने रामेश्वर का माहात्म्य विना जाने आपको यह प्रायश्चित्त बतलाया यह मुनियों का वचन सुन प्रसन्न हो थोड़ी सी सेना साथ ले राजा रामेश्वर को चला वहां पहुँच जितेन्द्रिय और जितक्रोध हो एकबार भोजन का नियम कर तीनकाल रामेश्वर का सेवन करनेलगा दशभार सुवर्ण रामनाथ के अर्पण किया नित्य रामेश्वर का महापूजन करता और नियम से धनुष्कोटि में स्नान कर ब्राह्मणों को दान देता इसप्रकार आकाशवाणी की आज्ञानुसार एक वर्ष पर्यन्त राजा ने उग्र तप किया वर्ष के अन्त में भक्तिपूर्वक राजा शङ्कर शिवजी की स्तुति करनेलगा ॥

शङ्कर उवाच ॥ नमामि रुद्रमीशानं रामनाथमुमापति-

म् ॥ पाहि मां कृपया देव ब्रह्महत्यां दहाशु मे ॥ १ ॥ त्रिपुरघ्न महादेवकालकूटविषादन ॥ रक्ष मां त्वं दयासिन्धो ब्रह्महत्यां विमोचय ॥ २ ॥ गङ्गाधर विरूपाक्ष रामनाथ त्रिलोचन ॥ मां पालय कृपादृष्ट्या छिन्धि मत्पातकं विभो ॥ ३ ॥ कामारे कामसंदायिन् भक्तानां राघवेश्वर ॥ कटाक्षं पातय मयि शुद्धं मां कुरु धूर्जटे ॥ ४ ॥ मार्कण्डेयभयत्राण मृत्युञ्जय शिवाऽव्यय ॥ नमस्ते गिरिजार्धाय निष्पापं कुरु मां सदा ॥ ५ ॥ रुद्राक्षमालाभरण चन्द्रशेखर शङ्कर ॥ वेदोक्त-सम्यगाचारयोग्यं मां कुरु ते नमः ॥ ६ ॥ सूर्यदन्तभिदे तुभ्यंभारतीनासिकाच्छिदे ॥ रामेश्वरायदेवाय नमो मे शुद्धिदोभव ॥ ७ ॥ आनन्दं सच्चिदानन्दं रामनाथं वृषध्वजम् ॥ भूयो भूयो नमस्यामि पातकं मे विनश्यतु ॥ ८ ॥ इति ॥

इसप्रकार स्तुति करते २ राजा के मुख से अतिभयंकर ब्रह्महत्या निकली जिसका नीलवस्त्र रक्तकेश अतिक्रूर स्वरूप था उस ब्रह्महत्या को शिवजी की आज्ञा से भैरवजी ने मारदिया और रामेश्वर भगवान् ने प्रसन्न होकर राजा से कहा कि हे राजन् ! तेरे इस स्तोत्र से हम बहुत प्रसन्न हैं जो वर चाहे मांग जो दोष स्त्रीहत्या और ब्रह्महत्या का तुझको लगा था वह निवृत्त होगया अब पूर्ववत् राज्यकर जो पुरुष हमारी सेवा करते हैं हम उनके ब्रह्महत्याआदि पातक निवृत्त करदेते हैं हमारे सेवन करनेहारे मनुष्य जन्म मरण से छूटजाते और अन्त में सायुज्यमुक्ति पाते हैं और जो इस स्तोत्र से हमारी स्तुति करेंगे उनके सब पातक निवृत्त करदेंगे हे राजन् ! तेरी भक्ति और स्तुतिसे हम प्रसन्न हुये वर मांग यह शिवजी की आज्ञा पाय राजा ने प्रार्थना की कि हे नाथ ! आपके दर्शन सेही मैं कृतार्थ हुआ अब क्या वर मांगूं मार्कण्डेय का भय हरनेहारे आपके चरणारविन्द का दर्शन किया अब और वर नहीं चाहता आपके चरणों में दृढ़ भक्ति होय

और जन्म मरण से छूटजाऊं और जो मनुष्य मेरे किये इस स्तोत्र को पढ़ें वे आपकी सेवा का फल पाय सब पापों से छूटें सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! शिवजी ने ये सब वर राजा को दिये और रामनाथलिङ्ग में आप अन्तर्धान हुये राजा भी कृतार्थ हो रामनाथ को प्रणामकर अपनी सेना सहित राजधानी को चला मार्ग में सब मुनीश्वरों से यह वृत्तान्त कहा तब मुनीश्वरों ने राजा का अभिषेक किया राजा भी राजधानी में आय पुत्र और मन्त्रियों सहित धर्मराज्य करनेलगा बहुत काल राज्य कर अन्त में रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त हुआ हे मुनीश्वरो ! राजा का चरित और रामनाथ का प्रभाव हमने वर्णन किया इस अध्याय को जो भक्ति से पढ़े अथवा श्रवण करे वह रामनाथ के सायुज्य को प्राप्त होता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां नृपशङ्करशाकल्यमुनिकथानकं नामाष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

उंचासवां अध्याय ॥

रामचन्द्र लक्ष्मणआदि के किये रामेश्वर महादेव के अनेक स्तोत्र ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अब हम रामनाथ के स्तोत्र वर्णन करते हैं आप श्रद्धा से श्रवण करो रामेश्वर का स्थापन कर रामचन्द्रजी ने, लक्ष्मण ने, सीता ने , सुग्रीवआदि वानरों ने, अगस्त्यआदि ऋषियों ने और ब्रह्माआदि देवताओं ने जो स्तुति की है हम क्रमपूर्वक कथन करते हैं जिनके श्रवणमात्र से मनुष्य मुक्त होजाय ॥

श्रीराम उवाच ॥ नमो महात्मने तुभ्यं महामायाय शूलिने ॥ स्वपदाम्बुजभक्तार्तिहारिणे सर्पहारिणे ॥ १ ॥ नमो देवाधिदेवाय रामनाथाय साक्षिणे ॥ नमो वेदान्तवेद्याय योगिनां तत्त्वदायिने ॥ २ ॥ सर्वदानन्दपूर्णाय विश्वनाथाय शंभवे ॥ नमो भक्तभयच्छेदहेतुपादाब्जरेणवे ॥ ३ ॥ नमस्तेऽखिलनाथाय नमः साक्षात्परात्मने ॥ नमस्तेऽद्भुतवीर्याय महापातकनाशिने ॥ ४ ॥ कालकालाय कालाय काला-

तीताय ते नमः॥ नमोऽविद्यानिहन्त्रे ते नमः पापहराय च॥ ५॥ नमः संसारतप्तानां तापनाशैकहेतवे॥ नमो मद्-ब्रह्महत्याविनाशिने च विषाशिने॥६॥ नमस्ते पार्वतीनाथ कैलासनिलयाऽव्यय॥ गङ्गाधर विरूपाक्ष मां रक्ष सकला-पदः॥ ७॥ तुभ्यं पिनाकहस्ताय नमो मदनहारिणे॥ भूयो भूयो नमस्तुभ्यं सर्वावस्थासु सर्वदा॥ ८॥ इति॥

यह स्तोत्र रामचन्द्रजी ने किया अब लक्ष्मणजी का किया स्तोत्र कहते हैं॥

लक्ष्मण उवाच॥ नमस्ते रामनाथाय त्रिपुरघ्नाय शंभवे॥ पार्वतीजीवितेशाय गणेशस्कन्दसूनवे॥ १॥ नमस्ते सूर्यचन्द्राग्निलोचनाय कपर्दिने॥ नमः शिवाय सोमाय मार्कण्डेयभयच्छिदे॥ २॥ नमःसर्वप्रपञ्चस्य सृष्टिस्थित्य-न्तहेतवे॥ नम उग्राय भीमाय महादेवाय साक्षिणे॥ ३॥ सर्वज्ञाय वरेण्याय वरदाय वराय ते॥ श्रीकण्ठाय नम-स्तुभ्यं पञ्चपातकभेदिने॥ ४॥ नमस्तेस्तु परानन्दसत्यवि-ज्ञानरूपिणे॥ नमस्ते भवरोगघ्न स्तायूनां पतये नमः॥ ५॥ पतये तस्कराणां ते वनानां पतये नमः॥ गणानां पतये तुभ्यं विश्वरूपाय साक्षिणे॥ ६॥ कर्मणा प्रेरितः शम्भो जनिष्ये यत्र यत्र तु॥ तत्र तत्र पदद्वन्द्वे भवतो भक्तिरस्तु मे॥ ७॥ असन्मार्गे मतिर्मा भूद्भवतः कृपया मम॥ वैदि-काचारमार्गे च रतिः स्याद्भवते नमः॥ ८॥ इति॥

यह लक्ष्मणजी ने स्तुति की अब सीताजी का किया स्तोत्र कहते हैं॥

सीतोवाच॥ परमकारण शंकर धूर्जटे गिरिसुतास्तन-कुङ्कुमशोभित॥ मम पतौ परिदेहमतिं सदा नविषमां

परपूरुषगोचरा ॥ १ ॥ गङ्गाधर विरूपाक्ष नीललोहित शङ्कर ॥ रामनाथ नमस्तुभ्यं रक्ष मां करुणाकर ॥ २ ॥ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते करुणालय ॥ नमस्ते भवभीतानां भवभीतिविमर्दन ॥ ३ ॥ नाथ त्वदीयचरणाम्बुजचिन्तनेन निर्द्धूय भास्करसुताद्भयमाशु शम्भो ॥ नित्यत्वमाशु गतवान्सम्रृकण्डुपुत्रः किंवा न सिध्यति तवाश्रयणात्परेश ॥ ४ ॥ परेश परमानन्द शरणागतपालक ॥ पातिव्रत्यं मम सदा देहि तुभ्यं नमोनमः ॥ ५ ॥ इति ॥

अब हनुमान् का किया स्तोत्र कहते हैं ॥

देवदेव जगन्नाथ रामनाथ कृपानिधे ॥ त्वत्पादाम्भोरुहगता निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ १ ॥ यं विना न जगत्सत्ता तद्भानमपि नो भवेत् ॥ नमः सद्भानरूपाय रामनाथाय शंभवे ॥ २ ॥ इति ॥

अब अङ्गद आदि के किये स्तोत्र कहते हैं ॥

अङ्गद उवाच ॥ यस्य भासा जगद्भानं यत्प्रकाशं विना जगत् ॥ न भासते नमस्तस्मै रामनाथाय शंभवे ॥१॥ इति ॥ जाम्बवानुवाच ॥ सर्वानन्दस्सदानन्दो भासते परमार्थतः ॥ नमो रामेश्वरायास्मै परमानन्दरूपिणे ॥ १ ॥ इति ॥ नील उवाच ॥ यद्देशकालादिग्भेदैरभिन्नं सर्वदाद्वयम् ॥ तस्मै रामेश्वरायास्मै नमो भिन्नस्वरूपिणे ॥ १ ॥ इति ॥ नल उवाच ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाना यदविद्याविजृम्भिताः ॥ नमोऽविद्याविहीनाय तस्मै रामेश्वराय ते ॥ १ ॥ इति ॥ कुमुद उवाच ॥ यत्स्वरूपापरिज्ञानात्प्रधानं कारणत्वतः ॥ कल्पितं कारणायास्मै रामनाथाय शंभवे ॥ १ ॥ इति ॥ पनस उ-

वाच ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादियदविद्याविजृम्भितम् ॥ जाग्रदादिविहीनाय नमोऽस्मै ज्ञानरूपिणे ॥ १ ॥ इति ॥ गज उवाच ॥ यत्स्वरूपापरिज्ञानात्कार्याणां परमाणवः ॥ कल्पिताकारणत्वेन तार्किकापसदैर्यथा ॥ १ ॥ तमहं परमानन्दं रामनाथं महेश्वरम् ॥ आत्मरूपतया नित्यमुपास्ये सर्वसाक्षिणम् ॥ २ ॥ इति ॥ गवाक्ष उवाच ॥ अज्ञानपाशबद्धानां पशूनां पाशमोचकम् ॥ रामेश्वरं शिवं शान्तमुपैमि शरणं सदा ॥ १ ॥ इति ॥ गवय उवाच ॥ स्वाध्यस्तं जगदाधारं चन्द्रचूडमुमापतिम् ॥ रामनाथं शिवं वन्दे संसारामयभेषजम् ॥ १ ॥ इति ॥ शरभ उवाच ॥ अन्तःकरणमात्मेति यदज्ञानाद्विमोहितैः ॥ भण्यते रामनाथं तमात्मानं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ इति ॥ गन्धमादन उवाच ॥ रामनाथमुमानाथं गणनाथंत्रियम्बकम् ॥ सर्वपातकशुद्ध्यर्थमुपास्ये जगदीश्वरम् ॥ १ ॥ इति ॥ सुग्रीव उवाच ॥ संसाराम्भोधिमध्ये मां जन्ममृत्युजलेभये ॥ पुत्रदारधनक्षेत्रवीचिमालासमाकुले ॥ १ ॥ मज्जद्ब्रह्माण्डखण्डे च पतितं नाप्तपारकम् ॥ क्रोशंतमवशं दीनं विषयव्यालकातरम् ॥ २ ॥ व्याधिनक्रसमुद्विग्नतापत्रयझषार्दितम् ॥ मां रक्ष गिरिजानाथ रामनाथ नमोस्तुते ॥ ३ ॥ इति ॥ विभीषण उवाच ॥ संसारवनमध्ये मां विनष्टनिजमार्गके ॥ व्याधिचौरेऽघसिंहे च जन्मव्याघ्रेलयोरगे ॥ १ ॥ बाल्ययौवनवार्द्धक्यमहाभीमान्धकूपके ॥ क्रोधेर्ष्यालोभवह्नौ च विषयक्रूरपर्वते ॥ २ ॥ त्रासभूकण्टकाढ्ये च सीदन्तं मामनाथकम् ॥ शोभनां पदवीं शंभो नय रामेश्वराधुना ॥ ३ ॥ इति ॥ सर्वे वानरा ऊचुः ॥ निद्यानिन्द्यासु सर्वत्र ज्ञानित्वा

योनिषु प्रभो ॥ कुम्भीपाकादिनरके पतित्वा च पुनस्तथा ॥ १ ॥ जनित्वा च पुनर्योनौ कर्मशेषेण कुत्सिते ॥ संसारे पतितानस्मान् रामनाथ दयानिधे ॥ २ ॥ अनाथान् विवाशान्दीनान् क्रोशतः पाहि शङ्कर ॥ नमस्तेस्तु दयासिन्धो रामनाथ महेश्वर ॥ ३ ॥ इति ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नमस्ते लोकनाथाय रामनाथाय शम्भवे ॥ प्रसीद मम सर्वेश मदविद्यां विनाशय ॥ १ ॥ इति ॥ इन्द्र उवाच ॥ यस्य शक्तिरुमादेवी जगन्माता त्रयीमयी॥ तमहं शङ्करं वन्दे रामनाथमुमापतिम् ॥ १ ॥ इति ॥ यम उवाच ॥ पुत्रौ गणेश्वरस्कन्दौ वृषो यस्य च वाहनम् ॥ तं वै रामेश्वरं सेवे सर्वाज्ञाननिवृत्तये ॥ १ ॥ इति ॥ वरुण उवाच ॥ यस्य पूजाप्रभावेण जितमृत्युर्मृकण्डुजः ॥ मृत्युञ्जयमुपास्येहं रामनाथं हृदा तु तम् ॥ १ ॥ इति ॥ कुबेर उवाच ॥ ईश्वराय लसत्कर्णकुण्डलाभरणाय ते ॥ लाक्षारुणशरीराय नमो रामेश्वराय वै ॥ १ ॥ इति ॥ आदित्य उवाच ॥ नमस्तेस्तु महादेव रामनाथ त्रियम्बक ॥ दक्षाध्वरविनाशाय नमस्ते पाहि मां शिव ॥ १ ॥ इति ॥ सोम उवाच ॥ नमस्ते भस्मदिग्धाय शूलिने सर्पमालिने ॥ रामनाथ दयाम्भोधे श्मशाननिलयाय ते ॥ १ ॥ इति ॥ अग्निरुवाच॥ इन्द्राद्यखिलदिक्पालसंसेवितपदाम्बुज ॥ रामनाथाय शुद्धाय नमो दिग्वाससे सदा ॥ १ ॥ इति ॥ वायुरुवाच॥ हराय हरिरूपाय व्याघ्रचर्माम्बराय च ॥ रामनाथ नमस्तुभ्यं ममाभीष्टप्रदो भव ॥ १ ॥ इति ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ अहंतासाक्षिणे नित्यं प्रत्यगद्वयवस्तुने ॥ रामनाथ ममाज्ञानमाशु नाशय ते नमः ॥ १ ॥

इति ॥ शुक्र उवाच ॥ वञ्चकानामलक्ष्याय महामन्त्रार्थ-रूपिणे ॥ नमोऽद्वैतविहीनायरामनाथाय शम्भवे ॥ १ ॥ इति॥ अश्विनावूचतुः॥आत्मरूपतयानित्यं योगिनां भासतेहृदि॥ अनन्यभानवेद्याय नमस्ते राघवेश्वर ॥ १ ॥ इति ॥ अगस्त्य उवाच ॥ आदिदेव महादेव विश्वेश्वर शिवाऽव्यय ॥ मम ना-थाम्बिकानाथ प्रसीद वृषभध्वज ॥ १ ॥ अपराधसहस्रं मे क्षमस्व परमेश्वर ॥ ममाहमिति पुत्रादावहन्तां मम मोच-य ॥ २ ॥ इति ॥ सुतीक्ष्ण उवाच ॥ क्षेत्राणि रत्नानि धनानि दारामित्राणिवस्त्राणिगजाश्वपुत्राः ॥ नैवोपकारायहिराम-नाथ मह्यं प्रयच्छ त्वमतो विरक्तिम् ॥ १ ॥ इति ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ श्रुतानि शास्त्राण्यपिनिष्फलानि त्रय्यप्यधीतावि-फलैवनूनम्॥त्वयीश्वरेचेन्नभवेद्धिभक्तिः श्रीरामनाथे शिव-मानुषस्य॥१॥ इति॥ गालव उवाच ॥ दानानि यज्ञानियमा-स्तपांसि गङ्गादितीर्थेषु निमज्जनानि ॥ रामेश्वरं त्वां न न-मन्ति येतु व्यर्थानि तेषामिति निश्चयोऽत्र ॥१॥ वशिष्ठ उ-वाच॥कृत्वापिपापान्यखिलानि लोकस्त्वामेत्यरामेश्वर भ-क्तियुक्तः ॥ नमेतचेत्तानिलयंव्रजेयुर्यथान्धकाराखितेजसा-द्धा ॥१ ॥ इति॥ अत्रिरुवाच ॥ दृष्ट्वातु रामेश्वर मे कदापि स्पृ-ष्ट्वानमस्कृत्य भवंतमीशम् ॥ पुनर्न गर्भे स नरः प्रयायात्किं त्वद्वयं ते लभते स्वरूपम् ॥ १॥ इति ॥ अङ्गिरा उवाच ॥यो रामनाथं मनुजो भवन्तमुपेत्य बन्धून् प्रणमन् स्मरेत ॥ सं-तारयेत्तानपि सर्वपापात्किमद्भुतन्तस्यकृतार्थतायाम्॥ १ ॥ इति ॥ गौतम उवाच ॥ श्रीरामनाथेश्वरगूढमेतद्रहस्यभू-तं परमं विशोकम् ॥ त्वत्पादमूलं भजतां नृणां ये सेवां प्रकु-

वन्ति हि तेपि धन्याः॥ १ ॥ शतानन्द उवाच ॥ वेदान्तविज्ञा नरहस्यविद्भिर्विज्ञेयमेतद्धिमुमुक्षुभिस्तु ॥ शास्त्राणि सर्वाणि विहाय देव त्वत्सेवनं यद्रघुवीरनाथ ॥ १ ॥ इति ॥ भृगुरुवाच॥ रामनाथ तवपादपङ्कजद्वन्द्वचिन्तनाविधूतकल्मषः ॥ निर्भयंव्रजतिसत्सुखाद्वयं त्वां स्वयंप्रभममोघचिद्घनम् ॥ १ ॥ इति ॥ कुत्स उवाच ॥ रामनाथ तव पादसेवनं भोगमोक्षवरदं नृणां सदा ॥ रौरवादिनरकप्रणाशनंकःपुमान्नभजतेरसग्रहः ॥ १ ॥ इति ॥ काश्यप उवाच ॥ रामनाथ तव पादसेविनां किंव्रतैरुततपोभिरध्वरैः ॥ वेदशास्त्रजपचिन्तयाच किं स्वर्गसिन्धुपयसापिकिंफलम् ॥ १ ॥ श्रीरामनाथत्वमागत्यशीघ्रं ममोत्क्रान्तिकाले भवान्या च साकम् ॥ मां प्रापयस्वात्मपदारविन्दं विशोकंविमोहंसुखंचित्स्वरूपम् ॥ २ ॥ इति ॥ गन्धर्वाऊचुः ॥ रामनाथत्वमस्माकं भजतां भवसागरे ॥ अपारदुःखकल्लोले नत्वत्तोन्या गतिर्हि नः ॥ १ ॥ इति ॥ किन्नरा ऊचुः ॥ रामनाथ भवारण्यव्याधिव्याघ्रभयानके ॥ त्वामन्तरेण नास्माकं पदवीदर्शको भवेत् ॥ १ ॥ इति ॥ यक्षाऊचुः ॥ रामनाथेन्द्रियारातिबाधा नो दुःसहाः सदा ॥ ताविजेतुं सहायस्त्वमस्माकं भव धूर्जटे ॥ १ ॥ इति ॥ नागा ऊचुः ॥ अचिन्त्यमहिमानं त्वां रामनाथ वयं कथम् ॥ स्तोतुमल्पधियः शक्ता भविष्यामोम्बिकापते ॥ १ ॥ इति ॥ किंपुरुषा ऊचुः ॥ नानायोनौ च जननं मरणं चाप्यनेकशः ॥ विनाशाय तथाज्ञानं रामनाथ नमोस्तुते ॥ १ ॥ इति ॥ विद्याधराऊचुः ॥ अम्बिकापतये तुभ्यमसङ्गाय महात्मने ॥ नमस्ते रामनाथाय प्रसीद वृषभध्वज ॥ १ ॥ इति ॥ वसव ऊचुः॥

रामनाथगणेशाय गणवृन्दार्चिताङ्घ्रये॥ गङ्गाधरायगुह्याय नमस्ते पाहि नः सदा ॥ १ ॥ इति ॥ विश्वेदेवा ऊचुः ॥ ज्ञप्तिमात्रैकनिष्ठानां मुक्तिदाय सुयोगिनाम्॥ रामनाथाय साम्बाय नमोस्मान्रक्ष शङ्कर ॥ १ ॥ इति ॥ मरुत ऊचुः ॥ परतत्त्वाय तत्त्वानां तत्त्वभूताय वस्तुतः ॥ नमस्ते रामनाथाय स्वयंभानाय शम्भवे ॥ १ ॥ इति ॥ साध्या ऊचुः ॥ स्वातिरिक्तविहीनाय जगत्सत्ताप्रदायिने ॥ रामेश्वराय देवाय नमोऽविद्याविभेदिने ॥ १ ॥ इति ॥ सर्वे देवा ऊचुः ॥ सच्चिदानन्दसम्पूर्णद्वैतवस्तुविवर्जितम् ॥ ब्रह्मात्मानं स्वयं भानुमादिमध्यान्तवर्जितम् ॥ १ ॥ इति ॥ अविक्रियमसङ्गञ्च परिशुद्धं सनातनम् ॥ आकाशादिप्रपञ्चानां साक्षिभूतं सनातनम् ॥ २ ॥ प्रमातीतं प्रमाणानामपि बोधप्रदायिनम् ॥ आविर्भावतिरोभावसङ्कोचरहितं सदा ॥ ३ ॥ स्वस्मिन्नध्यस्तरूपस्य प्रपञ्चस्यास्यसाक्षिणम् ॥ निर्लेपं परमानन्दं निरस्तसकलक्रियम् ॥ ४ ॥ भूमानन्दं महात्मानं चिद्रूपं भोगवर्जितम् ॥ रामनाथं वयं सर्वे स्वपातकविशुद्धये ॥ ५ ॥ चिन्तयामः सदा चित्ते स्वात्मानन्दबुभुत्सवः ॥ रक्षास्मान्करुणासिन्धो रामनाथ नमोस्तु ते ॥ ६ ॥ रामनाथाय रुद्राय नमः संसारहारिणे ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिरूपेण विभिन्नाय स्वमायया ॥ ७ ॥ इति ॥ विभीषणसचिवा ऊचुः ॥ वरदाय वरेण्याय त्रिनेत्राय त्रिशूलिने ॥ योगिध्येयाय नित्याय रामनाथाय ते नमः ॥ १ ॥ इति ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! रामचन्द्र लक्ष्मण आदि के मुख से स्तुति सुन प्रसन्न हो रामेश्वर प्रभु ने कहा कि हे रामचन्द्रजी ! हे लक्ष्मण

जी ! हे सीते ! हे सुग्रीव आदि वानरो ! आप सब के किये इस स्तोत्राध्याय को जे पढ़ें सुनें और सुनावें वे सब हमारे पूजनका फल पावेंगे धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करने का और एक वर्ष पर्यन्त रामसेतु के वास का भी फल प्राप्त होता है गन्धमादन के सब तीर्थों में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है वह इस अध्याय के पठन से होगा इस अध्याय को पठन करनेहारा मनुष्य जन्म मरण जरा रोग आदि के भय से छूट हमारे सायुज्य को प्राप्त होगा॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां रामादिकृतरामेश्वरानेकस्तवनिरूपणं नामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

पचासवां अध्याय॥

सेतुमाधव के वैभव का वर्णन पुण्यनिधि राजा और लक्ष्मीजी की अद्भुत कथा॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अब हम सब पाप हरनेहारा सेतुमाधव का वैभव वर्णन करते हैं आप भक्ति से श्रवण करें पूर्वकाल में चन्द्रवंश में उत्पन्न पुण्यनिधि नाम राजा हालास्येश्वर करके भूषित मथुरापुरी में हुआ है वह एक समय अपने पुत्र को राज्य सौंप चतुरङ्गिणी सेना और अपने अन्तःपुर समेत स्नान के लिये रामसेतु को चला वहां पहुँच संकल्पपूर्वक धनुष्कोटि में स्नान किया और भी वहां के सब तीर्थों में स्नानकर भक्तिपूर्वक राजा पुण्यनिधि रामेश्वर का सेवन करने लगा वहां राजा ने विष्णुभगवान् की प्रीति के लिये यज्ञ किया यज्ञान्तस्नान धनुष्कोटि में कर और रामेश्वर का पूजन आदि कर अपनी राजधानी में आय राज्य करनेलगा कुछ काल के अनन्तर लक्ष्मी विष्णुभगवान् के साथ विनोद से विवाद कर राजा की भक्ति परीक्षा के लिये आठ वर्ष की कन्या बन धनुष्कोटितीर्थ पर आय स्थित होगई उस अवसर में राजा भी वहां स्नान करने आया था राजा स्नान कर तुलापुरुष आदि सब दान दिये और राजधानी को चलनेलगा तब उस परमसुन्दरी कन्या को देखा और पूछा कि हे कन्ये ! तू किसकी पुत्री है और हे वत्से ! यहां अकेली किस काम के लिये आई है और कहां से आई है यह राजा का वचन सुन कन्या ने कहा कि मेरे माता पिता बान्धव आदि कोई नहीं और मैं

अनाथा हूं इसलिये हे महाराज ! आपकी पुत्री होकर आपके घर में रहना चाहती हूं परन्तु जो मुझे हठ से आकर्षण करे उसको आप दण्ड देवें राजा ने कन्या का यह वचन सुन कहा कि हे पुत्रि ! जो तू कहेगी वह सब करूंगा मेरे भी केवल एक पुत्र है कन्या नहीं है इसलिये मेरी पुत्री होकर रह जिस वर में तेरी रुचि होगी उसी को तुझे देदूंगा यह राजा का वचन सुन प्रसन्न हो कन्या उसके साथ गई राजा ने अपनी रानी विन्ध्यावली से कहा कि हे प्रिये ! यह हम दोनोंकी पुत्री है इसको अपने समीप रक्खो सब प्रकार से इसकी रक्षा करना यह राजा की आज्ञा पाय रानी ने उस कन्या को अपने समीप रक्खा और पुत्री की भांति उसका पालन पोषण करनेलगी विष्णुभगवान् भी गरुड़ पर चढ़ लक्ष्मी को ढूंढ़ने निकले बहुत देशों में घूमे परन्तु कहीं लक्ष्मी न मिलीं तब रामसेतु पर पहुँचे इस अवसर में वह कन्या भी अपनी सखियों समेत उपवन में पुष्प बीनने आई थी विष्णुभगवान् भी ब्राह्मण का रूप धारे गङ्गाजल की काँवर कन्धे पर रुद्राक्ष और विभूति धारे शिव नाम जपते वहां आये और उस कन्या को देखा कन्या भी उनको देख स्तब्ध होगई ब्राह्मणरूपधारी विष्णुभगवान् ने उस कन्या का हाथ पकड़कर खींचा तब वह कन्या ऊंचे स्वर से पुकारी कन्या का पुकारना सुन राजा भी वहां दौड़ा आया और कन्या से पूछा कि हे पुत्रि ! तुझे किसने छेड़ा तब कन्या ने कहा कि हे पितः ! एक ब्राह्मण ने मुझे हठ से पकड़ा तब मैंने आक्रोश किया अब वह ब्राह्मण निर्भय होकर एक वृक्ष के नीचे बैठा है यह राजा ने कन्या का वचन सुन क्रोधकर उस ब्राह्मण को पकड़वाया और हथकड़ी बेड़ी पहिनाय रामनाथ के समीप एक मण्डप में क़ैद करदिया और कन्या को आश्वासन कर अपने साथ लेगया रात्रि के समय स्वप्न में राजा ने उस ब्राह्मण को देखा कि शंख, चक्र, गदा, पद्म, कौस्तुभमणि, पीताम्बर और भांति २ के भूषणधार शेषशय्या पर सोता है और नारद गरुड़ विष्वक्सेन आदि किंकर सेवा में खड़े हैं और अपनी कन्या को भी देखा कि कमल के ऊपर बैठी हाथ में कमल लिये है सुवर्ण कमलों की माला और भांति २ के रत्न-

जटित भूषणों से अलंकृत है दिग्गज जिसका अभिषेक कररहे हैं यह स्वप्न में देख राजा उठा और कन्या के घर में गया वहां देखा तो कन्या उसी रूप में बैठी है जो राजा ने स्वप्न में देखा था प्रभात होतेही राजा कन्या को साथ ले रामनाथ के मन्दिर के समीप गया जहां ब्राह्मण को क़ैद कर रक्खा था ब्राह्मण को भी उसी रूप में देखा जो स्वप्न में देखा था तब राजा विष्णुभगवान् को जान स्तुति करनेलगा॥

पुण्यनिधिरुवाच॥ नमस्ते कमलाकान्त प्रसीद गरुडध्वज॥ शार्ङ्गपाणे नमस्तुभ्यमपराधंक्षमस्वमे॥ १॥ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष चक्रपाणे श्रियःपते॥ कौस्तुभालंकृताङ्गाय नमःश्रीवत्सलक्षण॥ २॥ नमस्ते ब्रह्मपुत्राय दैत्यसङ्घविदारिणे॥ अशेषभुवनावासनाभिपङ्कजशालिने॥ ३॥ मधुकैटभसंहर्त्रे रावणान्तकराय ते॥ प्रह्लादरक्षिणे तुभ्यं धरित्रीपतये नमः॥ ४॥ निर्गुणायाप्रमेयाय विष्णवे बुद्धिसाक्षिणे॥ नमस्ते श्रीनिवासाय जगद्धात्रे परात्मने॥ ५॥ नारायणाय देवाय कृष्णाय मधुविद्विषे॥ नमः पङ्कजनाभाय नमःपङ्कजचक्षुषे॥ ६॥ नमःपङ्कजहस्ताय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये॥ भूयोभूयो जगन्नाथ नमःपङ्कजमालिने॥ ७॥ दयामूर्ते नमस्तुभ्यमपराधं क्षमस्व मे॥ मया निगडपाशाभ्यांयःकृतो मधुसूदन॥ ८॥ अनयस्त्वं स्वरूपं तान् दैत्यांस्त्वदपराधिनः॥ अतोमदपराधोयं क्षन्तव्योमधुसूदन॥९॥

इस प्रकार विष्णुभगवान् की स्तुतिकर राजा पुण्यनिधि महालक्ष्मी की स्तुति करनेलगा॥

राजोवाच॥ नमो देवि जगद्धात्रि विष्णुवक्षस्स्थलालये॥ नमोऽब्धिसम्भवे तुभ्यं महालक्ष्मि हरिप्रिये॥ १॥

सिद्ध्यै पुष्ट्यै स्वधायै च स्वाहायै सततं नमः ॥ सन्ध्यायै च प्रभायै च धात्र्यै भूत्यै नमोनमः ॥ २ ॥ श्रद्धायै चैव मेधायै सरस्वत्यै नमोनमः ॥ यज्ञविद्येमहाविद्ये गुह्यविद्येऽतिशोभने ॥ ३ ॥ आत्मविद्ये च देवेशि मुक्तिदे सर्वदेहिनाम् ॥ त्रयीरूपे जगन्मातर्जगद्रक्षाविधायिनि ॥ ४ ॥ रक्ष मां त्वं कृपादृष्ट्या सृष्टिस्थित्यन्तकारिणि ॥ भूयोभूयो नमस्तुभ्यं ब्रह्ममात्रेमहेश्वरि ॥ ५ ॥

इसप्रकार लक्ष्मीजी की स्तुतिकर राजा भगवान् से प्रार्थना करनेलगा कि हे भगवन् ! मैंने बड़ा अपराध किया कि आपके चरणों में बेड़ी डाली परन्तु यह अपराध मैंने अज्ञान से किया इसलिये आप क्षमा करें सब जगत् आपका पुत्र है और आप सब के पिता हैं पिता को पुत्रों का अपराध क्षमा करना चाहिये आपने बड़े अपराधी दैत्यों को अपना स्वरूप दिया इसलिये मेरा अपराध भी आप क्षमा करें पूतना आपके मारने के लिये आई उसको आपने सद्गति दी इसकारण मेरे ऊपर भी कृपादृष्टि कीजिये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! राजा का यह वचन सुन विष्णुभगवान् बोले कि हे राजन् ! भय मत कर हम भक्तों के वश हैं हमारी प्रीति के लिये तैंने बड़ा यज्ञ किया इसलिये हे राजन् ! तू हमारा भक्त है और हम तेरे वश हैं भक्तों के अपराध हम सदा क्षमा करते हैं तेरी भक्ति की परीक्षा के लिये हमने लक्ष्मी को भेजा तैंने लक्ष्मी की भली भांति रक्षा की इसलिये हम तुझपर प्रसन्न हैं लक्ष्मी हमारा रूप है जो इस का भक्त होय वह हमारा भक्त होता है जो इससे विमुख होय वह हमारा द्वेषी है तैंने इसका भक्ति से पूजन किया उससे हमारा भी पूजन हुआ इस लिये हे राजन् ! तैंने हमारा कोई अपराध नहीं किया तैंने लक्ष्मी की रक्षा के लिये हमारा बन्धन किया इसलिये हम बहुत प्रसन्न हैं यह लक्ष्मी जगन्माता है इसकी रक्षा के लिये हमारा बन्धन किया यह हमको अतिप्रिय है इसलिये हे राजन् ! कुछ भय मतकर यह लक्ष्मी तेरी कन्या है यह तो

भगवान् ने कहा और लक्ष्मीजी बोलीं कि हे राजन्! मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हूं मैं और विष्णुभगवान् दोनों विनोद कलह करके यहां आये और तेरे योग से तथा भक्ति से बहुत प्रसन्न हुये हमारी कृपा से हे राजन्! सदा तुझ को सुख होगा तू चक्रवर्ती राजा होगा और हमारे चरणों में दृढ़भक्ति होगी सदा धर्म में बुद्धि रहेगी पाप में कभी आसक्ति न होगी और देहान्त में हमारा सायुज्य मिलेगा विष्णुभगवान् ने कहा कि हे राजन्! जिस प्रकार तैंने हमको निगड़ से बांधा अब हम इसी रूप से यहां निवास करेंगे हम ने ही सेतु बांधा है इसकी रक्षा के लिये हम सेतुमाधव नाम से यहां रहेंगे रामनाथ शिवजी और ब्रह्माजी भी सेतु की रक्षा के लिये यहां निवास करेंगे इन्द्रादि लोकपाल यहां निवास करेंगे सब उपद्रव निवृत्त करने के लिये और सबके मनोरथ सिद्ध करने के अर्थ सेतुमाधव नाम से हम यहां स्थित होंगे तेरी निगड़ से बँधे हम को जो सेवन करेंगे वे हमारा सायुज्य पावेंगे हमारे और लक्ष्मी के इस चरित को जो पढ़ेंगे वे कभी दारिद्य को नहीं प्राप्त होंगे और ऐश्वर्य पावेंगे तेरे किये हमारे स्तोत्रको जो पढ़ेंगे सुनेंगे और लिखकर घर में रक्खेंगे वे जन्म मरण के क्लेश से छूटेंगे इतना कह विष्णुभगवान् वहां पूर्णरूप से स्थित होगये राजा भी विष्णु भगवान् का महापूजन कर और रामनाथ का सेवनकर अपने स्थान को गया और मथुरा का राज्य अपने पुत्र को सौंप आप रामनाथक्षेत्र में निवास करनेलगा और देह के अन्त में मुक्ति पाई रानी विन्ध्यावली राजा के साथ सती हुई और अपने पति के समीप पहुँची सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो! जो पुरुष भक्ति से सेतुमाधव का सेवन करते हैं वे सदा कैलास में निवास करते हैं जो सेतुमाधव का सेवन विना किये रामेश्वर की सेवा करे उसकी सब सेवा व्यर्थ होती है जो पुरुष सेतुसे बालूरेत लेकर गङ्गा में डालें वे सदा वैकुण्ठ में वास करते हैं गङ्गा को जाने लगे तब सेतुमाधव के समीप संकल्प करके जाय नहीं तो यात्रा निष्फल होती है गङ्गा से काँवर भरकर रामनाथक्षेत्र में लावे और रामेश्वर पर गङ्गाजल चढ़ाय उस काँवर को सेतु के समीप समुद्र में डाले वह पुरुष ब्रह्मसायुज्य

को प्राप्त होता है हे मुनीश्वरो ! यह सेतुमाधव का वैभव हमने वर्णन किया इसको जो पढ़े अथवा सुने वह वैकुण्ठवास पाता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां सेतुमाधववैभवे नृपपुण्यनिधिलक्ष्मीकथानकंनामपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

सेतुयात्रा के क्रम का वर्णन और विधान ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अब हम सेतुयात्रा का क्रम कहते हैं जिसके श्रवण करने से मनुष्य मुक्त होता है स्नान आचमन कर शुद्ध हो रामेश्वर और रामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिये वेदवेत्ता ब्राह्मणों को भोजन कराय मस्तक में भस्म का त्रिपुण्ड्र अथवा गोपीचन्दन का ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण कर रुद्राक्षमाला और कुश के पवित्रधार (सेतुयात्रामहं करिष्ये) यह संकल्पकर अष्टाक्षर अथवा पञ्चाक्षर मन्त्र को जपता हुआ घर से यात्रा करे मार्ग में एकबार हविष्य भोजन करे जितेन्द्रिय और जितक्रोध रहे पादुका, छत्र, ताम्बूल, तैलाभ्यङ्ग, स्त्रीसङ्ग आदि का तीर्थयात्रा में निषेध है शौच आचार करके युक्त रहे तीनकाल सन्ध्यावन्दन गायत्री जप और रामेश्वर का चिन्तन करे मार्ग में नित्य सेतुमाहात्म्य रामायण अथवा और कोई पुराण पढ़े अथवा श्रवण करे व्यर्थ वाक्य उच्चारण न करे प्रतिग्रह न लेवे आचार में रहे मार्ग में यथाशक्ति शिव और विष्णु का पूजन करता जाय वैश्वदेव ब्रह्मयज्ञ अग्निहोत्र आदि करता जाय अतिथियों को अन्न देवे और संन्यासियों को यथाशक्ति भिक्षा देता रहे वित्तशाठ्य न करे शिव विष्णु आदि के स्तोत्र नित्य पढ़े सदा धर्म सेवन करे और निषिद्ध कर्मको त्यागे इस नियम से सेतु पर पहुँच पहिले एक पाषाण समुद्रको देकर समुद्र का आवाहन करे फिर प्रणामकर अर्घ्य देकर समुद्र की आज्ञा ले स्नान करे और मुनि देवता पितर और वानरों का तर्पण करे सात पाषाण अथवा एक पाषाण ॥

(पिप्पलादसमुत्पन्ने कृत्ये लोकभयंकरे॥पाषाणं ते मया

दत्तमाहारार्थं प्रकल्पताम्) यह मन्त्र पढ़ समुद्रमें डाले तब स्नान सफल होता है (विश्वाचित्वंघृताचित्वं विश्वयोने विशांपते ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव सागरे लवणाम्भसि) यह आवाहन का मन्त्र है (नमस्ते विश्वगुप्ताय नमो विष्णो ह्यपांपते ॥ नमो हिरण्यश्रृङ्गाय नदीनां पतये नमः) यह नमस्कार का मन्त्र है (सर्वरत्नमय श्रीमन्सर्वरत्नाकर प्रभो ॥ सर्वरत्नप्रधानस्त्वं गृहाणार्घ्यं महोदधे) यह अर्घ्य का मन्त्र है (अशेषजगदाधार शङ्खचक्रगदाधर ॥ देहि देव ममानुज्ञां युष्मत्तीर्थनिषेवणे) यह आज्ञा लेने का मन्त्र है फिर पूर्वदिशा में सुग्रीव दक्षिण में नल पश्चिम में मयन्द और उत्तर में द्विविद का स्मरण कर मध्य में राम लक्ष्मण सीता हनुमान् अङ्गद और विभीषण का स्मरण कर (पृथिव्यां यानि तीर्थानि प्राविशंस्त्वां महोदधे ॥ स्नानस्य मे फलं देहि सर्वस्मात्त्राहि मैनसः) यह मन्त्र पढ़ हिरण्यश्रृङ्ग इत्यादि वैदिक मन्त्र पढ़े और नाभि में नारायण का स्मरण करे स्नान आदि कर्मों में नारायण का स्मरण करता रहे तो ब्रह्मलोक को प्राप्त होय और सब पापों का प्रायश्चित्त भी होजाय फिर प्रह्लाद, नारद, व्यास, अम्बरीष, शुकदेव आदि भगवद्भक्तों का स्मरणकर (वेदादियों वेदवशिष्ठयोनिः सरित्पतिःसागररत्नयोनिः अग्निश्चतेजेजइला च तेजोरेतोधाविष्णुरमृतस्यनाभिःइदंतेअन्याभिरस्यमानमद्भिर्याकाश्चसिन्धुंप्रविशन्त्यापः ॥ सर्पोजीर्णामिवत्वचंजहामि पापं शरीरात्) यह मन्त्र पढ़ स्नान करे 'समुद्रावयूनां' इत्यादि मन्त्र पढ़ नमस्कार कर (सर्वतीर्थमयं शुद्धं नदीनां पतिमम्बुधिम्) यह मन्त्र और 'द्यौसमुद्रौ' इत्यादि मन्त्र पढ़ फिर स्नान करे फिर (ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करस्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे सेतौ तीर्थं देहि दिवाकर) यह मन्त्र पढ़ पूर्व आदि दिशाओं में सुग्रीव आदि

का पूर्ववत् स्मरण कर तीसरा स्नान करे जो देवीपत्तन होकर जाय तो पहिले नव पाषाण के मध्य में समुद्र के बीच स्नान करे दर्भशय्या के मार्ग से जाय तो पहिले समुद्र में स्नान करे फिर पिप्पलाद, कवि, कण्व, कृतान्त, मृत्यु, कालरात्रि, विद्या, अहर्गणेश्वर, पराशर, वशिष्ठ, वामदेव, वाल्मीकि, नारद, बालखिल्यमुनि, नल, नील, गवाक्ष, गवय, गन्धमादन, मयन्द, द्विविद, शरभ, ऋषभ, सुग्रीव, हनुमान् और राम, लक्ष्मण, सीता का तीन २ बार तर्पण कर देवता ऋषि पितरों का तिल जल से तर्पण करे चतुर्थ्यन्त अथवा द्वितीयान्त नाम उच्चारण कर जल के बीच खड़ा रहकर तर्पण करे समुद्र के बीच तर्पण करने से सब तीर्थों में तर्पण करने का फल प्राप्त होता है इस भांति सबका तर्पण कर जल से निकल वस्त्र धारण कर पवित्र हो आचमनकर श्राद्ध करे धनाढ्य होय षड्रस अन्न से पिण्ड देकर गौ, भूमि, सुवर्ण आदि दान कर ब्राह्मणों को देवे और निर्धन होय तो तिल चावल से पिण्डदान करदेवे इसीभांति पाषाण दान से लेकर श्राद्धपर्यन्त सब विधान रामधनुष्कोटि में भी करे चक्रतीर्थ में जाकर स्नान कर वहां के अधिपति नारायण का दर्शन करे पश्चिम मार्ग से जाय तो उस दिशा के चक्रतीर्थ में स्नानकर दर्भशायी नारायण का दर्शन करे फिर कपितीर्थ सीतातीर्थ और ऋणमोचनतीर्थ में स्नान कर रामचन्द्रजी को प्रणाम करे फिर कण्ठ से ऊपर वपन कराय लक्ष्मणतीर्थमें स्नान करे फिर रामतीर्थ, पापविनाशनतीर्थ, गङ्गा, यमुना, सावित्री, गायत्री, सरस्वती, हनुमत्कुण्ड, ब्रह्मकुण्ड और नागकुण्ड में स्नान करे गङ्गा आदि सब तीर्थ नागकुण्ड में निवास करते हैं यह तीर्थ अनन्त आदि आठ नागोंने रचाहै फिर अगस्त्यकुण्ड में स्नानकर अग्नितीर्थ में स्नान करे और विधिपूर्वक श्राद्धकर गौ, भूमि, सुवर्ण, अन्न आदि ब्राह्मणों को देवे तो सब पापों से मुक्तहोय चक्रतीर्थ आदि जिस क्रम से वर्णन किये उसी क्रम से स्नान करे अथवा जैसी रुचि होय उसप्रकार तीर्थों में स्नान करे सब तीर्थों में स्नान और श्राद्धकर पीछे रामेश्वर महादेव, सेतुमाधव, राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान् और सुग्रीव आदि वानरों का सेवन करे सब तीर्थों में स्नानकर रामनाथ और रामचन्द्र

को प्रणाम कर रामचन्द्रधनुष्कोटि में स्नान करे वहां भी पाषाण दान आदि नियम सब करे धनुष्कोटितीर्थ में क्षेत्र, गौ, वस्त्र, अन्न आदि वेदवेत्ता ब्राह्मणों को यथाशक्ति देवे फिर नियमपूर्वक कोटितीर्थमें स्नानकर रामेश्वर देव को प्रणाम करे सामर्थ्य होय तो ब्राह्मणों को सुवर्णदक्षिणा देवे और तिल, धान्य, गौ, क्षेत्र, वस्त्र, अन्न भी ब्राह्मणों को देवे वित्तशाठ्य न करे धूप दीप नैवेद्य आदि पूजा के उपकरण वित्तानुसार रामेश्वरदेव के अर्पण करे रामेश्वरदेव की स्तुति और प्रणाम कर सेतुमाधव के समीप जाय वहां भी सब पूजा के उपचार समर्पण कर पूर्वोक्त नियमों करके युक्त अपने घर को आवे वहां आय षड्रस भोजन ब्राह्मणों को करावे इसप्रकार यात्रा करे तो रामेश्वरदेव सब मनोरथ सिद्ध करते हैं और धन सन्तान की वृद्धि होती है नरक और दारिद्र्य का भय नहीं रहता और अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है जो यात्रा करने की सामर्थ्य न होय तो सेतु के माहात्म्य का कोई ग्रन्थ श्रवण करे अथवा इसी सेतुमाहात्म्य को श्रवण करे तो भी सेतुयात्रा का फल प्राप्त होता है परन्तु यह बात लँगड़े लूले अन्धे आदि के लिये कही है हे मुनीश्वरो ! यह सेतुयात्रा का क्रम हमने कहा इसको जो पढ़े अथवा भक्ति से श्रवण करे वह सब दुःखों से छूटता है ॥

इति श्रीस्कान्दे सेतुमाहात्म्ये भाषाव्याख्यायां सेतुयात्राक्रमविधाननिरूपणं नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

सेतु का और गन्धमादनपर्वत के तीर्थों का माहात्म्य अर्धोदय आदि पर्वदिनों में सेतुस्नान का माहात्म्य सेतुमाहात्म्य के पठन और श्रवण का विस्तार से माहात्म्य व्यासजी का नैमिषारण्य में आगमन सेतुमाहात्म्य की प्रशंसा और ग्रन्थ समाप्ति ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! अब आपकी प्रीति के लिये फिर भी हम सेतु का वैभव वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवण करो सब स्थानों में यह स्थान उत्तमहै इस स्थान में किये हुये जप,तप,हवन,दान आदि कर्म अक्षय होते हैं धनुष्कोटि में स्नान करने से दशवर्ष तक किये काशीवास का फल प्राप्त होता है धनुष्कोटि में स्नान कर तीन दिन रामेश्वर का

दर्शन करे तो पुण्डरीकपुर के दश वर्ष वास का फल प्राप्त होता है अष्टोत्तर सहस्र जप षडक्षर मन्त्र का इस क्षेत्र में करे तो शिवसायुज्य पावे मध्यार्जुन, कुम्भकोण, मायूर, श्वेतकानन, हालास्य, गजारण्य, वेदारण्य, नैमिष, श्रीपर्वत, श्रीरङ्ग, वृद्धगिरि, चिदम्बर, वल्मीक शेषाद्रि, वरुणाचल, दक्षिण कैलास, वेंकटाद्रि, हरिस्थल, काञ्चीपुर, ब्रह्मपुर, वैद्येश्वरपुर आदि शिवक्षेत्र और विष्णुक्षेत्रों में वर्षभर निवास करने से जो फल होता है वह धनुष्कोटि में माघमास भर स्नान करने से प्राप्त होता है सेतु के उद्देश से 'द्वौसमुद्रौ' इत्यादि 'अदोयद्दारु' इत्यादि 'विष्णोःकर्माणि पश्यन्ते' इत्यादि 'तद्विष्णोः' इत्यादि कई श्रुति हैं और अनेक स्मृति इतिहास पुराण आदि सेतुमाहात्म्य को कहते हैं दशवर्ष पर्यन्त काशीवास कर गङ्गास्नान नित्य करने से जो फल होता है वह चन्द्र सूर्य ग्रहण में सेतुस्नान से प्राप्त होता है सेतुस्नान करतेही कोटिजन्म में किये पाप तत्क्षण नष्ट होजाते हैं और हजार अश्वमेध का फल प्राप्त होता है विषुव अयन सोमवार और पर्वदिनों में सेतुस्नान करे तो सात जन्म के पाप निवृत्त होते हैं और स्वर्ग प्राप्त होता है मकर के सूर्य और माघमास में सूर्योदय होने के अनन्तर तीन दिन धनुष्कोटि में स्नान करे तो गङ्गादि सब तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होय पांच दिन स्नान करे तो अश्वमेध आदि सब यज्ञों का फल पावे चान्द्रायण आदि व्रत और चारो वेद के पारायण का फल प्राप्त होताहै माघमास में दश दिन धनुष्कोटि में स्नान करे तो निश्चयही ब्रह्मलोक प्राप्त होय पन्द्रह दिन स्नान करे तो वैकुण्ठ प्राप्त होय बीस दिन स्नान करे तो शिवलोक में वास होय पचीस दिन स्नान करे तो सारूप्यमुक्ति पावे तीन दिन स्नान करे तो सायुज्य मिले इसलिये माघमास में अवश्यही धनुष्कोटि में स्नान करना चाहिये चन्द्र सूर्य ग्रहण अर्धोदय महोदय आदि पर्वदिनों में स्नान करे तो कभी गर्भवास न होय ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होयँ नरकक्लेश न होय सब सम्पत्ति मिले इन्द्रादि लोकों में निवास होय रावण के वध के लिये रामचन्द्रजी ने सेतु बनाया है जिसको देवता, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, देवर्षि, राजर्षि, पितर, किन्नर, नाग आदि सब सेवते हैं उस सेतु का स्नान के समय स्मरण करे

और चाहे जहां तड़ाग आदि में स्नान करे तो भी सब पाप निवृत्त होजायँ सेतुक्षेत्र में एक मुट्ठी अन्न देने से भी सब रोग और भ्रूणहत्या आदि पाप निवृत्त होते हैं रामचन्द्रजी के धनुष् से कीहुई रेखा को जो देखे वह अक्षय वैकुण्ठवास पावे विभीषण की प्रार्थना से रामचन्द्रजी ने धनुष्कोटितीर्थ बनाया है उसमें भक्ति से स्नान करे गौ, भूमि, सुवर्ण, क्षेत्र, तिल, चावल, धान्य, दूध, दही, छाँछ, उड़द, वस्त्र, भूषण, घृत, जल, शाक, भात, शर्करा, मधु, लड्डू, अपूप आदि सब पदार्थों का दान करे धन का लोभ न करे तो सब मनोरथ सिद्ध होते हैं दान, जप, तप, हवन आदि सब कर्म धनुष्कोटितीर्थ पर कियेहुये अनन्तफल देनेहारे होते हैं धनुष्कोटि में स्नान करने से मनुष्य पवित्र होता है और देवता, पितर, मुनि, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, नाग, किम्पुरुष, यक्ष सब सन्तुष्ट होते हैं उसके सब कुल सद्गति को प्राप्त होते हैं रामधनुष्कोटि में स्नान करने से पांच करोड़ महापातक नष्ट होते हैं जहां सीता ने अग्नि में प्रवेश किया उस कुण्डमें स्नान करने से सौ भ्रूणहत्या क्षणमात्र में नष्ट हो जाती हैं रामचन्द्र सेतु गङ्गा और विष्णु इनमें कुछ भेद नहीं स्नान के समय इनका स्मरण करे तो परमगति पावे अर्धोदय पर्व में सेतुस्नानकर सर्षप के तुल्य पिण्ड पितरों को देवे तो जबतक सूर्य चन्द्र रहें तबतक पितर तृप्त रहते हैं शमीपत्र के तुल्य पिण्ड देवे तो पितर स्वर्ग में होयँ तो मुक्ति पावें और नरक में होयँ तो सब पापों से छूट स्वर्ग को जायँ सेतु, पद्मनाभ, गोकर्ण, पुरुषोत्तम इन क्षेत्रोंमें सदा समुद्रके बीच स्नान करना लिखा है शुक्र भौम और शनिवार के दिन सन्तान की इच्छावाला पुरुष सेतु के विना अन्यत्र समुद्र में स्नान न करे गर्भिणीपति और प्रेतकृत्य न करचुका होय वह पुरुष सेतु के विना समुद्र में स्नान न करे वार तिथि नक्षत्र आदि का नियम और क्षेत्रों में है सेतुमें सदाही स्नान करना चाहिये जीवते हुये बान्धवों के निमित्त सेतुस्नान करे मृतहुओं के उद्देशसे न करे कुशा का पुतला बनाय उसको स्नान करावे और यह मन्त्र पढ़े (कुशोऽसि त्वं पवित्रोसि विष्णुना विधृतः पुरा। त्वयि स्नाते स च स्नातो यस्यैतद्ग्रन्थिबन्धनम्) और स्थानों में पर्व के बीच समु-

पवित्र होता है सेतु में, गंगासागर में, गोकर्ण में, पुरुषोत्तमक्षेत्र में और किसी नदीसे समुद्र का संगम हुआ होय वहां सदाही पवित्रहै वहां सब काल में स्नान करना चाहिये और स्थानों में पर्वदिन के विना समुद्र को स्पर्श न करे पितर देवता और मुनियों के सम्मुख रामचन्द्रजी ने यह प्रतिज्ञा की है कि हमारे सेतु में जो स्नान करें वे जन्ममरण से छूटजाते हैं रामनाथ का माहात्म्य और सेतु का वैभव हम कोटि वर्ष में भी नहीं वर्णन कर सक्ते हैं यह रामचन्द्रजी का वचन सुन सब देवता और मुनि बहुत प्रसन्न हो प्रशंसा करनेलगे सेतुकी रक्षा के लिये मध्य में ब्रह्माजी निवास करते हैं और सेतुमाधवनामक विष्णु सेतुमें विराजमान हैं और भी देवता, पितर, धर्मशास्त्र के प्रवर्तक महर्षि, गन्धर्व, किन्नर, नाग, यक्ष, विद्याधर, चारण, किम्पुरुष आदि सब सेतु में निवास करते हैं रामसेतु का दर्शन स्पर्शन श्रवण स्मरण आदि सब पापों से रक्षा करता है अर्धोदय में स्नान करने से आनन्द की प्राप्ति और मुक्ति की प्राप्ति होती है माघमास अमावास्या तिथि रविवार श्रवणनक्षत्र व्यतीपातयोग होय और श्रवणनक्षत्र का सूर्य होय तब अर्धोदययोग होता है उस योग में स्नान करने से सायुज्यमुक्ति मिलती है हजार व्यतीपात के तुल्य अमावास्या अर्कवार करके युक्त होय तो दश हजार अमावास्याके तुल्य होती है श्रवण नक्षत्र होय तो बहुतही पुण्य होता है इनमें एक २ भी स्नान, दान, जप, पूजन आदि का अनन्तफल देनेहारा है पांचों का योग होजाय तो क्या कहना है नक्षत्रों में श्रवण तिथियों में अमावास्या वारोंमें रविवार और योगों में व्यतीपातयोग श्रेष्ठ है इन चारों का योग मकर के सूर्य में होय और उस काल में सेतुस्नान करे तो जन्म मरण के भय से छूट मुक्ति पावे अर्धोदय तुल्य कोई पर्व न हुआ न होगा ऐसाही महोदयपर्व भी है इन पर्वकालों में सेतुक्षेत्रके बीच यथाशक्ति दान करना चाहिये आचार, तप, वेद, वेदान्त, शिव, विष्णु आदि देवताओं की भक्ति जिस ब्राह्मण में होय वह दानपात्र होता है उसीको सब दान देने चाहियें जो सत्पात्र ब्राह्मण न मिले तो सब दानवस्तु इकट्ठी कर रक्खे और जब उत्तम पात्र मिले तब दे देवे परन्तु अधम पात्रको न देवे इस

प्रसंग में एक इतिहास हम कहते हैं जो वशिष्ठजी ने राजा दिलीप को सुनाया था सब पात्रों में उत्तम पात्र वेद के आचार में तत्पर ब्राह्मण है और उनमें भी उत्तम वह है जिसके उदर में शूद्र का अन्न न गया होय जो ब्राह्मण वेद और पुराण जाने शिव विष्णु आदि का पूजन करे वर्णाश्रम धर्मों के अनुष्ठान में तत्पर होय दारिद्रय और कुटुम्बी होय वह उत्तम पात्र होता है ऐसे पात्र को दान देने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त होते हैं उत्तम क्षेत्र में तो विशेष करके सत्पात्र कोहीं दान देना चाहिये अपात्र को दान देनेवाला मनुष्य दश जन्म तक कृकलास तीन जन्म गर्दभ दो जन्म तक मण्डूक एक जन्म चाण्डाल होकर फिर क्रम से शूद्र वैश्य क्षत्रिय और ब्राह्मण होता है परन्तु दारिद्रय और रोगी होता है इस भांति और भी अनेक दोष अपात्र के दान देने से होते हैं इसलिये सत्पात्र कोही दान देना चाहिये जो सत्पात्र न मिले तो संकल्प कर भूमि में जल छोड़देवे सत्पात्र न मिले तो सत्पात्र के पुत्र को देवे वह भी न मिले तो महादेव के अर्पण करे परन्तु अपात्र को कभी न देवे सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ! यह वशिष्ठजी का उपदेश मान उस दिन से राजा दिलीप सत्पात्र को दान देनेलगा सेतु आदि पुण्य क्षेत्रों में सत्पात्र कोही दान देवे जो तीर्थ पर पात्र न मिले तो वहां दान करके घर में आय वह वस्तु सत्पात्र को देदेवे नहीं तो धर्म का लोप होता है इस प्रकार दान देने से कभी दुःख नहीं होता और सायुज्य मुक्ति मिलती है अर्धोदय के समान कोई उत्तमकाल नहीं है कुम्भकोण, सेतुमूल, गोकर्ण, नैमिष, अयोध्या, दण्डकारण्य, विरूपाक्ष, वेंकट, शालग्राम, प्रयाग, काञ्ची, द्वारावती, मथुरा, पद्मनाभ, काशी, सब नदी, समुद्र, पर्वत आदि तीर्थों पर मुण्डन और उपवास करना चाहिये जो पुरुष लोभ अथवा मोह से मुण्डन और उपवास विना किये घर को चला आवे उसके सब पाप साथही चले आते हैं गन्धमादन में चौबीस तीर्थ मुख्य हैं उनमें लक्ष्मणतीर्थ पर मुण्डन कराना लिखा है परन्तु कण्ठ से ऊपर वपन कराना चाहिये वहां वपन कराय लक्ष्मणतीर्थ में स्नान कर ब्राह्मण को दक्षिणा देवे और लक्ष्मणेश्वर

महादेव का दर्शन करे तो सब पापों से छूट शिवलोक को जाय सेतुके तुल्य तीर्थ तप पुण्य और उत्तम गति कोई नहीं है हजार ग्रहण के तुल्य अर्धोदय पर्व होता है अर्धोदय के समान संसारमोचक कोई काल नहीं है अर्धोदय में रामसेतु के बीच स्नान करने से जो पुण्य होता है उसके तुल्य कोई पुण्य शास्त्र में नहीं कहा है साठिहजार वर्ष गङ्गा स्नान करने से जो पुण्य होता है वह सेतु स्नान एक बार करने से होता है अर्धोदय महोदय के पुण्य की तो क्या गणना है मकरमास में प्रयाग स्नान करने से सब पातक निवृत्त होते हैं उससे सहस्रगुणा अधिक पुण्य सेतु में एक बार अर्धोदय के बीच स्नान करने से होताहै तीन लोकों के सब तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य होता है वह अर्धोदय में एक बार सेतु स्नान करने से होता है ब्रह्मज्ञान से हीन कृतघ्न दुरात्मा महापातकी आदि सब अर्धोदय में सेतु स्नान करने से शुद्ध हो जाते हैं कृतघ्न का उद्धार और किसी तीर्थ में स्नान करने से नहीं होता परन्तु सेतुस्नान से उसकी भी सद्गति होजाती है जो अर्धोदय में मोहवश हो सेतु स्नान न करें वे अन्धे की भांति सदा संसारकूप में डूबते हैं अर्धोदय में सेतु स्नान करनेहारे मनुष्य सूर्यमण्डल को भेदन कर ब्रह्मलोक को जाते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है अर्धोदय में सेतु स्नान कर रामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण, रामेश्वर, सुग्रीव आदि वानरों का ध्यान कर अपना दारिद्र्य निवृत्त होने के लिये देवता ऋषि पितरों का तर्पण करे और अर्धोदयनामक जगन्नाथ का पूजन करे तो विष्णुभगवान् प्रसन्न होते हैं ॥

दिवाकर नमस्तेस्तु तेजोराशे जगत्पते । अत्रिगोत्रसमुत्पन्न लक्ष्मीदेव्याः सहोदर ॥ अर्घ्यं गृहाण भगवन्सुधाकुम्भ नमोस्तु ते । व्यतिपातमहायोगिन् महापातकनाशन ॥ सहस्रबाहो सर्वात्मन् गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते । तिथिनक्षत्रवाराणामधीश परमेश्वर ॥ मासरूप गृहाणार्घ्यं कालरूप नमोस्तु ते ॥

इन मन्त्रों से अर्धोदय में अर्घ्य देवे, ब्राह्मणों को वित्त के अनुसार सब पदार्थ देवे चौदह बारह आठ सात छह अथवा पांच ब्राह्मणों का पृथक् २ मन्त्रों से पूजन करे कांस्य का अथवा काष्ठ का नया पात्र खीर से भरकर फल, गुड़, घृत, ताम्बूल और दक्षिणा सहित ब्राह्मणों के आगे रक्खे और प्रत्येक ब्राह्मण को दूध देनेहारी गौ और यज्ञोपवीत देकर॥

श्रवणर्क्षे जगन्नाथ जन्मर्क्षे तव केशव ॥ यन्मया दत्तमर्थिभ्यस्तदक्षय्यमिहास्तु ते॥ १ ॥ नक्षत्राणामधिपते देवानाममृतप्रद ॥ त्राहि मां रोहिणीकान्त कलाशेष नमोस्तु ते॥ २॥ दीनानाथ जगन्नाथ कालनाथ कृपाकर॥ त्वत्पादपद्मयुगले भक्तिरस्त्वचला मम ॥३॥ व्यतीपात नमस्तेस्तु सोमसूर्यसुतप्रभो॥ यद्दानादिकृतं किञ्चित्तदक्षयमिहास्तु ते॥४॥ अर्थिनां कल्पवृक्षोऽसि वासुदेव जनार्दन॥ मासत्र्वयनकालेश पापं शमय मे हरे॥ ५॥

ये मन्त्र पढ़े इसप्रकार ब्राह्मणों का पूजन कर पार्वणश्राद्ध कर हिरण्यश्राद्ध आमश्राद्ध अथवा पाकश्राद्ध करे वित्तशाठ्य न करे पीछे वस्त्र भूषण आदि से आचार्य का पूजनकर प्रतिमा, गौ, छत्र, उपानत्, वस्त्र आदि उसको देवे इसप्रकार अर्धोदय पर्व में सेतु के बीच व्रत करे वह कृतकृत्य होजाता है फिर उसको कुछ करना शेष नहीं रहता और क्षेत्रों में भी अर्धोदय पर्व के बीच यही विधान करना चाहिये रामचन्द्रजी ने गन्धमादन पर्वत के बीच समुद्र में सेतु बांधा है स्नान के समय सेतु का स्मरण करने से करोड़ों पाप तत्क्षण नाश को प्राप्त होते हैं और विष्णुलोक की प्राप्ति होती है जो पुरुष निमेषमात्र भी सेतु के समीप निवास करे उसके सम्मुख कभी यमदूत नहीं आते रामसेतु, धनुष्कोटि, रामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण, रामनाथ, हनुमान्, सुग्रीव आदि वानर विभीषण, नारद, विश्वामित्र, अगस्त्य, वशिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप आदि रामभक्तों